



.

পাপের লাঘব গোরব ব্ধিলে পাপপ্রবৃত্তি অপেকাকৃত্ত থক্ষ হ্ইতে পারে, এই সকল বিবেচনা করিয়া, বিবেকাদি প্রাচীন গ্রস্থ অবলগনে প্রায় গাবভীত প্রায়শিকস্তপ্রকরণ লিখিলাম। শোবে নানা আংক্রোহধানশীল ব্যক্তির অংথ কাম। আংবঞ্চক**ুএবং লকু**বা কঠোর প্রোরনিজ্ঞশাসন দেখিয়া থাকে, না বুবিয়াবা বুবিয়া কিয়। ফুজ্রুয় ইন্সিয়গণ পরিচানিত হ্ইয়া, গৈবাৎ কোন ছ্কর্ম করিলে, मिटे माभगुष्क रहेदात्र क्रम्न एवछ्यानि मर्श्यभा व्यम्बार्थ्यूर्यक कि উপात्र कित्रत्राष्ट्रन, देरा প্রকাশ হইল। সদস্তীনদারা মানবের যেমন দদাভিলাভ হয়, ডজেণ অসদস্তীনে আবোগতি হইয়। ্তান নাম ক্ষ্ম ক্ষ্ম ক্ষ্ম ক্ষ্ম কিছিল ভগবানের ইচ্ছায় জন্মণ: 'হিন্দু-সংকর্মাসা' বঠভাগের দিতীয় সংকরণ वर्ध-ভारश्रत विकाशना

অটমভাগাদিতে,—সংকার, বতাদিপ্রতিটা ও রুবোৎস্বর্ধি ছাপা ক্টবে। মৃন্য ও পুস্তকের আকার বঠত।পের জারই থাকিবে। অভান্ত থতের জায় ইহা শারাও বিনা উপদেশে কর্কর। ঘাইবে। ल्कामि यहे जारत अपकारत है (नथा क्हेग्रारक्त प्रता । क्षा क्षा जाना।

मक्षमणारण,--मराग्वण,-शुत्रफत्रन, क्षत्रधानी, व्यवण्नी, काकिक क बृक्तमिरक्षत्र-भूत्रारमाक धृती-

यात्रक्षा मह कानौश्कामि तनथा श्टेन । मृता ा⊌े क्ष्रक्षांना ।

দিভীয় সংকরণ পশমভাপ,—বিবাহলকশাদি প্রস্তাব, দণিঙাদি বিবেচনা, সাধ্বাদ-সাম ও ষকুর্বেদীয় সম্প্রদান প্রকরণ, দারোপ্সমন বিবি, রাস, দোল, দানবিধি, অবয়ভক্তি, ক্পাদিভদ্ধি,

গীয়তীকবচও ফ্ৰয়কবচাদি আছে। মূল্য । 🗸 ত ছয় জানা।

ভূতীয় সংকরণ চতুৰ্ভাগে,—সাত্মবাদ-মহিয়ক্তব, শুনিজ্ঞৱ, আদিভাক্ষয়, ষ্যুৰ্কভা, শবদাহ,

भर्गत्रमार, ष्यामोठ, मर्भाभिखामि खाएछ। म्ता १४० छत्र षामा।

জ্তীয় সংক্ষম ত্তীয়ভাগে,—সাহ্যাদ-স্বাব্ছ। সাম ও ষজুকোনী ধাব্তীয় আন্ধিকাও, যুমুকুক্তা, জ্ডীয় সংক্রণ হিতীয়ভাগে,---শাছ্বাদ-ক্রবসমূহ, শতনাম, সাহ্যবাদ শিবরাজি, জন্মাইমী, রামনবমী উপনয়ন, বুৰোৎদৰ্গ, এবং ব্ৰতপ্ৰতিঠাদির ফৰ্দাদি জাছে। মূল্য ।৮০ ছয় জান।। ৪ সন্তায়নাদির প্রণালী বিজ্ঞতত্ত্বপে লেখা হইয়াছে। মূল্য । 🖟 ত হয় জানা।

চতুৰ্প দংকরণ প্রথম ভাবে: –প্রাতংম্বরীয় হইতে মান, তপ্ণ, তিবেদী ও ভাষিকী-সন্ধা, ঐ নিত্য কাম। পুৰা, জন্মতিথি, হ ঙাপুষা ও ঘটোৎসৰ্গাদি সব্যবস্থা আছে। মূল্য।/॰ পাঁচ আনা।

স্ট্রিপত্র।

विषय		18 ×	বিষয়		Age of the control of
প্রায়শ্চিতনক্ষণাদি প্রস্তাব	÷	^	১ विश्ववाधिक-त्रावरम्बर	: :	*
শোষশ্চিভোপদেশ অহণবিধি	÷	œ	शिंडिंगामि এवश व्यञ्जिषामि शोवध	~	25122
শোরশ্চিত্রোপদেশ্বিধি	:	Ŋ	म्सन्यामिक (शावध ७ वरमवध	÷	9
প্ৰায়শ্চিড্ৰদিন নিণ্য	:	Ţ	त्वांशामि निमिक लाविध		80 //
वानकामिरज्यम् व्याप्तिकञ्जिषान	<i>,</i> :	ታ	ष्यभानन निमिख शायध	. :	3
(मध्यम्ला) दादका	:	°	বিপ্রস্থামিক গোর অপালন ব্ধ	:	, <u>, ,</u>
পায় শিচন্ত পূৰ্পাহকত্য	:	%	বিপ্রামিক ও.শুদ্রামিকবৎসের অপালন	14	ို
শোয়-চিন্তায়্ঠানবিধি	;	2	वहरशावय, व्यक्तिक स्थार्शक्ड	· :	ő
टोस्टोष्ट प्रमुख्य	÷	8	विधक इक शाइ खरमा हम, शाविक श	9	999 ::
(गोयोंग, बाक्ष्यराज्यम	÷	36138	इनमक है। मिरयां कन, अपूर्य फिन्छ निरम्	. :	99189
শোকাপত্যব্তনিরূপণ	:	5.6	भक्षविषयिष्कामिष्क, भक्षभक्का।भिव्य	;	\$5 89 ···
विट्यमामिक-(गावधवात्रोक्तस	÷	ÿ	১৮ । मूखत्यभ, ख्रीत्रभ, शर्द्धत्रभ	i	•8160 ···

	ः श्रृष्टिश्व ।	1a .
विषय	3 3 A	विषय
ठाथानामामि जयन्त्राम्ह	000 :	··· ৪০ জনাস্তরীণ মহাপাতকাদি প্রায়
জন্তাজাতির অগ্নদিভোকন	888	৪৪ প্রতিনিধিদারা প্রায়শ্চিত, অন্
চাঙালাদি শ্বীগমন, অস্তাজ শ্রীগমন	8/88	8७18१ शायबी कभ, कुरुनामन्यदुः

39194 ग्रम्भ ... ६२ | मिक्किपोकाली श्रेका-दावशामि デスポープー・ こう こうがって しゅうりゅ চাঙালাদি মহ বাস, অপবিত্রায়াদি ভোজন ৪৭ | গঙ্গাপ্রাম্ভিত, গো-সেবা हाखानामित क्रिबर, षरणाका एकन · · · ।।।३ | व्यित्याश्वामि क्रबाब

₹ 48 ···

\$55 | 550 | Soc

८७१८१ | छाम, शानामि, जांदर्भश्रकामि

मिक्क्लाकानी-श्रुकात्रख शुकाकानामि जिष्

वस्त्रमान्नम, जार्गाटक याक्रिमान्त्रम

(ख)धेर्ध विवाह, ष्याञ्चह्छ। ∓बर्गाछम

3

:

अरुि अरहाय अस्त्राकामि म्मर् हमदीडाइम्म, ष्यम् ख्रम्भर्

हिन्छ-मदकर्मामा। यर्छ-छाग।

काग्नम्डिङ-नक्षणामिक्षर्या ।

পাপকয় মাত্র সাধনত থাকিয়া বিধি বোধিত যে কর্ম ভাগকে প্রায়ন্তিত থকে। অংথাৎ আ্নাম পাপ বিশিষ্ট হ্ট্যাছি কোন বাজির এরপ জ্ঞান হইলে পর কেবল সেই সঞ্চিত পাপ কংযের কাজাই অনুষ্ঠিত যে বৈধ (ংধাশাত্রোপদিট) কর্ম তংহাকে অংগিনিডত বলে, নচেৎ যে আগোপনাকে পাপী

যেরপ বস্তু সকলকে ক্ষারগোগে সিন্ধ করিয়া, আঘাত প্রকালনাদি ঘারা মন-বিনির্মা, তে করিতে কামনা ধারা অনুষ্ঠিত যে অশুমেধ যজাদি তাহাও আয়ন্ডিন্ড নহে।

বলিয়া নিজয় নাজানে ভাষ্য প্রায়শ্চিতে অধিকার নাই এবং পাপক্ষর ও স্বাদিনাভ এই উভয়

रुप्त, रायम कन बांदा भाडी एउत मन दिनहें रुष्ठ अवश्रर्कात्र नरदर्शात स्पृष्ठीति श्रष्ट्र भक्त रिक्रम्डा লাভ করে, সেইরূপ আংবিজ কিয়। লোভ মোহ বা ভয়াদি প্রযুক্ত পাপ সঞ্গয় হ্ইলে পর তৎকাণ্ণ্ ক্ষোকর তপস্থা দান ও বজাদি ধারা আত্ম পরিত্তির জ্ঞা বিশেষরূপে সচেষ্টিত হুইবে।

শামে কপিত আছে,বে :—পাপ কাৰ্য ক্ৰিয়া,বে ব্যক্তি অমূতাপ না কৰে এবং প্ৰায়শ্চিত না কৰে ; সে

নোর নত্ত্বক ভোগ করিয়া, জন্মান্তরে নিন্দিত চিছু (অন্ধ ব্ধিরাদি বা কুটাদি রোগ) বিশিষ্ট হট্যা থাকে। যাজব্বা বলেন :—বিহিত (নিতা নৈমিত্তিক) কৰের অর্ঠান না করা, নিদিত (শাস্ত নিবিদ্ধ) কর্মের দাচরণ কর। এবং ইন্দ্রিয় সকলের অনিগ্রহ অর্থাৎ ইন্দ্রিয় সকলের বনীভূত হইয়া মিতাচারী ন। হ eয়।, এই দকল জনৎ কাৰ্য্যই মন্ত্ৰোয় আধোগতি প্ৰাপ্তি হইবার কার্ব।

হিন্দু-সৎকর্মালা।

জাপনাকে প্ৰশী বলিয়া জান হইলে, সীতই প্ৰায়িকভাষ্ঠান কয়। আব**ন্তক, কারণ দেবল বলেন,—** সফ্ষ্য আতীত হইলে ছিঙা প্রায়শ্চিতাস্থী। ও ছিঙা রাজ্যও দিলে * প্রে শুদ্ধি লাভ হইকে, স্তুরীং সঞ্চন্ত্রে অধিক ः ব বানুন্ন কালে উহার্ই জংশাত দঙাদি দিতে হইবে। পাপ নিশ্র

٠,

क्हेरन, रज मधत क्हेत्रा छेट्ठे व्यात्रनित्छ कत्रिरव, कांत्रन ष्माभन्ना यनिशास्क्रम (य, भांभ निम्फरम्न भन्न क्यांत्रिक्छांगित होडें। ना कतित्रो, ভোজন कतिहानक लांभ वृत्ति हहेरत।

লোক দিগের পক্ষে ছঃমাধ্য বোধে জার্য্য ঋষিগণ বেদাধ্যয়ন ও চাল্লাগ্রশাদি ব্রভারণ **ভশস্যার প্রতিনিধি** युत्रम मांगरक मर्स भाग नागक नित्या कैंडिन करियार्ड्स, क्लियुर्ग मारमप्रहे थायांथ, षाधांक कार्रिं স্বীকৃণ অৰ্থাৎ স্পাদি ব্যঞ্জনিত পাপক্ষাের জ্ঞা থদি দান করিতে অশ্ভ্রন্ত, ভবে প্রাজাণত্যািদি ভগবান্ মুখু ব্লিয়াছেন ;—কোন প্ৰকারে পাপ অনুষ্ঠিত হ্ইলে এই সকল কাধ্যি ষারা ভাহাৰ 🖛 ক করেন কিষা হিশোষ জয়তপ্ত হয়েন অথবা ইন্দ্রিয় সংমম ও শ্রীরশোষক উপবান বতাচরণাদির (তপ-नांना विष्ठ कार्ष्ट किन्छ मान लाख निक्त हु ना (बम जांत्री मानिविधि तम्थे)। मृष्ट्र विनित्रोष्ट्रिम रिष, সাধন হইতে পারে; যথা---পাণী যদি (ভাপনাকে ছুর্ভাগ্য জানে) সকলের নিকট স্বন্ধত পাণ প্রকাশ

^{*} শালুীর বিণি অসুমারে যে ক্টমহন, ডাহাকেই তগস্তা বলে, নতেৎ দেবতা পিত্ৰোক বা আদ্ধণিয়ের জ্ঞা (কিখা সংমারের জ্ঞা) যে কই মহ্ম তাহাকি ভগ্যা বলে না এবং উহা কোন প্রার্শিক্তও নহে।

য়াছে। বৃষ্ঠ বুলিয়াছেন, হিরধাদান, গোদান ও ভূমিদান দায়া মহাপাতকজ্ঞ পাপেরও ধংস হয়। জাগুগুৱাণে ক্থিক আছে, যে, অনদান করিলে অমুহত্যা পাপ ধ্বংঁ ্ৰমং সৰ্পাশ হুইতে মুক্ত হুইয়া অভিযে কৰ্ম লাভ হয়। সহত্ৰ সংথ্যক বান্ধণকে মিট দ্ৰৱা ভোজন ক্সাইলে কিয়া মান। প্ৰকারের লক্ষ ব্ৰভাষ্ট্ৰীন কৰিবে। ইহা ছালা এছলে দানেষ্ট্ শেষ্ছ এবং ব্ৰতাদির তৎ প্ৰতিনিধিত প্ৰতিপম হই-

मःथाक श्रूषावादा (मराध्येना कवितन ष्यथता खिलिमिन षाश्वातामि मान वादा (मारमता कवितन किया जैवि পৰ্যটন বাবেদপাঠ (কিয়া গায়তী জপাদি) ঘারা মহাপাতকজ পাপ হয়। যম বনিয়াছেন,— যে ব্যক্তি তিল দান করেন, ভিল ম্পর্শ করেন, তিল ভোজন করেন এবং ভিলবুক্ত জালে সান করেন ও

जिन षांता (श्राम कत्त्रम, जिनि मर्मभाण श्रहे छ भुक्त श्रहेरन।

बीयिक्टडानरम्य बह्न विभि

পাপথত হইলে, ধৰ্মশাঃ 📑 ভাষবান্ অধ্যাপকের নিকট সম্পত্তিত হইয়া, জতি বিনিতভাবে অকপট চিত্তে নিদের পাপ বৃত্তান্ত ৷ ্রতরপে বর্ণনা করিবে, শাদ্রের। প্রোহিত বা ষ্টান্ত কোন রান্ধণকে কেহ প্রায়শ্চিত্রোপদেশ দেন এবং সেই উপদেশ ঘদি ধ্যাশাল্ল হয়, উবেই ভদক্র্সারে প্রায়শ্চিত ক্রিলে कछ। भावत श्रेरवम, किन्न यथाभाश उपराममा ना श्रेरम भागिरक भूनक खांत्रकि क्रिका श्रिर व्यर भाक्षांत्र जिल्ला छेनातमाका क छेज्यथा है महे मार्गित जानी हहा छ हहेर । खार्शिक खक्र में का निर्मा मिन भाषि कर्डक किछामिछ ष्टेशि एकान कांत्रल ভाष्टा उपरम्म नो कत्रा रूप, फरव रम श्रामक भौक्षक वाकि भूक्ति किछायुत्र भागानानी रहेरवन। उभारमारक्त्र निक्र रहेरा वावणा कामिना परि मरमह उपिष्टि रहा, ভবে ভিন জন শাপ্তজ্ঞ ব্যক্তি একমতে যাহা বলিবেন ভাষা বিশান করিয়া ভদস্মাতে কার্য্য করিবে। अवग्राशतक किक हे हो हा आंत्रिक आंत्रिक वानका नहें एक होता, व्यक्षाणकरक भावित्राधक किकिब थन या यशामि मिशा मस्डे कि का बा बावका विका । भाभित निक्के श्रेट भागिर जापिक मुक्रे (भात्रिज्ञामिक) सन्त्रापि जनः लात्राफिडमन्। बर्गन अधिबर्गना मार्थे, त्यारम् अमृशेषे (अपर्शन मनीषि কামনায়) পরিত্যক্ত উৎদর্গীকুত দ্রব্য সীকারকেই প্রতিগ্রহ বলে।

দাকাৎ গোবধছলে গোখামিকে মুক্ত গোর উচিত মূল্য দিয়া, গ্রুরে প্রাপ্তজ্ঞ করিবে, পোর পরিবর্তে खड़े मुना यो जा अर् अहरन (भाषिका क्रिका क्रिक प्राप्त क्रिक भाषा ना भाषा मिया का क्रिका वर्ष कत्र कवित्रा नरेशा नित्रा, यि टार्शाट एम् मि है रुप उत्त जारा भीष कित्रारेश किंह भेतीका कित्रा

हिन्दू-मदकर्यमाना ।

দেথিয়া, কোন অভাত দোষ দৃষ্ট হ্টনে, কিরাইয়া দিব হদি এইরপ কথা থাকে, ভাহ। হ্টনে বিকেভাকে (কিছু বিলমেও) গথাদি ক্রাইয়া দিয়া, মূল্য কিয়ত লইলে গোবিক্ষয় দোষ হুইবে মা।

व्योक्षिक्षिणाम् दिवि।

একবার করিয়াছে; কি বারষার পাপ করিয়া থাকে ? ভিনি ত্রান্ধণ বা শুন্ধ কোন জাতীয় ? এবং ভিনি বলৈক, ফি বৃদ্ধ বা ষ্ট্রীলোক অব্যবা হুর্গ কি পণ্ডিত ইত্যাদি বিংশ্য বিবেচনা করিয়া, অব্হা বিবেচনার একটু উক্তর আধারন্তিত বনিবে, বেন ার্নিত ভয়ে পুনশ্চ পাণে প্রয়ৃতি না হয়, এবং প্রথমে পূর্ব প্ৰীগমিতের ব্যবহা জিজানিত হুট্লে পর, বাবহাপক লগ্রে এই সকল বিবেচমা করিবেন; যথা, পাপটি উপপাতক বা মহাপাতক কিছা অতিপাতক ইত্যাদির মধ্যে কোন শ্রেণীজ্জ ় পাপ করার অভিনত্তি কিরণ, অথাৎ মাড়পোষণাথ পাপ করিয়াছে। কিহা বেজার নিমিজ পাপ করিয়াছে। थीर्शिक्छ खांत्राहेशा, भटत भूजांकि दांत्रा थे. ज्याङ क्रिटरम, जांश म्भडेक्ररभ दांत्रिज ।

थिक खोशिक्ति होता तस मान ग्राम ग्राम का निम ना आंगिकान्ड प्रदेश कार्याच मान का

যে পাপে যে প্রীয়ন্দিত ক্ষিত হ্ইয়াছে, উহার অনুনে যে কোন প্রায়ন্তি ষারা নেই পাপ ঘাইতে জমান্তরীণ মহাপাতক শেষ পাপের ক্ষয় হুইতে পারে, এবং প্রধান পাপের প্রার্থিচন্ত করিলে ক্ষুম্র थावर कांन आगि निष्णानी क्हेनांय दनिशा यम खन्न ना क्हेंटव, त्यहे कांन भंदान मान, जैभवान, मारत, ज्यशिर शृष्ति त्वारत भवारकत नियान श्रेटल भौजित लाजां भेजा बाबा क तहे गृष्ति त्वान शृष्कि भारणत खीश्रफिछ खामनाबीन निक्ष रूप्त, त्यान डांग्नपेत्रतत थीश्रफिक कत्रितन, भूख वथ भारणत প্রায়ন্তিত্ত সিদ্ধ হয়, জন্মাত্তরীণ মহাপাতক সভূত যন্তা প্রভূতি রোগের প্রায়ন্তিত করিলে, প্রীহাদি উপপাতকজ রোগের প্রাধিত নিম্নত নিম্নত থ প্রকার গোবধ ও শূসান ভোকনাদির প্রিহিক উপপাতক প্রভৃতি রোগের স্বতন্ত্র প্রায়ণ্ডিক ক্রিতে হয় না। এ স্কলের বিশেষ বিবরণ শাস্ত্রজের। অবগত ভাছেন, ध कुछ मःबार विशाव कागि निविताय ना, काइन दिना छिनातम् या ए तक विभन्नो ज्नुविया उरिका एमन ব্যতীক ভন্মতা ধারাও এক প্রায়শিচতে নানা পাপ বিনাশ হয়, যেমন এক বন্ধাহত্যার প্রায়শিচন্ত ধারা বহু <u>বক্ষ</u>হত্যা পাণ ধ্বংম হয় এবং গুহিনী রোগের প্রায়ুদ্ভত করিলে তহ্ত্_{না} মহাপাণোশ্বৰ কাশ **প্রমেহ** জবে জামাকেণ্ড প্রভাবায় ভাগী হ্ইতে হ্ইবে। পণ্ডিভদিগের কি.ক্মৎ স্মবিধার্থই এই প্রারক্ত। বেদাভ্যাস ও ভীৰ্পৰ্য্যটনাদির্মপ প্রায়ন্ডিভাশ্বক কার্যে। রভ থাকিবে।

প্রায়শ্চিত্তোপদেশ-বিধি।

व्याह्मिक जिन्हा

ष्महेती ७ ठष्ट्रकेली जिक्टिज व्यामिष्ठ क्रियत ना। त्कृ त्कृ यामन मनिवास ध्वर मुम्नवास्तु

ब्साम किया मत्रभीत्मोठ छेपछिङ स्टेल छम्राश खात्रफिङ कत्रित मा, कात्रम विक्रुकति बिन्नारहम थींग्रिक्ड कतिर न।। महिकाम श्रान रावश्रीभरकत्र मिम ममनवात छोश करत्रन।

যে, কেহ যদি আশোচি ব্যক্তির জায় ভোলন করেন তবে ভাঁহারও তাবৎকাল জাশোচ হট্তবে এবং সেই জাশীচান্তের পারে অন্তচান্ন ভোজন জনিত পাপেরপ্রারশিচন্ত ক্রিতে হইবে। প্রারশিচন্ত্রিরাগপ্রন্ ব্যক্তির আমোচ অবহায় মুমুর্ দশা উপহিত হইনে, প্রায়শ্চিত বৈতরকী প্রভৃতি কার্য কিয়া অস্-মধে পুরোহিতাদি ভাচি প্রতিনিধি দ্রা করাইবেন। (৪র্থ ভাগে মুমুষ্ কৃত্য প্রকরণ দেখ)। वानकामिए**डएम खाश्रिक छ विशाम**। জিহিক পাপে অথাৎ গাছত্যাদি উপপাতকে কিয়া জৈহিক মহাপাতকাদিতে মোড়শা বৎসরের নুনে

(कार्योप नोकमम बरमत अने हा इन्ह्यों कार्नाय) व्यक्त दोना कित्र 🛊 धावः 🛭 बाष्ट्रित कार्योक बरमत

वग्नम भ्री रहेग्रो गिग्रोएक, डाक्रांत्र এयः श्रीत्नोकमिरंगत्रीक मर्समा त्रांग पूक राज्जिय यक्षांकि विश्वि क्षात-

पिडोंखन धकामण दरमाउत्र मान (ष्मर्थाद शूर्व मण्य वदमत्र भेषान्छ) यत्रक दोनात्कत्र भीम ष्मर्थाद छकुर्व छिरात्र यक ভाग थात्रिक क तिर्छ क्रित। উक्त वान (कर अन्यर्ष श्रः न नक त्रात्रे) शिक्ति वि अक श्यम देशाता ए एक श्वामिष्ठ कतिया मिष्ड भाषता। माछ वरमत्र छिन भाषता नाम বয়ত্ব অস্থানীত বালকের কোন অপুরাধ বা পাশ নাই; স্থতরা: ভাষার রাজদণ্ড বা (পাভিত্যজনক महामोडकामि याडीड) बेहिक मारभव क्षांत्रिक बाहे। क्टिछित्र व्यर्षक कत्रित्न भाग बाहेर्त ।

डर्गी, अवर गर्मात्र वर्मत गर्माष्ड (ध्रोहो, डरभट्ट इक्स वटन, क्षांत्रफिट छ यगीडि वरमप्तत भेद इक्षा विन्ना आस्था षाछान कृष्ठ नारन विश्वम खार्शाम्छ क्षिछ ना शाक्रित, मर्नवहे छानकृष्ठ नारन आर्षक * थार শ্চিত এন: গোষ্ড্যাদি ঐহিক উপপাতকে শ্রদিগেয়ঙ জ্ঞানতঃ অজ্ঞানত অধিক প্রায়শ্চিন্ত ইইবে। একে

* नारभन छात्र अधामकः तमा-मानामिरक बर्दाक भूग हत, वहेनछ निनताजि उषक्षात्र (मधी वात्र त. बारमं सम्मान्त्रे निष्णे । नीरां क्या शास्त्र महारम्पंत्र शिक्षि हर्रप्रधिन। धर्केन कामा कर्पत्र यक्

क्षहें बन्नम निक्रांभ बिषत एक्टन नानां क्षेक्रांत्र जाएक।

लीबिक्स श्रेष्त, क्षेत्र खानकुछ त्रात्र खानकृष्ठ लीबिक्स भीम ध्रत ष्मखानकुछ त्रावर উত্তর ধর্ম পাকিলে অর্থাৎ জীয় মূদ্রত্ব লা প্রীত্ত নালকত জাথনা একাথারে ঘদি বালকত্ব প্রীত্ত রোগমূক্তক हैछामि पर्यावत्र (जिम्हात) थ थारक, छोट्टा हहेरम् छ छान्छ। ७ ष्टळान्छ। विहिरु पूर्व खोद्रिक पुर

मछोन दृष्ड शीयथ छोश्रिष्टिय भीम छोश्रिष्ठ इहेरव, भीम चारोक्य। नानाज्य छोश्रिष्ठ नाहे (शोवश खैकदन (मर्)। (य्योरम एकदन ख्रांमकृष्ड भारभेद क्यांत्रिक दिन्तार्थन, छ्यांत्र ष्रख्यांन्छः छम्ब

मध्बार छेश्रके भागांति कदामा क्रिया

त्रिक हरेरव धरा यथात्र षाळानक्र तित्राह्म, छथात्र छानछः हरेरन छिन्छ। त्रिक हरेर धरा

(मन्भून) वावश्री।

ক্ৰিকালে প্ৰাঞ্গিত্য বা চান্দ্ৰায়ণাদি বত্তিহয়ণ ক্ষা ছুৱহ, এজন্য যুগডেদে বিশেষ ব্যবস্থা প্ৰচাৰিত रहेग्राष्ट्र, वर्शाय मठावृत्य का कारत, जबतात त्यवतान, माणत थ कनिष्ठ तथ्य मृता मान किर्यात कारमम

लाष्छ, किछ ष्यमुक मत्रा चान्न भारम निरव, अज्ञा निराम चारमा थाकित्म, त्यह त्यहे ख्रिता निराज रहर, मानिहे सारात षाणार वाता निष्ठ हहेत वायुक्ताता जैता हहेता अनीवह त्या मूना नतारिक वनित्रा निकिष्ट श्रिताष्ट्रः अक्रमा छमाना त्रक्रानि क्रिक्ट श्रेरम, जन्न निष्ड श्रेप, रिमम हारा विराम सिमिट नाहे, ताहे शत, त्या, जात, या, व्या, कृषि, जिन, युक ७ जात धाडे नकत खरा मांच हाकाशार्थ भाई-वृशितमां क कार्यायकी ता इक्छ मान क्रमः हेट्यामि काकात्र छेटात्यत मानकाक। रंत्रक्रमुना शैष्ठ काहन अना यशात्यती नाशात्र गृष्ट्मिराजत भएक जिन काहन (अवीष त्या कुना कुने किन 8 गर्छ मूना এक काइम,) धरा मिडांख निःश्रमित्रत्र नष्टत त्राम्ना अक काश्म माधिक मिषिटे ज्याष्टि। माथाज्ञन नरमशीन गाडीत मुनाड अक कांश्न, अनः द्वय मुना भीठ काश्ना। मक्तम धनोडिंग वास्तिज भरका কাল অনুস্বারে (ধ্যুর উচিৎ মূল্য দেওর।ই প্রশস্ত। যে প্রায়ণিডন্তে দানের আনদেশ মাত্র আছিল, কিছ (४क्ट मारन अनम्भ क्ट्रैरल, छेश्रुंत मृता खत्कातिमार निकिंट जारक, भथा,--धनवान् त्नोकिन्शित्र परक

कांद्रीमें र्रानात कांत्र व्यक्त ना विन्ताल हत, कांत्र कांत्रीम मरम नायांत्रकः कष्टि करिन व्योक्त

^{*} शिक्त जड़ा बरजन, त्व वा जित श्रोवत अश्वाबत नर्मव विक्रत हरे त्वा अ आधिक एत में हैं में स्थार नी हुंग्र, स्मे टाउँ मित्रम, डाहात गरमहे (वस् मुना এक कहिन।

ष्ट्राश्चिष्ठ श्र्याहकुन्छ।

त्य मिरम खीमिष्ठिक कता निष्ण्य क्षेत्र, उरश्ये मित्त श्रेतात्क मित्र मुख्य । पाक वर्णन अस পরিযাগে দিতে হইবে, দক্ষিণা নির্দিষ্ট না পাকিলে বথকিথ দিলে হইবে। <u>কোকে আম্মান রাক্ষা</u> এন: শ্রীনোক ইহাদিগের কেবল মহাপাতক (অতিপাকক) ও গোধধ প্রারশিষ্ট ক্রিন্ট মুণ্ডন করিছে (खणां छ छिन्दमण कत्रात्र) नित्रत्रत्रामी ह्हेदन । द्ययात मान विषय छपात्र निष्कि शक्तिम् किना नशामि एक्षम के ब्रिट क्टेर्र । किम धारतिष्ठात्र यमि कह (क्षांत्रिएक प्रमिष्ट) मध्क मुख्न मा मसंखात्रिकात्रिक्ति मुख्यात्र भाषाक्छ। कार्याम किन मथवामिरात्र मूख्न व्यात्रोक्षन क्रेंटिन, (व्यात्र मर्क-क्रानहें) कमकाष्ट्रत ष्रवाणां १ े घृष्टे वामृति द्याप तमाष्ट्रमा क्रियतं मुख्न मित्र क्रिता ক্রেম, তবে তাহাকে বিশুণ দাম ক্রিতে হ্ট্রে, নচেৎ বাহার পাপ তাঁহাতেই আকিবে এবং, বক্তাও क्हेर्य, षष्ट उनेमाछकानि ज्ञार । जानाक बानम भाषबीतिका बाम्बाबिक के भिष्रम, शुक्रिमिश्त

7

धाहेर ज भारत धरः छक् या द्यात्राभीत चत्रम्भि करम चन त्रांत थो छम वात्र, तक ति वरमान पूर्णीक कन मुनामित कक या जानात्य कष्मां महेगाई थाहै जि हम, मर्सवरे वर्णामित क्यारोध अक्षार्थ प्राम এই বিদি, কিন্তু উদ্যু থাইলেও উপবালে অসমৰ বলিয়া আউপণ কড়ি উৎদৰ্শ ক্ষান্ত ব্যবহাৰ আন্ত্ৰ एमरुक्षि समार ६ नाजनाणक बनिया (करन युष्का द्यमाना जाएक, छेश क्रियम निर्मे नएक, একাদমী এক পাড়তি উপবাদের পর্ণিনে প্রার্গিচন্তক্রণস্থলৈ প্র্বিচ্ক্তিন্ত ফুল্ল জোজন স

শ্বায়দিভভাত্তগ্ৰি বিধি।

ब्रिया कान कि महि।

क्षात्रिक कतिवात मिरन अक्ट्रे ब्यूजात छेतिया, क्षाटःक्षांन ७ मधा क्षानाक्रिक्ताकृत्र नेपाधा চাঞ্জায়ণ অগেকা ওকতর নতে,একাণ ঘুট বাতিন প্রকার * এফিক পাণ বা ক্ষান্তরীণ শাশক কোণ সম্মান্ত ছবিয়া আবারণিডয় করিবে। ষ্টাভাগ চালোয়ণের মূল্য গানাধিয় একেরণ ক্রয়, গানুক আলি

 কোন এক্ট নিৰ্ভিষ্ঠ পাণ্ডে অৰ্থাং পো হত্যালি বা কৰান্ত্ৰীণ মহাপাভকাদি হলে ভাষ্ট্ৰই শাল-নিৰ্ভিষ্ঠ आविष्ण क्या जातकक प्रमिष्ठ छास्टाक मात्रा छम् छ नाक मर्त्रभाग कम स्ट्रिक भएत, छबाभि विरम्भ मित्रीक अवराशिएकत्री शुर्कांक दानकाहै कदिता बारकन।

সং করা ধার। তাল্লারণে নাদ্ধনপ্তথেমুন্য সার্ক ঘাবিংশতি কার্বাপনী বরাটক জাতাবে তন্মুন্য দিবে। श्हेरत किया (य (कांग मगरत हडेक कांगिक्डे भी भ गांभ बांता तरह भैनित कतियांत्र ताममा बहैरत, ठांच्यां-

परे राउश भवाष्ट्रभाव मानीय वराष्ट्रकामि ভातामि भाष्य चारत्रभ भूत्रक (मरेखनि स्विद्धा मिक াই প্রত্যাঞ্ন ক্লাপি ক্যাপিন বাদাণেন চালায়ণ, বতাদানমধেন বংকিকিমাকণক সাক্ দাবিংশতি কার্ণাপীর লভা রক্ত দান রুপং আ্রুদিন্তং ক্রবীয়মিতি স্তামহং। हांसाइध-रावश्रीभव निथम क्रकांद्र *।

करिया, डांशांब छेशद धक्यानि श्रिखांद्रिक शायत। व्याक्षांतम कतिया ब्रोबिरन, भेरते क्षांनमध्य क्षींत्र "গাৰ্দ্ধাবিশতি কাৰ্যাপনী পৰিমিভ বহাটকেভো। নমঃ" বলিয়া অৰ্চনা প্ৰ্ৰিক উৎসৰ্গ কবিৰে,— रहेश छेपातम्ब शुर्मक नांबाधनाक खनाय कडिश । अत्रान्मामितक शंबशुन्मा मित्रा, मानीत वताछेक शतित्रा

विकृष्धाम् छ०नातामम् । १ व मानि (मृश्रातीस माम छ। तथ रहेर्व) षम्पुरंत नात्तमः षम्किष्ठिरथी

मिक्पिक -- करमार्गामि हाक्राप्रमञ्ज्यां मन्त्रमानक क्ष्ममात्रा क्रेडेड्ड महिक्रिया कर्गिलो मान कर्षाः माम्डार्थः मन्द्रिनात्मड्य काक्षमम्ताः त्रमञ्ज्याक्रिकः अधिक्टेनवकः स्था **অমুক গোবঃ এতিনমুক দে**ংক্ৰী চান্দাৰণ-এতনাঞ্চ সৰ্ক পাপ ক্ষক্ম-এতান সাৰ্চাৰিংশতি ক্ৰিশিশ্ পরিষিক ব্রাটকান্ জডিভান্ * শীবিফ্দেবতাকান্ দ্ধাসম্ভব গোভনায়ে রাশাণার অহং স্থান

श्रुका क्षित्रा, छेश्व गुरक्र टेडन श्रिका ७ ननाटि निन्त क्षित्र। मिरत, भरत निक्रा क्षेत्र, यहक्ष्मि ्शाबाममान ।—'ब्रज्ज भामाः ७ शत्व नमः' वह मह्म (ष्मभन्न वाष्ट्रित) माझित्क मामाषि माना कमती ७ छकुन क्ष्मि जाहाबीय त्रवा मन्तरक नहेंगा,—

* রজতদান হুইলে, ইদ: মার্কালিংশ্ভি কাগাণী শতা রজ্জমন্তিতং ইতা।দি উল্লেখ হুইবে। সেচ্মুল্য ব্যক্তিকী बस्तात्व अक्षक किया स्वर्ग महा उध्यम हहेरव, छाहा अक्ष काणीय हथा। जानश्रक, कृषक वर्ष क्षक त्रीणा अग्रक्ष की हैत ध्यम्म् किन्दिः महिक त्मध्याष्ट जात्मा। " ও পৌরভেব্য: শর্কহিচাং পবিজ্ঞাং পুণ্রাশমঃ। প্রন্তিগৃহক মে জাদং গাববৈজনোক্যাতর:।"

अहे गरत (मीकृष्क ऐस्। बाह्रेरक मिरव, [योन नारी मुक्टे स्वेश ऐस्। जम्म, करतम, हरत थोड्य मिष्ठ निक क्टेन बनिया मिन्छ कतिरत, मटिर कानिक, खर्बीर भारतव स्थारवांना द्यातिष्ठक हम नाहै सिरकाना भाषा श्रमक खात्रकिष्ठ कतिएड हहेरत।] भात्र त्रा थाना कतिरत, वर्षा -

গ্ৰুণাড়াখন।──লাগ্ৰুডভাজে বাজাগ্ডোজন কুলুক্তি ইহুব্ব। বহু প্ৰাজাগ্ডাজ্জ, ক্রাণ্ডে শন্ধ নাহ্টলে অনুন্ন দমটী আজিব ভোজন কুরাইবে, কার্ণ ফেজপার বলিয়াছেন যে, স্টুগেষাপ প্রতৃতি আঁায় ১৬ क्षांमे यात्रा माहि, त्याहि माण क्रामि प्रमित्र प्रमित्र क्षामित एको क्षा मित्रका ७ मत्या शिक्षाः श्रीयहोक्षाः त्रीबर्धकोष्डा धर ठ। मत्या बन्धयुक्षकाष्टा मतिबारका मत्या मयः। विक्ति। जक् वाम्तिष्टाक वाम्तिष्टाक क्योंहै कि क्हेरित। वक् वाम्तिष्टा क्योंहै कि गर्थ गकन कार्यो क्य कम वात्रत एकाकम क्याहोट क्य, निकास ष्मत्रमर्थ हहेरन मीकि ष्मप्रा किनकि एकाबन নিবছন বা অভ্য কোন কংগ্ৰংশ বাজণ ভোকন কয়টতে না পারে, ডবে বাজগদিয়ের বাটাত্তে

क्षेत्रां भारत विषय हो है ते, भूक्षित भूक्षित क्षेत्रां, भारत खंष्य किन मिन राधिकारन क्क्कुोछ ख्यांन वादिःमध्य बाम कतिया भन्न छोक्न कवित्व, उर्भाय जिन निवाम जान्क ख्यांन वर्ष-एमन ভবেই) চতুर्सिल्मि । थात यत्र औजन (महाद खेनदान) क्रियद, म्परिमेटे जिम मिन छनदान कतिहा थाकिरव, धरे बाम्मार माथा कार्षात्करे टीम्बांग्डा बाल, रेशाङ ष्यमपर्थ रहेत्न भग्निनी त्बस् विशांकि श्रीम खन्न छोड़क क्रियर, उर्परत्न हिन मिन ज्यांछि (ज्येशिर स्क्र रिम राष्ट्रका वाजीक দান, তদভাবে উহার উচিত্ত মূল্য, তদভাবে শাগ্র নিদিই মূল্য তিন কাহন * ব্রাটক তদভাবে ভ্রমুল্য প্রাজাপত্য ব্রভ নিরূপণ। CONTA DITE

প্ৰাজাণভাৰত দেখাইনাম, চালামণ প্ৰ্তি বত জতি ওক্তর এই কারণেই অমুগ্ৰহ করিয়া ধৰিগণ

कमिएक द्वान्ज मीत्रवार्ष्ट मात्मत्र वावश्चा कत्रियाष्ट्रम, हेश भूत्र्व बनिग्नाष्ट्रि ।

রজভাদি দিলেও বতের সমান ফল হয়, (এডদিবরণ ধেলুমূল্য প্রকরণে দেখ) দৃষ্টাজের জাজ এই

^{*} श्रीकारत (प्यम्ता अष्ठ स्ताड शाका वाकरा मट, मुमलमान हाकष्कात्वारे गिकात्र बाडि मन गडिन मिलिड

বিপ্রসামিক গোবধ আয়া**ক্তন্ত** বিধি।

नांकां देश क्टेंटि, क्टा मक्षमम बीकां भाषात्राह्यां क्या माम क्षांत महाम (ध्यु माम क्षांत्र महामा) आकारपद्ग किन दरमाउद्र क्षिक दहक त्री किश दृष द्रायान्त्र कृष्टिक क्ष्क्रामाधः

(৫)) भक्षिकां क्षारम द्यानिक छम्पाद उमामा दक्षामि मान रुद्रितम खदः (३६) भागद कार्यन

मिक्सी मिरवन। छदरम्व छडे माछ (३७) कर्मन मांन खबर (३४) काश्म मिक्सा मिरक स्केरन।

दावक्शभेखा।

' मन्द्रधान भिक्षमणकार्षाभनी मिष्मनक अक्षभाग क्रमान क्रमा जानः धाराष्ठिकः कत्रनीत्रमिति मकाः मकः॥ বিপ্রশামিক গো্রাহ্মণানুশ স্ত্রী কর্ক বা বালক বৃদ্ধ রোগী কিছা শুদ্র কর্কক জ্ঞানকুজ नाकार वह इटेटन * बार्षक खांत्रिक खांत्रिक ज्यात्रिक ज्यार (१००) मिका विक्षायिक् (शी: मक्क्षकामक छ-माक विकाम अप्याप्त व्यक्तिमा वाक्रमा याक्षक वर्षा हिन्दी है।

क्रियं क्रिएंड ड्रेट्र ।

^{*} बातका कि यावश्य हा छे प्रमी किट बातरकन खिता है जा कि अवः बता कि माथात बाहा बिद्रमेंव क्हेरन, छाहा

क्ट्रेड भारत्र ।

उरासव छड़े क्षिए <u>ग</u>्रीयोश्चित्रखत्रक पार्किक धरा भाष धरे क्षिकारत ध घरण मन्त्रत क्षिक প্রয়িকিন্ত (বালকাদিভেদে প্রায়ক্তিত প্রকরণ দেখ) অধীৎ (এ০০) দক্ষিণা ও (১২৮০) দান ্র্ইবে मिर्व। এক উভয়ধर्य याकित्न, ष्यथ्न। धकामण वय्त्राप्तत नाम वत्रत्र वालक वालिकांत्र

कारून मिक्ना मिरन, जानाक धश्रत (११०) कारम मिक्नोछ मिशा थारकम। विट्यामित ही । यानकाषि বিশ্ৰমামিক গোৰ অজানতত সাকাৎ বধ হ্টলে, বাজ্বাদির। (২০৪০) কাছন দান এবং (১) এক ध्दरः मूत्राप धर्षे सख्यात्रकः यह हैश्र आर्थक (४१००) मीन स् (१०) पन मिक्ना किट्ना

हारक छेछन्न धर्म थाकिएन हार हाकामण बरमहत्र मान बन्न बालिकामित्र भीम ब्हान्तिक अर्थार (।

भन मिक्नि (अ.) - डिस्मिर् हरेर्त ।

बाबश्री भेडा

दिखीयांगिक (भी: मक्रमख्यांमक्क मोक्कांबर कांजिक भाभक्यांथिमा मृत्यु बकांघ्यभाषामग्रह गिष्मप्र षोष्ट्रमानीर्षिक षामणकार्यामधिमात्र ज्ञार थात्राष्ट्रका कत्रीत्रामिति पिष्टार त्रकर ॥

शर्थाक खोशिम्हक्ष भाम खोशिष्ठक, षर्थार (७००) मिक्सी এवः (३२००) मान कत्रिक इहेर्य । বিপ্রশামিক-গোবৎসব্যপ্রায় শিচন্তবিধি। কান্দণ্যামিক এক ব্যায় গোবৎসের জানকত ব্বে धश्राम खीम्डामित्र व्यात्रिक्छ हाम हहेरव मां, कांत्रन भाम मान वाम वामिराखत्र विधान नाके।

अम्मुखाक् धर्मावहन मून क्योत्रमिहास्ट्व शाक् व्यर्थाद (ono) शंग मृष्किश धर्वः (১२५०) मांज ব্যবস্থাপ্ত।—বিপ্রসামিকৈকব্যীয় গোবৎসন্ত সকুজ্জানকুত সাক্ষাযুগজনিত পাপাক্রাপিনা বান্ধ-विव्यीय वदमवत्य विमीम खा य्रिक्ष अर्थाद (११०) मिक्सा धार (१८१०) काइन मान कब्रिया खबर (७৮।०) कारूम माम ह ्राता म्सामित्र षार्षक कर्याद (८६० ०) भग मिक्ना खबर (३३४०) भग मान हरेरत। अस्क छेल्ड भन्न भाकित्त द। এकामम वद्गरवद्व नान ववक दानिकामित अक्रत < जैस चर्थाक बङ्गाम्। ६ व्रम्म प्रमार्थम व्यक्त । ज्ञास्य विक्रिक्ष विक्रां विक्रिक्ष क्षां मार्ग्य । प्रमार्थक क्षां स्वक्रों विक्र अश्रक मुखामित कार्फक मांन ७ चार्फक मिक्पी रहेरद, किन्छ धकांग्रम बरमरत्रत्र नान यम् अधिहिङ मान क्रमार व्याग्निककः क्रमीत्रमिङ विष्ठ्राः भद्रामर्गः॥

क्ट्रेटि भीता

7. 1

गर्डिगापि-(त्रीवरव्योत्रिक्छ।

क्र ग्रंथ नर्सवोहे श्र्यांक वीशिष्टांका श्रीम व्यक्तिक्षां, (10) पन मिक्ना जनः (6000) मान বিশিষামিক একব্ৰীয় গৌষ্ৎমের বান্ধা কর্জক কিয়া শুমু কর্জক বা স্ত্রী ও বালকাদি ক্র্ডুক জ্ঞান क्ट्रेर । विक्तींत बस्त नर विनाम व्यर्ष (३०) भन्न मान्ना अन्तर (३२००) मान क्ट्रेर । जी भूत क धकारणदर्धत्र मून बद्रक बानकानित्र हेश्त कर्डक, जिन्दीत बरन दर जिन्ना कर्षार (भः) मिल्ली अवर (১৯४०) मान हरेरता म्यानित चार्कक चर्चार (१४०) मिक्या (७४४०) मान स्केरता अरक डिज्य धर्ष थाकितन वा चांडि वांनात्कत्र श्रृक्षंवर मृत व्योत्रेक्तित्वत्र भाग रहेत्त।

यमाष्ट्राक खांत्रिष्टिका क्षिम खांत्रिक क्रिएक हरेत, म्कीर विधात्तिक गाँउने गाँजी विध्यकृष्ठेक गर्जिन, क्रिनेता, बक्कीता, (श्यारश्य धनः प्रथमाथा शाबी श्याम प्रसंबद्धे कानकः चकांत्रकः खांतक छ रमम एहेरन (७०) काह्म मिन्ना धारः (১०২) काहम उत्राक्ति छैदमर्ग क्रिंडि एहरेरा গুৰ্হাণীয়া - শুৰুষায়িকার। পোগারিণাঃ স্বজ্ঞান্জত মাল্য্যভনিত শাণক্যাথির। শ্রেণ पण्णांतकः बर्ध अवः भूग्रामि कर्डक यर्थ भूत्रंतर णक्तामि योत्र फिछ ब्हेर्द्र।

रिष संख्यां कि व्यावाट है। बिरिक था कित विश्व कर्ता अर्था करा, एर वेट भन मांक (कर्म

পামিক গোর ডৈডনাবিশিট গর্জ বৎস নাশে জানতঃ স্থদশ ধেলুমুল্য (৫১) কাহন উৎস্প ও महीमाटक विभाम এवर मस्विविधव मन्मन चाउठका (कार्याय प्रकास दा विभागीत) महीमारिक पामखेत स्वर দশুম মাদীয় শুভূতি (চৈত্তাবিশিষ্ট) গুরুনাশে সম্পূর্ণ গোবধ প্রায় কিন্তু করিতে হইরে, জার্থণে বিশু-क्रिमेर्डिन करता) शर्दनाट ज्या खार्राम्ट छत्र नाम खात्रिम्ट छ, शादा १३८ मध्यत्र (ठात्रियात स्वत्रि) ं ३०) क्रिय मिम्भी रहेत्त । अछात्रकः मर्त्रव चार्षकः।

্ অতিবৃদ্ধাদি গোবধপ্রায়ন্তির।

त्रीएक हनम क्रिएन, याथाक स्रोत्री फाछत आर्थक स्रोत्री क्रिएक क्रिएक हरेरि, अर्थार दिख-

স্থায়িক অভিবুদ্ধ। গোৱাদ্ধণ কর্তক জ্ঞানকুত বংধ (१॥०) কাহন দক্ষিণা এবং (২৫।०) কাছন গান হন্ধ্ৰে,

यायका भवामिर्ड षाञ्जिका भा यामिका मिरकिष्य थाकिरय, षाष्ठामाङः षार्किक। षाञाङ गुम्रे मुनाबङ, षक्ष किए। डेग्रेड (शारुमान पाम खांग्रिमाङ्ड विषान काछि। भूमयायिक रगीवर आयुष्टि ।

শ্দ্ৰের পো বিদি আবাৰণ কাজিয় কিলা বৈশু কর্ত্বক অধানপূর্বক দাকাৎ হত্যা হয়, তবে চারিটি থেকু क रुम मीन এवर मिक्निश वर्किक्षक्रोदा बी मूडानिश, क्यान हैं। अ अखान के अपिक, अपि एडा विषय प्रा म्ता () र) योत्र कारत यताकि मान ७ वर्किकि प्रक्षिश मोक्क कति।। ष्याळाता इः दाय रुपक्ष (७)

घष्टिता वा अमामन बदमात्रत्र माम वत्रत्र वानाकत्र भाग खात्रिक छ्टेरव।

শুকুর্যমিকগো: সকুণজ্ঞানকৃত সাকাৎ বধর্তনিত পাপ ক্যাধিক। শুদ্রা প্রাস্থ্যক্রক্রক্র শুদ্ৰ হী কৰ্তক জজানক্ত-শুক্তৰামিকগোবধ ব্যুবস্থাপতা।

পাশ্চমুণাদাসমগ্রা হত কিঞ্চিদন্দিণক সাধিকার্গিণী দানরপং প্রায়শ্চিত্তং কর্ণীয়মিটি বিঘ্বাং মতং। मुख्यामिक त्राददम यथ त्यामिष्ठ ।

শুস্তুসায়িক একবধীয় পোবৎস বধে যথেকি প্রায়িক্তের পাদ প্রায়ক্তিত চ্ইবে, অথিৎ আমাপের आनट: (०) काह्म। षक्षानट: ()।•) काहम मुमानि कङ्क कानट: ष्रकानट: ष्रकान । हेश करनका नान

জিপাদ প্রায়ন্ডিন্ত এবং মুয়াদির শ্রুচিন যথাক্রমে হইবে [বিপ্রয়ামিক বংদ বধ প্রায়ন্ডিন্ত প্রকরণ দেব]। व्योविक्तिक जात्र क्षेट्र मा। विन्तीत बरनत्र अवन् जिन्धीत बरमत्य शर्षाक व्यात्रिम्हास्त विभाग जनः

त्वायामिनिष्क-त्राव्यव्यायिक

লোম ৰপন ক্ষয়িবন। যদি কুশাবা কেশের রক্জুহায়। দ্বিনে বল থাকায় (আনহার বিহারাদির জাভাবে) কশিবা গোর সৃত্যু সয়, তবে বন্ধনক্তা প্রাজাপতিয়ে অতিক এবং এফ্লে শ্রাদিয়। জগক্ कीया त्या दिवस्य क्ष थोकात्र भीन जाहात्र ७ ब्राज्ञामाणि केतिरुक ना भाषात्र शिन मस्त, छर व वहे खकात्र कींवा (जीटक षष्मीवा जीम (जर्बार इर्मन बनिया ना बुनिया) (बाधानि कतात्क, यनि तम्हें त्वाथानि কাৰ্যিই ভাষার মৃত্যুর কারণ হয়, তবে দেই রোধাদি কর্ত্তাকে নিয়লিখিত প্রায়ন্দিন্ত করিতে ইইবে। (बीयकेफी खोकागाजात भीन खोत्रिक क निरायम अयः भून् नित्म (मुख्यम भीत्रवर्छ) एक यन आज वीत्रिक्तिक क्षित्रम धन्द्रभूष्र्व मिरंग न्दं अ त्याम हिम्म क्षित्रक हरेरन । रुन भक्छो मिरक राष्ट्रिक सर्हेश কীণ। গোল যদি কভিনায় বহল বিবিদ্ধ (পবিবাদে মৃত্যু হয়, তাবে বাকাণাদির প্রাজাপতে।য়ে পাদতার এবং শ্রাদিয়া ভদত্ব, একাদশ বংসবেরর দূনি বয়ক বালকের প্রাজাপতের পাশ প্রার্জিয়া একবং

যদি পুৰ্পেজি প্ৰকার বোধাদি-কারণে গোর মৃত্যু হয়, তাবে যথাক্রমে চালারণের পালাদি পাল্ভিজে क्रियन्ता विक् क्षीन विनश (वाष श्रोक ध्वर द्यांशांन-बाह्य प्रितन छ पादह अक्रम क्रिका

मित भाम-थात्र फिछ रहेरत। हेका जालका कि मिर अभाख छत्र मरखत्र षावारक वा शुरस्राक्क षाणित्र উচিফ্যান-হইতে পড়িয়া বা কুপাদিকে পড়িয়াও, গোর মৃত্যু হয়, ভবে দেই ভয়প্রদর্শকও আংজাপ্তা শিথ। বাতীত নথ সোম ও কেশের ছেদন করিতে হইবে *। আবার মদি অকুঠ-মাত্র ফুল ও ক্ষেপ্রমাণ मीर्ष, नार्व अनभन्नत मर्एउत आधारक किया कृष्य त्याहोतित आधारक कौनी त्यात्र मुछा रश, उरत श्र्री व्योकांभछा, ष्मनमर्थ हरेतन, (षष्ट्रभूना (७) काश्म जिरमर्भ कत्रित, भूजामित्र ष्मार्कित ७ षाछिवानाका-वास्तामि निवधन वर्षि त्यांत खांग नांन रुष्, उत्व ठावन अवि विनिष्ठाह्म, विक्षन व्याष्ट्रिक्छ, सर्थाद প্ৰীধিশিতাৰয় ক্রিচে হইবে। ভবদেব ভটু বলেন, ষদি কোন ব্যক্তি কর্তক ভয়প্রাপ্ত হ্ৰয়ার,

* कुन्छाग्य ।--रेक्स्गाञ्जानक्छ-क्नीनग्र-मकृष्ठनाकि-सिष्ठन-निष्ठक-न्यस्क्नान्ड-गागक्षार्षिमा बाक्तरान बर्छाका-मगर्थन प्रकिमिक्षिक्षक - ठड्डामा विक-मिक्षित्र - मिक्षित्र निक्षित्र निक्षित् निक्षित्र निक्षित्

ক্রিডে হইবে: শুলাদিরও এই পাদ অপেন্দ। নুনতর প্রারশিত অধার হইবে না। বিশাদ ও বিপাদ-ष्ट्रत शुक्रवर अञ्चाध होरा : अञ्चाम शर्मा क मृत्र माधामित प्यांचाक हरेतम, भून ठामायन क्रिका

ह्हेरव धरः कथिषि थांगछ एथेगाउँ ठिखार्ष हम करिएक हहेरव । मुसापित्र अर्धक, चित्रामका कि नीम थी बन्धि का विक क्षीना ना हहेडा शुष्टिषुक भीत भूसेतर (त्रामामिनीबाख दम क्षेत्र, करि यथा ना बिन বিহিত যথোক প্রায়ন্চিত্তের পাদাদি করিতে হইবে।

म्मानन-निमिख-त्रीद्ध-स्योग्निक्छ।

হয়), অথবা প্রাচীরাদি-বিহীন ও রক্ষকশ্ত গৃহে উপেক্ষা-নিবন্ধন যদি গোর জীবন নাশ হয়, কিয়া শত্যস্ত হিম কিয়া প্ৰবল বায়ু বা বজাগ্রি-ছারা আহত, কিয়া উধন্ধন-মূত (অর্থাৎ,রাত্তা। দিকালে त्य क्षांस कांत्रवाष्टे क्छक, शीलाक्त आनवश्म-मिवक्षम त्रीत खागिविद्यांग क्टेरम, ष्ट्राक ष्राशासन-পলিকের জনাকাতে গোর পলদেশে রক্ত্নংযোগ থাকিয়া, ঘদি অফাত রোগাদি ঘারতে পোর সৃত্য नर्गीमि एव एकान चांभन त्यांनिवाज्ञा, व्यथना शर्छ, खनाथ खत्न दा यञ्चकरम भठन-वाजा हेट्यामि-अकाज निमिष्डक (श्रीवृश यरन ।

श्रवारमनीमि कार्रा, फर्बार, प्र∗्ा वा निष्ट-त्नारकत्र डेटफ्टम डेरमभीकृष्ड रत्र द्वा वा बर्मछत्री, जिल्लांड कार्रात प्रवास मा थाक्षि, जोर्डा श्रीतिक खोकात्र कार्यास -वर घिटा, उदमर्गकात्रकत्र कार मित नोहे, बहे कछ यां छ वह ग्रामि क्षित्रित विष्याह्म ए, हिछ, जत्र, छ दश्हे भक्छ, कावा, द्यों का वा का छाउँ का क्का म পশু, ন্ব-প্ৰস্তাপো, ভর-শ্ৰীপ্তাপো এবং পামাকর-হ্ইতে ন্বাগত প্ৰথারা ধণি শক্ষ হানি হয়, ভবে কাহারও দও হইবে না; অভাধা পানকের দও হইবে।

যাহার হতে পশুর রক্ষণাবেক্ষণের এবং আহারাদি-দানের ভার সংতাক থাকে, ডাহাকেই ডাহার পালক বলে। যদি গ্ৰ:দিৱ রক্ষণাদির ভার দিবদে পালকে জাপিত থাকে এবং ক্লাত্তি-কালে পো-যামির গুহে যদি শালক কৰ্তক সেই গ্ৰাদি প্ৰভাপিত হয়,ত্ৰে যে সময়ে উহার বিনাশ হইবে, তৎকালে ঘাছার ব্যবস্থাপবকার বলেন যে, ধবনাদি-কর্ত্তক অপস্ত পোর বংও (জানিতে পারিসে) গোপামিকে উপর উহার রক্ষার ভার থাকিবে ভিনিই পালক স্বতরাং তাঁথকেই অপালন-প্রায়ন্দিন্ত ক্রিকে হ্ইবে। স্-স্মিক গোন্ত অপালন-বধ-প্রায়ণিডন্ত করিতে হইবে।

ভাটম মানের পর (সদারজ-কলরণীশোত-বশতঃ) নবমাদি-মানীয়] গতিষ্কাজী-দিগের শাসিচভাদি भीताक इशि छ। शिक्छ कतियात्र कम्म हा ना थीतक, छत्त त्रामामि छै। हारक धनाषि भान्नी नाश्यि ক্রিৰেন, কিয়া দে যদি স্বেচ্ছায় না করে, অথবা পালক যদি মেচ্ছাদি বিধ্যী লোক হয়, তবে গোগা-मिरक्टे ताहे थीश फिड क्बिट हरेता। प्रथम मात्तव पत्र, बर्धार वहां मि-मात्रीत [क्ट्र बत्तन, বৈদিক কাৰ্য্য জাধিকায় নাই; প্ৰতিনিধি-ধারা ক্যাইতে হইবে (১ম ভাগের সাধারণ ব্যবহা দেখ)।

केकिए किकिए धन नहेंडा, धक करन स्थारिफ क करितन; वह शांत्र ष्यानिन-राथ विश्व साधिक छ এবং বছ গোর বছ-পালক-সত্তে অপালন-ব্যে প্রত্যেকের দিপাদ করিয়া আগ্রেশ্চন্ত্ (ইহার বিশেষ আবিভক্ত গৃহত্-দিগের মধ্যে অপালন—ব্ধে সাধারণ পন-দ্বার। কর্জা প্রান্ত করিনে,সকনেই নিকাপি र हैरन ; जाका-मिरीय मरश एक मा शांतरन, एए काम जांजा कतिरागड़े, रहेरत। मर्काबर धकामरखी এক জন ক্রিলে, সকলেরই কর্তব্য সম্ধা হইবে। দম্পূভীর ম্ধোও ভর্কুকত প্রার্শিচত্ত-ছারা উভয়ের পাপ নাশ হইবে। বছ-পালক স্তাল পালকগণ একলিবতী না থাকিলে, যথেকি প্রায়িক্তের পাদ, बाधीৎ, চতুৰ্থাংশ ক্রিয়া প্রত্যেককে প্রায়ন্দিত ক্রিতে ছ্ট্রে, কিয়া সকলের নিকট-ছ্ট্তে অংশ্যত श्ररकृत माथा भिकु-क्षेष्, एत्रकाषा या अधिथि-त्यया किया त्याशिक खाम त्याप्त हा त्रा का दिनिक काषा विवज्ञन वक्-त्रावर्षामि-श्रक्तत्न (मर्थ)।

विश्वश्रमिक शोउ अभीतन-वर्ष।

আজন কলিয় বা বৈশ্বসাধিক োর বাদাণাদি-কর্ত্তক অপাদান-বধ ঘট্টলে, ইতিকর্তিন্যতা (আনু-ষ্কিক কিয়া) সহিত আমাণতা এত করণীয় তদস্মধে, ধেলুষ্য দান ; তাহাতে অসমৰ্থ হইলে ডাক্ক্জ ধেমুদ্ধের মূল্য (৬) ছর কাংন কড়ি বা তমুদা-লভ্য রজতাদি দিবে [ধেলু—মূল্য প্রকরণ দেখ]। हैश्र मिष्मेषो बुम-महिछ (शी, ष्माडार बुय-मुना (a) भीठ कहिम छ (शीमुना (১) कहिम, धाक्राम (७) कार्म माम ; उम्लाद जम ना दक्तामि मिट्र। म्ड्यामिक श्टन मिक्रिमा विरापत नाहे।

ৰেচি-কৰ্ন্তাক-প্ৰাক্তাবভাগিচাৱণাল্যমধ্য। ত্ৰিকাধীপ্ৰী-দক্ষিণক-ত্ৰিকাধিপ্ৰী--দান-কুপং প্ৰায়-বিপ্রযামিক গোর বিপ্রবালক বুদ্ধ বা শুলাদি-কর্ত্তক অপালন-ব্ধেও এই জান্ধিক প্রায়শ্চিত। একাদশ ভাক-প্ৰাক্তিৰতাচরণাদ্যসম্থেন ষ্ট্-ক্ৰিপিন-দিশিক-ষ্ট্ৰাধ্পিন-দান-দ্পং প্ৰায় কিছেং ক্ৰ্ৰীয়-ত্ৰাক্ট্ৰ-কৰ্তৃক অপালন-ৰধ!---বিপ্ৰায়িক-গোরপালন্মিত্ক-ব্ধ-জনিত-পাপক্ষাপিতা বাৰ্দ্ধা राउकाशक। — विश्वकाषिकत्राव्रमानम निषिष्ठक-द्र-स्मित्रज-भाभ-क्यारिम। बांक्रत्य प्रिष्किन्त বৎসরের নাুন-বয়ত্ম বালকের এবং শ্রীক শুদ্রক-প্রভৃতি একে উভয় ধর্ম থাকিলে, পাদ-শ্রীয়ন্ডিন্ত। শিচন্তং করণীয়মিতি সভাং মতং ॥ মিতি সতাং মতঃ।

শুদ্যা সেভিকপ্রাতাক-প্রাজ্পতা-ব্তপ্দিচেরগাদ্যসম্বয়া সাধ্কাগিপণী-দ্দিণক-সাকিমার্পণী-দান-শুৰী-কৰ্ত্ত অপালন-বধ-ব্যব্যু। ।—বিপ্ৰসামিকায়া-গ্ৰেসালন-নিমিত্তক-ব্ধ-জনিত-পাপক্ষাথিতা। क्रमः आधिकष्ठः कर्मीग्रमिष्ठि म्हाः ग्रहः। भे^त्छोन्न-वरमन्न-वरम-भर्गन्न श्रीरक वरम वटन। विश्वम्नामिक त्रीवर**्गन ख**णामन-बरक्ष, मर्म्बदार्गन्न शुःकीक पाक-आश्रभिऽख दहेरव ; उषावश्र थल, यथा—विध्यामिकाक्षांक-मगावक-प्रावदनाषानन-

খুদ্ৰপামিক গোৱণালন নিমিত্তক-বংজনিত-পাপক্ষাথিনা শ্দ্ৰেণ নেতিকৰ্ত্ব্যভাক-আল্লাপত্য-নিমিতক-বধজনিত-পাপকয়াথিনা আকাণেন (শ্লাদিনা বা) সেতি-কৰিবাতাক-জালাপত্য-বতপাদা-চর্ণীদ্য-সমূর্থেন সংগ্রকার্গপন্ন-দক্ষিত্ত কন্ত্রিপন্ন-দান-ক্রপ: প্রায়শ্চিত্ত: করনীয়্মিতি সভাং মভং ॥ শুলুফামিক গোর শুদুকর্জক অপালন-বধ-ব্যব্হা-পদ্র।

শ্তি, তী, বালক, বুলাদি ইহার অংকিক, অথাৎ, গংকিকিক কিলা এবং (১।০) কাহন দান করিবেন। বতাৰ্দ্ধাচয়ণাদ্যসমৰ্থন মংক্ৰিক্কিক্তক-ত্ৰিক্ৰিণাধী-দ্বান-রপং প্ৰায়দ্ভিতঃক্রমীয়মিতি সভাং মতং ॥ একদিশা,বংসরের নান বয়ক বাল⇒িশ্বেরও ঐ দেড় কাহন প্রায় फিডেই হইবে।

গুত্তপনিক-গোৱ-আম্বাক্তক্ত ক্ষাল্নবংধে হংক্ষিক ক্ষিক ফ্ৰাধাপী-দান; আদ্ধণের ছী ও वांकप्रतिकांकि-हेश्र कार्कक क्रिटारन।

শূল্যামিক গোব্বনের বাক্ষাক্তুক অপালনব্ধে, ষ্ব্কিকিদিকিক (ষ্ট্কার্পাপীর পাদ) সার্ক-

कोर्डाभी मांन धरः भूमानिकईक वध श्रेतल , यरशोक श्रीशिकत्वत्र भाम (वातमन - श्रत हे डिकर्ड्याणात्र সহিত) দেড় কাহন দেওয়া ব্যবহার আছে তন্ত্রান দিবে ইনা এবং সর্বত্ত শুদ্রগামিক-ছলে দক্ষিণা ষৎ-किकि इहेर्द ।

শুদীকর্ত শুদ্রস্থামিক-গোবৎসাপানন্ত্র-প্রায়শিত ত্র-ম্যস্থাপ্ত।

শুদুষামিকাপ্রাঞ্জম্মাবস্ত্-গোবৎসাপালননিমিত্তক বধ-জনিত-পাপক্ষাপিজা শুক্রা সেতিকত্ব্যতাক-প্রাঞ্গত্যব্রতপাদ্টেরণাদ্যমুখ্যা যৎকিফিদ্দিক্তিক।ক্রনাইকার্বাপনী—দানরপ: প্রায়ন্দিত: করনীয়মিতি मक्रीर भक्त

बर्टा शीवशीमि खोडिक वाबका।

जाकांने छः अक-श्रकु-निष्णेत्र क्षिंग षांत्रारें अक वार्कि-क्छ्ंक व् ष्ट्राविष वा (शाष्त्र-वध क्षेर्ण, याथांक खार्रिफटाखर विखन आर्रिफ करिराक कहेरन। त्याराज्य (८०थेरा) थाएक थाकिया, क्यानाः क्रक ब्हेत्न, वील्-त्रीवरषडे शृथक् शृथक् शृथ व्योहािम्छ क. इत् ह हरेत ; काइन, जैन्नार्डक एज्र छ। नाहे व्यात्रकाक भीम-व्यामिष्ठ वितः (शाष्त्रभुता दह भी वहराष्ट्रिक वर ष्रदेशन, व्यात्राक्रक विभाम ख्यांनरः क्षेटन, विख्ना भूक्तर এक अग्रु-वांता अक्षेष्ठाता,तक् याक्किक्क रूनन क्षे**रन**.

भी रुगम हहेरम, घृटे या जिरकरे भून अधिकि क विराज करेरन। अष्टाम अध्नामक छ। भूनि भूनि भून क्षित्रा अधिकिक क्रिट हरेरव; व्यवस्त्र इन थाकिरः, व्यक्तिर व्यक्ति शावरवरे किथान क्रिका थी। इफिछ क्रियम, अश्रुतिक अक-थियक्ट-धांत्रा यक् याष्टि--क्र्कं क यक्-भावर यि क्यांनकुछ इत्र, उत्त भामकारत्रत्र विका, क्रथीर, शून स्थातिक क्ट्राव। क्ट्रे नास्कि-कर्त्वक प्रक-स्थात्र बाद्रा जस्त्रानकः नक्

্বছ গোর জ্পালন-ব্ধ-ব্যবস্থাপত্ত।—বান্ধগ্রামিকানাং জনেক গ্রানামপালনাৎ গৃহদাং।দিনিমিত্ত-फिछ्डा विषय थी। फिछ रहेर्य। ष्मभोनमञ्जल वक् श्रीयथ रहेरल्भ, अर्हेन्न, अर्हेन्न, टिक्टमिन-द्रअजिक-भारोक्कशांश विश्व द्रजामग्राको डांक्टब्स हामग्राक्तिमिनोन-मिक्किव्य-हामग्राह्मिक्रिनो দানরপং শার্যশ্চন্তং কর্ণীর্ঘিতি বিদাং মতং। প্রায়ুশ্চিত্ত করিতে হইবে।

यमकामि कर्डक यरध भाम, हेजामि शुरू १५ मझनम रहेरत।

अधिशामिन्दक्-शोदाध हेशब ेक्ष्य, बक्-शोवयन्तरथ भाम, भुमोमि कर्डक दाध खाईक, अजि-

बाक्-डमामि-आयन्डि।

रदम दो पूर्व-तशक त्यांत्र मृष्य एक ता ष्यांत्र एक कतित्त, किया कर्न ता नाकून एक कतिराज, यिक्ति

প্ৰীদাপতা এত কৰিতে হইবে; তদশতে. (৩) কাহন দান করিয়া, ৰং-কিঞ্চদিদ্। দিবে। আহি-क्ट्रैंद , उथीं व्यक्ति-छन-थींशन्ति छ श्रिक च्यांत्र कतिएक ह्हेंद ना धतर प्रधारमत्र भटत मत्रिल दथ-धर्मा के बार्धा मुड्डा मख्य थीं क, खाब के कांन ष्याश्यका कतित्व, जात्तर छर-कांन-गार्धा है, । मर्त्यत्त्व हे ভঙ্গাদি-কারণে যদি ধ্বাদেনর মধ্যে পোর মৃত্যু হয়, তবে পজ্ঞানক্ত সেই পোবধের প্রায়শ্চিন্ত ক্রিডে

व्यायिकन्तः क्यनीयि অফ্টিডজ-ব্যবস্থা-পত্ত :—বিপ্রবামিক-গোত্ত ভিজকনিত-পাপক্ষাধিনা আদ্ধণেন (শ্তেৰ বা) यद कि कि क कि विक कि विकारी नि के का का अ क्षांश्रीकिष्ठ क्रिंडिंड श्रेर्व मा। शिक्षा करिंग- विकास प्रमार्थम

विक्षिक द्वाविष्याक्र न्यांश्रीकि

কাইন দান করিবেন ও তাঁহার আনদেশে ঘ্দি অপের কাহার ছায়া ঐ কাধ্য সমাধা হয়, তবে আন্দেট্য बीका शिं शिं का खामोरन करवन, एर ठा सांत्रीबङ; अनगर्थ, मोर्कमछ (धक्र-मूना (२२।०) बाम्बन आर्षिक खांग्रिक ए (১১।॰) का्र्म छरमर्थ क्रिया। গোভিল ৰলিয়াছেন,গোমাংস-ডক্ষক ল্লেচ্ছাদিকে গোবিজ্ঞা বা বদল করিলে,বাদ্ধনের শিশুচান্দায়ণ-

বত্ৰ জ্পাত পাদে নিধেই চতু ইয়-মূল্য (১১)০) কাহন দান ক্রিবেন; শ্লেরা ধ্ধায়ামিক জ্জান্দ্ত-

পোবধের অত্তেক, অধীৎ শুদ্রবামিক গো ববনাদিকে বিক্রীত হইলে, দার্ককাধাপ্র-দান ও যৎক্রিক-

राब्हानख ।— शामाशम्यामकाविक्षप्रक : शाविक्षप्रक निष्ठभाभक्षप्राधिन। बान्तरक भिष्ठास्राधन-যদিঃকোন আশাণ ময়ং কুমকে ছলে বা শকটে যোজন ক্যাইয়া, বাহন, ক্যান, তবে তাঁহাকে व्याकानकावळवशायक्त दश्यवश्र व्यक्तात (७) एत कार्म मान कत्रिक हरेदा। धिम श्री त्रा-मात्रा म्मिना मिएक क्वेरन। अर्थे त्री यिम यनमानि-कर्ष्क न्य रश, जान कामिएक भीतिता, निरक्तजा क ব্ৰতাশ্যস্মধ্ৰী ব্ৰক্ষিক্ষিক্তিক-স্পাট্দকাদশক্ষিণিণী-দানরূপং প্রায়শ্ভিতং করণীয়মিভি সভাং মতং॥ इत्रमक्टोिक र्याकन-श्रीश्रक्ति। ষ্ধান্ধানিক জন্তানকত-গোবধ-প্ৰায়শ্চিত্ত ক্রিতে হইবে।

भूरवीक कांधा कड़ान रहा, खटन छहात्र विश्वन, प्यथीन, (১২) वांत्र काहन मान कत्रिक हटेटन। ज्यांत्र

छिष्म्धे दृष (वा वदम्खती) वा किनिना (शा हाल, (वा भक्छ) छान्छः वाकिन क्याहेया, व

मियां मित्र जिन्दिनार्थ गर्भ या भित्राष्ट्रम किया मार्थाम रङ्गा-हात्रा या अन्त्रम् उन्मंजीयाज्ञ -কাষীয়ে করিয়াও, যদি গোর প্রাণিনাশ হয় এবং প্রাণ্যক্ষাধ অপদত আমাহাষীয় দেবা ও আলেপান-ध्वरः हमाक्षि वाहत्म हमीनत्त्रीत्म हहेत्तव भाभ हहेत्व मा। भीनत्कत्र बक्ना-तडी। माष्ट्रव भक्षांत्रहिक ख्राम षांद्रा यि थीं द्र थीं विस्था हक, एत भी परहेत ना। दाशा का छित्रार्थ विस्थापि क्राप्त দৈবাৎ বন্ধন-রহিত গো গদি প্রজনিত জায়ি বা ক্পাদিতে পভিত হয়, বা ব্যাঘাদিকর্জক ভক্ষিত रुत, यो शृक्षकुष्णामि-पञ्ज-षात्रा दिन्छै रुत्र, जाव पान क्हेरद ना। प्रधानित्र मामाज्ञ कांघाटक द्यामिष्टक त्या यिन मुक्किट रहेशा भट्ड, भट्ड डेडिशा भीठ दा मार्क भा अयन-भूबंक यशः धीमखरून ७ जनगान किंग्रा मरत, जरव श्र्मरापि-विनहे वनिष्ठा, উर्हारज्व भाग नारे; मिष्ट्रश त्या विनहे हेहीत, क्भ-क्खांत त्माय नाहे। खिलिमिन त्यात्रार मणकामि निवावनार्थ ध्य (गांखान) यि अश्रता त्यांन यारि माथात्क, छत्व आश्रक्तिक क्षित्क हरेत्व। अश्रीर्थनिधिक क्षेत्रा भन्नीथा क्रिक গোবধ-প্রায়শ্চিত্ত-নিষেধ। मक्तान्ड जार्ड्न

পতিত হইয়া, (পানকের রক্ষণামেক্ষ-চেটা-সত্তে) যদি গোর মৃত্যু হয়, ভবে দোষ নাই। পানকের না করিলে, পালক ম্ফিকাপুণ নরকে পভিত হ্ইঃা, মফিকাগণ-ঘারা ভক্ষিত হইবেন, সেই অগ্রিকে ष्ममिष्रीतम् क्रियम् मत्राः ष्मभ,नम-रमात्र इहेर्य।

পঞ্চিৰ ব্যিত্নিৰ্গ ও তৎপ্ৰায় শ্চিত্ত।

कर्छी, व्यायाजक, षाश्याका, षाश्याक्क अ निधिकी, अहे नै । ज्यानात्र कर्का। यदकर्क व्यराशामि-বেতনাদি-দামা প্রত্ত করান বা খতঃপ্রত্ত ব্যক্তিকে মন্ত্রণা দান ও বধোপায়াদি-প্রদর্শন দারা উৎসাহিত ধিনি এ কাথি নিষেধ না করেন, ছিনি অনুমন্তা। হনন হউক, এই ইচ্ছায় থিনি হন্তার কোথে। ক্রেন, ভিনি আংঘোলক। যিনি বধ্য জীবের পলায়ন-পথা রোধ ক্রেন, ভিনি অনুত্রাহক। আংমি পাদন করেন ভিনি দিমিতী। এই আংবাজক-প্তৃতিকে জনশঃ মূল ব্যক্তীর প্রায়ন্দিত্তর পাদ-पाम-मूम खोशिक क विरिट होर ; हेश मूनभामि महामरशाभाषित्र यक। **छ**दष्वचक्के दरसम, ষ্টাগ্যাদির আমাণ-বিষোগ হয়, তিনি কর্তা। যে ব্যক্তি বংগদি-ক্যি-সমাধার জ্বল জাজা ব্যক্তিকে ইহাকে হনন করি, এই প্রকারে ক্ষিত জ্ঞান্ত বাকো বিনি অনুমতি দেন, বা নিবেধে সক্ষ্য হুইগ্নাও, क्रमणः हंखांत्र व्याप्तिरिख्य क्षेष्टेच देशक चान श्रान रहेर्य।

शरवङ्ड-भक्षणकार्मिन्द्र

é গজাদি-ব্যতিরেকে অকারণ জানতঃ যদি অধহত্যা করে, তাবে বয় দান করিবে; গজহত্যায় পাঁক ব্ৰড, জাণাজে (৩) কাহন দান সাধারণতঃ বৃক্-লতাদি গৃহহোচিত কাৰ্দোর জন্ত ছেদন কার্থনে, क्षमग्रध इंट्रेटम, क्षोबान्छा-ज्रक, क्रमनटक (०) काह्म मान। रुत, यक, ग्रंप्र, ट्यांन छ जामनको धर्रः क्कूत्र कि व राथ जित्रोट इ नियम अम्पर्थ (३१०) के हिम मान ; वात्रषात्र वर्ष त्रीकृष्त, ज्यमत्क एका ना भान। अधिमान कुछ मानिवरदा किकिट शामानि मान ७ अधिक्षीन कुछन्नीत-राव जिन यो द्र शामामि क्रिट्र। अञ्जानटः भट्कि अ बानकामित्र भट्कि । ज्ञानमाम देक्तान् देक्तानामि एत्राम थाजापिता-नील-जुर मांन बादः छांत (यर दा अर्षे ए हजारि बक दरीर इय मांन करिरद। बहे मकन यर्था क मारन (5) काहन मान। कृकनामामित्र महस्यत्य धवर शुर्-मक्छे-ख्याप पिलीनिकामि त्रार (3310) काहम णान श्हेरव ना। [ज्यावका कि भन्नि किया व विष्ठ इक्त ना किया विषय किया किया ना

জ্ঞানকুত শূদ্ৰৱধে নৰম মাধিক ব্ৰত, অশক্তে দ্বাদশ-ধেষ্ম্দা (৬৬) কাইন দান করিবে; ৰালকবৃদ্ধাদির আছেক। যুদ্ধাদি অভাজ-ব্ধে চাক্রায়ণ, অভোনতঃ প্যাক এই সকল বধ প্রায়কিত স্বর্ধন্নাধারণ। 8-8

मुख्य थ-व्यायिक्त ।

জ্ঞানকত বিবাহিত। বা অবিবাহিত। বান্দানিরবংধে এক্ষ্ড্যার অর্থেক প্রাথন্ডিভ; জ্পান্তে নবতি-केरिन मोन ; ज्यकान छः मर्ने व चार्षक, मर्ने व दोनक इक्षामित प्यार्षक ७ प्रक छ छत्र धर्म था कित्न, यो (वस्मून) (२१०) कार्म छेरमर्ग। भृमुद्धी-दाव धक्राधिक-दाङ, ष्रभाष्ट पथ्मभ-१४स्मून) (८८)

প্ৰীয়শ্চিত্ত্তর দিশুণ প্ৰায়শ্চিত ক্রিতে হইবে।

উত্তম্বণ-কর্তৃক অধ্যম্বণ-শ্রীব্যে জানিবে, উত্তম্বণ্ শ্রী-প্র্ভিকে অধ্যম্বণি ব্য ক্রিলে, যথোক্ত

धकीमण वरमरत्रत्र मूरन दर्षेत्र दानकामित्र भाम-थात्रान्डि धरे मक्न खार्जान्डस मदबी-खोदर किया

বতাদ্যমাথেন মংকিঞিদাদিণক-সঞ্জাধিক-দ্শিতক্ষিণিজন-মুক্ত ক্ৰিয়াৰিজ বাশ্লীবধ-প্ৰায়শিতভ-ব্যব্যাপত !---সৃত্ৎ-জান্তত-বাশ্লীবধজনিত-পাপশ্লয়ধিনা বাশ্লণেন যথোক विमार मक्ता ব্যাভিচারিশ-বধ-প্রায়ন্তিভ ।—একবার উত্তম্বর্ণ বা স্বর্ণবাভিচারত রাক্ষানৈ জানতঃ বধ করিলে, मिष्ट्रमिष्ट-ज्ज-ज्ञण्ड-ज्ञण्ड शक्षमण-८४ज्यूमा (८८) काश्म मांन धर्र (८८) काश्म मिक्ना। शूरक्षाङ

अन्याञ्च-क्ष्मकातिने वा त्यक्तातिने नात्रीत्क जाग कतित्व, वर कतित्वना। मिछीकता-मःबरह গুকুম্মুগু ঘটিলে, জজানতঃ সুস্ৎস্তে এবং জানতঃ ব্যাসে পাতিত্য হছবে। পতিত না হুইলেও, প্র-बाबुषां या मन्त्री वा विष्यात्रन-वा जिन्ना किया अकरात अधमतन-माना बीरार यन बोर्गाना ह बधा,--शृत्वाक छकात्र बाम्मन-वाय ध्वीमिषिक कीनमान, मृष्टीवाय (प्रमान, छोन कुछ वाय मन्त्रेज] विश्व लाश्रिष्ठ ; त्यर्शिक ष्रज्ञात्व ज्याता विरव। ठाशानानि-शेनवर्गन्त्रीका-बीबरक প্রায়ণ্ডিন্ত নাই; কারণ, বৃহস্পতি থাবি,বলিয়াছেন, এরণ ল্লীকে ভ্যাণ করিবে বা বধ করিবে। হারিত छेळ क्हेशाह, नीठवर्भश्या श्रीय यनि छेन्निछि-बाता गर्ड ना क्हेग्रा थारक, ভবে व्याग्रिक्छ-बाता শুষ হটতে পারে, মেচেৎ নহে। ধীনবর্ণোপভুজা পভিতা স্ত্রীয় জ্ঞান্তত সহবাদে, মদ্যঃ-পাতিত্য হয়, অঞানতঃ ছুই বারে পাভিত্য। অশীভি-রন্ধিনা-প্রিমিত-মণ্-নের্থানি-ছারা পতিতা মন্ত্রী-গমনে কিয়া ঐ প্রকারে পডিড ব্যক্তির মহিত ঘোলি-সম্ম বা ঘাজন অধ্যাপন কিয়া এক্ত শয়নাদি ঘারা व्नियार्ष्ट्रम, উপপত্তি-पाता शर्दिन किया अध्यत्य-मःग्रज्ञा, निमा या स्टर्शामिनी, भाष्यग्रमनामच्डा, अनोत्र मुखा-राध उत्यक्तक - यक समीत्क एषवृष्य, भाजीत्व (७) काश्म मीन अ गर्किशिक्षिक्षिता मित দ্ধি গম্নাদিক্ত্রপ ক্কিলাস্ক বাক্তির স্হিত ও স্থৎসর-সহ্বাদে ভক্ত্রাভা পাঙি হইয়া পাকে। शह्यप-व्याजिक छ।

गर्डनार शुक्रम या क्षी य निया कामितन, त्य यत्वत गर्डन ११६व, एष्ट्रां प्रमाधिक शुक्रम या क्षी-राधक सांब्रिक क्रिया ; जी किया शुक्र बतिया सानित्र ना भावित्न, एषत्नीक भूष्य-स्रोत्रिक्त क्रियत

চাণ্ডাল-এভতির মন্নাদি-ভক্ষণ-প্রায়ন্ডিত +। धानः क्रमारीम् व्यारम्भी स-न्यत्यक क्रमार्थीक भूष्य-व्योग्राण्डक क्रिएक रहेरन्।

छोलांब ना भूमांत्र कांटांटक, बत्न, कांटा हरूर्ग जार्य मुम्बू क छा-शकतान (७२ श्रीय) त्रवान

रहेग्छ। धक मग्रा धक छेभक्त धकामान विषय (छ।सन, छोश्टिक धकवात्र (छोसन त्राम

अहें जार व अधि-वामि-जक्ष तक भूत भूत भाग मिल जा। भाग नमरक ब पर्व निषम । यह विमास महि • अभिन्धत दाकामनीत्म (दाएन-मित-न्त्रान कड्कान, वे काटन श्रीनित्त नाम बाहताने। वाहतानी-नाय आप्रनिष्टाधत

ब्हाविका रूखकात कारन आई ति, अहेकारम भूत्रकान्तरम्भीतिका जीत नर्भ थाकियात मखन बाहरू।

+ 'आंक'-माम कामा अवर 'जिस'-माम निम्ज : युकार भाषमका-माथमकु हारा मिनिक त (इनक्त कार्य) हाशाक 'आयोक्ष, बरन !

অভ্যাব্যায়ী বা অভ্য জাতি বলে। (কেহ কেহ ইং।দিগকে অভ্যাজও ফলেন।) ইং।দিগের আন বান্ধণেরা জ্ল কিয়াজামাম (ততুনাদি)-ভোজনে জানতঃ ও অভ্যানতঃ প্লাম-ভোজনের পাদ-শোয়াশ্চন্ত। ষ্ম্ব্লিয়াছেন, মন্য্যুদ্গের চুফ্তি লব্লেক আলায় ক্রিয়া অবস্থান করে; ফ্তরণ্ পাণিঠের অন্ন-আমেদি যদি মুখে দিয়াত, পলাধঃক্রণ না হইয়া থাকে, তাহা হইলে জ্ঞানতঃ ও জ্ঞজানতঃ এই छकर्षामाऽय ভक्कन-क्षार्राम्फरखत अर्थक क्षोत्रीफिछ श्केरन। मर्नव केष्क्रिये-सन्।-एकोकरम विक्ष প্রায়ন্তিত। তছার (চিপিটকাদি)-ভোজনে স্প্র প্রার-ভোজনের অধ্যুক্ত প্রায়ন্তিত এবং স্ধারণতঃ আক্ষণের প্রায়সিতত দেখান হ্টবে, সর্পত্ত অভজ্যতকণে ক্তিয় ও বৈশ্র পাদ-পাদ্নান প্রায়ন্ডিন্ত করিবে, শুস্তাগণ ব্রান্ধণের বিহিত প্রায়শ্চিত্তের পাদ-প্রায়শ্চিত করিবে। স্ত্রী, বালক, রোগী ও ভোজানে পাপ-ভোজান হয়। চাঙাল, খপচ, মেণর, মুর্করাদ, মেচ, যবন প্রভৃতি জাতিকে কাত্যায়ন বুলিয়াছেন, আক্ষুণেরা প্রতিদিন ঘুই বার ভোজন ক্রিকে পায়েন। দিবাভোজন (ছুই প্ৰহেৰের প্ৰা) আছাই প্ৰহর বেলার মধ্যে এবং রাজি ভোজন (চারি দশুরাজির পর) দেড় প্রহর সুদিত্তর মধ্যে শুশক্ত। তৎপত্তে মহানিশাঃ মহানিশায় ভোজন করা অবৈধ।] বুদ্ধ যু যু-বর্ণবিহিত আগ্রন্দিজ্বে অক্ষেক প্রায়শ্চিত করিবে।

8

কাইন উৎসৰ্গ ক্রিবে। ঐকুপ বলাৎকার-ছারা অগুপ্ৎকানে অজ্ঞানতঃ জন্ন-ভোকনাস্তর হৃদি বমি ক্রিয়া ড্লিয়া কেলে, ভবে থেল্বয়, অশতে (৬) কাংন দান ক্রিবে। এল্লে যদি ঐদ্পে উচ্ছিই কর ভোজন কয়িয়া ঐন্তপ বমি ছাগা উদ্দীয়ণ করে, তবে পরাক ত্ত, জাশজে (১৫) কাহন দান করিবে। লগাৎকার-স্থাস, জামি এই ক্লাধ্য করিতেছি, এই অংকার বিষয়-জ্ঞান থাকায়, অংজানতঃ জণেকা

জ্ঞানতঃ একবার ভোজন ক্রিলে, ভাহাদের চজামণ ক্রিতে হ্ইবে; জজানতঃ তথ্যুকুছে এত, অসমাথে পাদোন-ধেষ্ট চুতুইঃ-মূল্য (১১।০) কাগ্ন দান করিবে। চাণ্ডানাদির জন্ম কেহ যদি বল-পূর্ধক ভোজন গায়। আমায় ভোলন ক্রিনে, আজাপতোর অক্ষেক বিয়াত উপবাস আয়দ্দিত, অশভে (১॥०) ক্রায় তবে প্রাক-ব্রচ, আশতেক প্লধের মূল্য (১৫) কাহন উৎমর্গ করিবে। জৈ আকোর বলাৎকার

ৰ্যবৃত্যাপত ।—সকৃত্তভানকত চাঙাশীমভোজনজনিত-পাপক্ষাপিন। আদাপেন চান্দায়ণ বৃত্যদাস্ম-ধেন যুম্জি ছিছাছিল।ক-সাৰ্ঘাবিংশজি-কায়াপুৰীদানত্ৰপং প্ৰায় ভিন্তং ক্ষুবীয়ামতি সভাং মজং। শাপাধিক্য-বশতঃ প্রায়ণ্ডিষ্কে প্রাধিক্য স্ক্রাও উচিত।

এই সকল চাঙালায়-ভোজনাদি উপপাত্ক; স্তরাং, ইহার জড়াদে, অধীৎ, বারসার ভোজনে

চালায়গাদি আয়িদিচজ্যে আয়ুজি ক্রিতে হইবে। চাণ্ডানাদির অম জজানতঃ আটচনিশ বার ভোজনে

वात्रिक ना जित्र क (काम दिनिक कर्ष विविकाती मा था किया, भारकात मतक छात्री इण्डादक, भो छिछ। बत्ता। पत्रक हेट्टेड भीटत; किह, छाहात्र भाकिछा बांत्रबात हम मा। हैहात्र कांत्रव, त्वांब हम त्य, वांबांत्र, त्य मक्का कटवत बर्णड শীসক্ষরণ (আভাতারক বাতু-ক্ষীলন-ক্স) ৩ক্তর সংমধে সদাঃ-পাডিত। হইয়া থাকে। শীঘই হউক বা বিনবেষ্ট হউক, धोष्रिक (थक्रान (एक्) क्रिन, एक ह्हेरन। পिউড नाष्टि भाषिष्णक्रमक नष् इक्षि क्रिन, छाहात मामाध्रकात र्द्रेश, भाष्टिम करम, किछीत्र भारत एसक्छत्नत कर्णान-दर्ड भूनः जूनकीत भाष्टिकात समस्य । भाष्टि नाक्षित महिक मखीयन, माण्यामंत्र, मध्य, द्वभट्टमान, वार्षिक-त्यातम, व्यक्तिकत मीम-धह्व अवः निषीम-धह्दन छ स्वयाः, वार्यमास्वय ह्हेश পাভিত্য *। পাভিছেটর প্রারশিভ মহাপাতকের প্রারশিত্তর ভার ধ্য়দশ্বাধিক বত, অশক্তে একশ্চ শাশী থেই-মুল্য (৫৪.) কাহন দান ক্রিডে হুইবে । জ্ঞানতঃ আটচয়িশ বারের জ্বিক ভোজন-সুলেও এই পাভিত্য-আয়ণিতভই করিতে ছইবেঃ (কারণ,বে পাপই হউক, জভাসি ঘায়া মহাপাতকেয় জুলাভা मिष्डिमिरणेड एक्यन मग्ना-डेपामना क्याप्त ध्वर, हतिनमि-भद्रनामिराङ चविकात्र चार्छ। पष्डिङम माधात्रभक्तः सर्गपोष्डरक्त रीटक, ऐसी जाज्यी नटक, विख्यान मथाडः ; काइन, तब्जुल त्नाटकर मरमरर्थ थाका थात्र, मात्रीत्रक-छाड़िडमास्थित्र मरक्रम-छटन উভয়ের দৌক্ষণ শক্রাফিছ হ্ট্যা ক্রেন দায়ঞ্জ করিছে। তেটা করে; এই জ্ঞা ক্রাজাতির অন্তোকন-প্রত্তি বণেক।

मशुरपात्रा भक्त-लष्-भाभ-नात्रा' ज्राम 'बादानां जि द्यां अ स्टेश थाटक। समम, मशकार्षात्रा ज्यमः चाजात धरक्ष स्टेश,

দিদ স্বৰ্যা প্ৰাপ্তি হয়, ডক্ষণই কৰ্ম-দোৰে পাডিতা জন্ম।

প্রাধি হইলে, তন্ততাহেতুক এক প্রায়শ্চিইই হইবে)। জানতঃ চিকাশ বার ভোজনে পাতিত্য এবং আটে क्रिएम, भीम माम क्रेट्र ; कि छ, दावराता + क्रेट अराह्र मा,दिना मा,द्वा मा, त्र मा, मान्य माएक । धरेक्र मसीब है, ष्यंषीप, खानकृত नारन मश्नागहरूत्र विश्व थात्रिक हाई हहेरम, राथाक धात्रिक कत्रिति ह, চলিশবার ভোদনে সাম্য অর্থাৎ ভজ্ঞাতিত প্রাপ্তি ধ্ট্বে। এই সাম্য-স্থলে মহাপাউকের ধিশুণ প্রায়দিচন্ত

অন্তাজাতির অন্ন-ভোকন-প্রায়শ্চিক।

बावहाँका हरेरव ना ।

इखक, ध्यकांत, (भौष्कि, मो, वक्र, किर्ड, (यम डिस, काणानिक, रेमन्त्रक, एडाय हेडा़ामि जाडितक

স্তরের বিকৃতি হয় না। বেমন, দপ-বিধে রক্ত জনকং হ্ইয়া গোলেও, যদি মেরদতে বামজিকাদি-মন্তাভায়রে রক্ত থাকে, 🕴 ব্ৰহ্যি না হ্ইবার কারণ এইকণ বোধ হয় যে, গুক্তর পাপ-যারা পথকোযাজক নেহের স্থাব্যক-ভ্রান-পায়ন্ত্য दिक्छ हरेता, एक्कांकिए (यर्वार, ठांथानानि वरक्षीनिषकातिक) नाच र उतात, सीत काजीत वासिक अज्ञि प्राम थात्र হুইয়া ধার; স্তরাং, পায় শিডোদি চেটা-লা ু আরি আবিকল পূর্ব ভাব লাভ হয় না; কিন্তু, অজানতঃ পাপে ফুল আবরণ অষ্ট গাতুর ও ওজঃ গাতুর পরিণাম রক্ষপোর জাত্ত ধ্বংন হইলা, পাতিতা জন্ম; কিছ, বিজানময়-কোর প্রভৃতি সূক্ষ उर्व छथने छ छेष मिरल, शूनक्कीयन लां इर्घेष्ठ शीरत; किछ, मीतक हरेरल, बात कीयन मक्षात रह मा। 'अनुमुख बाल। हेड्डिनिम्ब चन ब्राय क्षा कर बहु मकल खड़ारकत श्रात्रिक जन, कार्यमानी बोक्डा जिस,

প্রায়ুদ্ধিতের অংকিক প্রায়ুদ্ধিত ব্ইবে। দাধারণতঃ দংশ্যের অর ভোদনে জানতঃ প্রালাপতা। শুরার-ं 🛨 अविक्ति, द्के हैं, ছাগ, क्कून, बরহি ও বিহ্লম, এই সকল যদি জীবিকার জজ তামিগেরা গোষণ করেন, তরে क्षांत्रिकुछ क्षित्रक्षक, रात्र्वादी वृद्दित मी। मर्त्तव वन भाग क जामात्र- जावत्न भाग धरः कषात्र- जावत् বাহার গুড়ে উপপতি প্রমাণমন করে, ভাহার ক্রম, আতি নুশংস ব্যক্তির অন ও স্তিকাম বাস্থাবা। একবাং জ্ঞানতঃ জোজন ক্রিলে, প্রাজাপতাগ্ত, স্পত্তে ধের্ষরের মূলা (৬) কাহন দান ক্রিবেন। নকাইবার ভক্তণে পাতিতা-তেতুক মহাপাতক-থারশিচরের ভাষ (৫৪০) কাহন দান ক্রিডে হইবে। জানতঃ একবার ভোজনে প্রাকাপড়া-চতুষ্টর, অশক্তে (১২) কাহন দান; জানতঃপ্রতালিণ বার ভোগনে পাভিতা, নবভিবার ভোজনে উজ্জাতিদ-পাপ্তি হটবে। এছলে মহাপাতক-আয়শিচতের পিজণ ল্ডেক প্রায়শ্চিত্র। শুস্তবিহার সর্বাত্ত পাদ-প্রায়শ্চিত। খ্রীলোক ও বালকাদির সর্বাত্তাক্ত ভোলনে बक्या करका हाति हत्र। मृत, षाच धदः कुक्त ३, धहे नकन की विकाब कन्न ति त्योत्र करते, न्त्रक श्रृट्ट, नर्टार विरमय क्षा नरह ।

86

তিহার অন এবং প্রী-উপদীনী ব্যক্তির অনু, শত্তর অনু অবীরার অনু ও সংশ্বরহীন নরমালীর অনু অভক্ষ ट्रांत वीत्रिक्ड षाणाम-ष्याणाम-(जाम व्याकामणामि वित्याय रहेत्व। यार्थिक राज्ञि मर्साम् भर्ता ও পরগৃহে বাস ত্যাগ করিবেন, জ্যাবন্ধায় পরাশ্র-ভোজন বিশেষ নিষিদ্ধ।

ব্যঞ্জন মধু, শাক ও দ্ধিদুল্লাদি পৰা স্তৰ্য বদিংকেছ, হত্তে ক্ৰিয়া, কিখা লোহ-পাত্ৰে ক্ৰিয়া, পৰিবেশন জ্ব বৃক্তপত্ৰ কিমা জত কোন, পাত্ৰ ব্যবধান-ব্যতীত ঘূত-তৈলাদি সেহস্তব্য, পালীয়দ্বা, নবৰ-করেন, ভবে উহা জে নতঃ ভোগন, করিলে,।মাজপন-বত, অশক্তে (১) কাগন দান করিতে হইবে এবং দাতাও নরক্ষামী হ্টবেন। এক হন্ত- দারা প্রদত্ত এব্য ভোজন করাও দোষ্দনক।

বান্ধণ অজ্ঞানতঃ একবার চাণ্ডালাদি শ্রীগ্রম ক্রিলে, পভিত ইইবেন, জ্ঞানতঃ একবার স্হবাসেই গাদশ-নারিক এক, ইহা পূর্কে বলিয়াছিত্র বুলের পাদ-শারুদিতত্ত। সর্বত্ত অভিগমে যে বর্ণের পুক্রের যে एक्वाहित क्रीक्ष हहेरवन । अष्टत्न विष्यं क्षीत्रन्छि क्षित्नव, बात्रवार्या हहेरवन न।। भाष्डिङा-क्षात्रन्छि खींशिक्छ विश्रोन क्हेगाष्ट, रूषत्व ब्रीके छ: त्यहे खांत्रिक, जर्षार, ठाधान खींगगतन शृक्षक रह প্ৰায়দিও, চাঙাল নংসৰ্শ দূৰিত। নাৱীয়ও 'সেই প্ৰায়দিও স্তী ব্ৰিয়া এথানে অস্থত্ত হুইবে ন।। जिलामि बीनमन-बार्शक्छ।

खाश्रन्डिख बार्डे। धक्रण बैंदक है पानिष्टिश्व शक्रांत्राबई छत्रा-इन।

অঞ্চানতঃএকবার রজকাদি স্ত্রীগমনাকুরিলে,বাশাণকে চন্দ্রাণ করিতে হইবে ও জ্ঞানতঃ চন্দ্রাগ-ধ্র ज्लाक-बीगमन-सार्गिक्ड।

ক্ষিবেনঃ৷ অজানত: চড়্রিংশতি বার গমনে পাতিতা তবং জানত: ঘাদশ বারংগমনে পাতিতা ও

क्रांनङ: ठष्ट्र सिः भेडि दांत्र शंगरम मागा, सर्थार, जन्माजिष-स्थालि हहेरत। अश्ल विश्व सार्वान्त क्रियान ह

अमुजानिकात रामिन कतिया, ठाउनि घरमामि रक्नि अञ्जामि । यस्त्राम् অজানতঃ চাণাণাদির সহিত বাস। वावश्रम् हहरव ना। भ्रायत्र भाम-त्यात्रिक्छ।

यर्था कामिएंड मात्रिरम, जरक्तार जोश्रं कार्ज्या, वाक्रांत्रा करमर्बिमक भीश्रं कर्त्र घन ष्णि विख्यास्त्रेषु अत्र- (जावन ७ वनामि पान खात्रिक्छ। চন্দ্ৰায়ণ ক্ষিবেন এবং শ্ৰেকা প্ৰীকাপত্য ক্ৰিবে।

দাধারণতঃ মংসামিক অর-ভোজনে জানতঃ ও অজানতঃ যে প্রামন্তির বিহিত হইগাছে, ডৎশ্পুটার-

ভোলনে (ভদামার-ভোজনের অার) তাহার পাদ-আার্শিনত বাবহাণব-সংধাহকার-পাড্ডির এই মত। শৃক্ষবচনেও উক্ত হ্টয়াছে, কৰ্পতিত ব্যক্তিয় চাণোলাদি জ্জাজেয়, রজ্যলায়, অন্বধূত্মতাব্নস্থী राक्तिय, कुनी कृषि कुनवी टाक्टि दिशंश विनिष्टै राक्तित धरा कामधा (कर्षार, नभूः माकत रा धनन-মরগাশোট-বিশিষ্ট প্রভৃতি অপ্বিত্ত) ব্যক্তির সংস্ট জন্ত ভারনেত আরালত প্রাক্তির

শ্ৰীয়শিচন। স্বজ্ঞানতঃ চাঞাশাদির ভাওে ক্রিয়া জ্ঞাপান ক্রিলে, (১৪•) কাহন দান ক্রিবে। চাঙালাদির শশ্ট অবল পানে দাহ্সাধা সাঅপন-বৃত, অপশক্তে এক কাছন দান অধানতঃ দিগুণ (अष्ट-यदन धरः हो छोनामित्र मःम्म् है युद्ध भाग केशे एति खनक। व्याकाभकाष्ट्र क्रिंट रहेटर ।

গ্ৰহণ ক্ৰিলে, ডৎ ডং-কাভিব অনুন্ত্ৰিক্ষেত্ৰ যে প্ৰায়ণিত জ্ঞানতঃ, ও অজ্ঞানতঃ বামণ্ডে সেই সেই उक्कांकि खंडाएवर निकिट-१ हेर्ड क्यांनडः धक्रांत्र व्यिखार् वांचांपिडा- ठकुरेत थ ष्रकानडः वांबांपडा-हिंछानारि-कर्दक यर्गालिक-क--वाक्राम बैरमनी-कृत य सरा, जाहा थिन्यह, वर्षार बांकात्रमा योशिमिक क्रिए क्रेरि, व्यक्षि आंग्रजः धक्रीय व्यक्तियार् ठामार्थ क बाळान्जः उश्वक्र । रेक्रबं

চাঙালাদির প্রতিগ্রহ-প্রায়ন্ডিত্ত।

धार्ड विराम मिकिट शाकांत्र जान्त्र काजिम क्रिक्टिजिमरागत्र निक्छे स्ट्रिक ष्मयाधिक सर्गा बाहर (काय भग्न किवार हरेरन्। वह भीखन कांकित निक्ते स्टेरन ना क्षिण्याभानी जक्तामित निक्तेस्टेरन প্রতিগ্রহ বা য়াজন অধ্যাপন প্রত্তি কার্য দারা লক যে দ্ব্য তাহা ধর্ম কার্য্যোপ্যোগী নছে, ৰাধাৎ নৱক জনক হইয়া থাকে। কুলটা, কীব এবং পতিত ব্যক্তি ভিন্ন অনুন গৃক্ষাধিত ব্যক্তির নিক্ট रस्टिक ष्मािक स्रा बार करा यात्र। तक तक रासम, क्नाो मीत ७ किर पिक भिक्त,

পোষ্ট্ৰম কিছা অৰ হক্তি উটু বা (শশ্কাদি ভক্ষ্য প্ৰমথি ব্যতীত) পঞ্চাধিদিগের মাংস, মাংস-অঞ্চানতঃ একরার পোমাণে তক্ষণ ক্রিলে, প্রাকাণতা, বার্ষার ভোকনে প্রত্যেক বারে ভোকী कीरवड मांश e बायाककृष्ट मांश्म क्षेष्रकान ভোকন क्रिसन, मध्यत्र ब्रज, जमांक भक्षम প্রাজাপজ্যের ভাষুতি ক্রিবে, কানতঃ বার্ষার ভক্তে চাল্লায়ণ, দক্তিণা(৬)কাহন দিবে। (अब् म्ला) (४८.) कारन छरमर्ग कत्रित । (स. म. म.) MONTO COMPANIES I मार्छ। ! [रेषात्र विदश्जम विवद्रश थम जारश मानविधिष्ठ एम्थ ।]

्रियांक, त्रत्र्व, शीक्द, ह्वांक (शोधांतर्कीष्ट), बांगाङ्केटे ध बांगाणुक्त कानडः एकत्

किंगी, मुख ७ ७क छक्ता खान छ। जाता है। खान वर भेश वर्ष घिक ७ बकामण वर्षात्र नान वरक ठांखांत्रव अवर भक्षांनडः उत्तकक् वरु भगत्क पारमान (वह्राठ्ड्रेय मुना (३३।० काइन) मान।

ध्वरः कानशाम मित्मक श्रवेष्ठ भारत, जिनमम मिष्ठं मा भातित्व, जर्भान्नवर्ष्ठ ठास्तामन कत्रिष्ठ এই পোমাংস অছিতি উল্লেখিত অভক্ষ্য স্তব্য কমানতঃ কিয়া অকানতঃ ভোৰনে ব্যা ক্ষিত अधिमिक्तां क वामापत्र भूमक जिनमान मिछ रहेरत। अहे जिनमान मिक्सोयनामि अकारम বালককুৰ্ক অঞ্চানতঃ বিচাদি ভোকনে প্ৰাৰাপত। প্ৰায়ণ্ডিত ও জ্ঞানতঃ বিগুণ।

स्रम, हक्कवांक, मात्रम, छात्र, शक्षम, तक, कांक ७ क्यांकिमामि भिक्मारम खामछ: (कांकरम बाका-नुष्म क्रुणीमिक कल या व्हाज्जि कारणंड नुरुन इष्टिकल भारन ध्वरः थे मभार कारणंड बर्श नव-व्यक्षण (त्रा यश्व यो श्रीमिष्ठ घ्र ष्र ष्मकानणः नीत्न नक्ष्य माज नान कत्रिम, धकार डिनदान निछा। मंत्र के मध, छक्ति अ कर्मक क्ष्यान अदः त्रवयनामान्येष्ठ कन्छ म्मिमितत्र मार्श नात्राचिछ बागाएक (10) ब्यांटे नान मान कत्रिट इहेरत । **etta** -

আৰক্ষানতঃ শবদ্বিত ক্পাদির জলপানে, দেড় কাংম, এছনে পটা শবদ্বিত হইলে, তিন কাংন

अधिकामामि अभमम छिथिछ भ्रमम देता षाष्टका, रेम्दार छक्तन थात्रिक व्यावानिकात नर्मव मध्यम्। खरा छम्दर्भत्र छन्नदम् (शनाभःकत्रन ना द्वेदन्) मद्भक् व्यात्रिक्ति धरः বিধ্বায় একাদশীতে ভালাদি ভোলনে চাজায়ণ, কেহ বলেন, আলাপতা কয়া করি। দেবতা বাণিভ্যোককে না দিয়া, ডক্ষ্যাসেও হুথা ভোলনে প্ৰাকাণতা, কিন্তু, বোগিদিগের পক্ষে দোব नाहे। बाश्यकाशी याक्तित त्यांत कन गारन ভोकन चायक हहेता, बाचत्यंत अञ्चलकाता जिन्म नित्य छौर्षाश्रुत्वानिष क्यां छि। ७। छोत्म मदीव नाम । १। नाजित्कत्न मुर्का। ৮। घनावृत्वामारम्हना । ३। শাদ। বে এবয় জৌজনে বে দোব, তাহা কমে নিথিতেছি, বথা—কুমাণ্ড ডক্ষণে অৰহানি।১। বৃহতী ভক্তে হয়িসাম মনুস্থ ইয় না ৮২। পটোলে বহুশক্ত বুদ্ধি। ৩। মূলকে ধনহানি। ৪। বিধে কলছ। ৫। कनशै (शायमाग्रमानम्। ১०। मिथी (मीप) भागकरी। ১১। शृङ्कि। (भ्रेंहेमोक) बन्धपाङ्कि। १२। বার্ডাকু জুভ্জানিজনক। ১৩এ দাধকুলাই চিরব্রোগজনক। ১৪। মাংস মহাপাণ কর। ১৫ ৪ मान जबर मध्या मंत्रम्तिक हहेरम, উভয়ত: षिक्षन खाइन्छि। क्षित्रा, शुरू कार्यशत स्थातिष्ठि क्रियत ।

জ্ঞজন্মতঃ ভোকান করিয়া, বমি বারাকীল জুলিয়া কেলিলেও পাপের অনেক লাহব হয়। শূড-मिरमन जानका जन्मपृष्टान आम मन्त्र भाम आमिन्छ।

जिनवी उत्क्रमम स्यात्रिक ।

जाक्यामित गटकान्यीक षण यकातीप्रकर्डक त्यां नगुनात हित क्हेंत्न, षण गटकान्यी

বেন এবং শেক্ষায় মজোপবীতচ্ছেদক শ্দের প্রাকাণতা প্রার্শিতন, অজ্ঞানতঃ অধিক (১৯০) ৫২ পায়িক।, উভিলেই মনজ্ঞাপ ক্রিয়া, তিন বার প্রাণায়াম পূর্পক একাছ উপবাস ক্রিবেন। শ্রু-কৰ্ত্তক যজেগাপুৰীত হিল্ল হুবলে, আমূলণ অধীধিক শতবায় গায়তী জগ কয়িয়া, একাছ উপবাস করি-কাহ্ম। চাঞাল্মা রেক্ষাদিকর্ক কিয়া রল্কাণি অভাজকর্ত্ক যজোপনীত ছিন হইনে, অতিকৃচ্ছ विछ, ष्मारक (श्रम्भव्राष्ट्रमा) (७) कार्य मान कतिएड हरेरत।

क्यूंड याने बाह्यका

চাতাৰ ক্লেফ্ यनगामि षाष्ट्राक, त्रक्तमा, পতিত, षात्मोऽतिषिष्टे ताकि, णयमःण्युडे ताकि, কুকুর, কুকুট, প্রাযাশুকর ইহাদিগকে স্পর্শ করিনে, বা মহুষ্যের কাঁচা জাস্থ ও বিঠাদি, কিয়া জভক্ষা পঞ্চ-निथ कीरवज्ञ भव मरण्गुडे रहेत्त, भिरत्रोयक्तनश्रत्क भित्रान वांग मरु मान कतिरल, एक स्टेरत। छनानतः ग्वामि ज्यान संवित्त, मार्यत भी बक्ट मुठ एडाक्न कवा खावश्रक, उभवाम कवित् हरेर ना। हहेत्न, श्रुष्ड भाग खाकानाम शुक्तक बद्धकांग क्षित्रा, ज्ञाष्मम क्षित्न, हहेत्क भारत। खात्र मर्त्युखा बी, রোগ অবফ্যার শুষ্টাশুটি দোব নাই। কোন কারণে আপনাকে সামান্ত অভাচি বলিয়া লোধ डेंदगरव, डीरर्व, विदारह, शाज्ञाकारत, विभान भगरत, युक्तांनि बात्रा या जात्रमार बात्रा विश्वय नगरत दालक, इंक ७ द्राणिक्षिरात यन त्योह। [शतमाक ७ ज्वनी म्यृहे बन ष्रि गिवबरात्रक]।

षण्डि व्यवश्रुष व्यवश्रिष्ट ।

ভোকন क्षिया, भूगांपि टोक्नोजन ना कता भरी छ डिछ्डे खदय। धरे खदकात खख्यांनडः धक-वात्र मस्मा-माकि-मान महिता, क्षांकानका। माक्षारम्ह, सर्वार कायम वान त्करन मृत्य मित्राह, পাদ-আধিকীজনত, জনানতঃ সর্বতা দিওব। মৃত্তাগ়গ করিয়া, জালশোচ না হ্ইতে ধদি শব রজায়লা বা জ্ঞাকু-সংক্ৰাৰ্থটে, তবে একাই উপবাস, অসম্ধে (३०) পণ দান। ঐত্নপ বিঠাত্যাগ-ঘারা অভিচি मगरत मरम्मारम् (३) काक्न, जेतन रेपश्न-षात्रा ष्मकि आवश्याय मरम्मारम् (১॥०) काक्न अवः कत-भीन-कत्रन-डिमग्रक् करत नाहे, धक् व्यवश्रा किया जातात-(ভोषन-काल অভ্যজাদি-ज्यां घिष्ण, श्रावाणका

প্রবিশ্য ঐরণ কশর্ম ঘটিলে, (২) কাহন উৎদর্গ ক্রিডে হ্ইবে, জানতঃ দর্গত বিগুণ। শুলুদিগের मर्जज भाम, खी बाजक-कुक्षामित ष्यद्भिक ध्वरः ध्वकामण वरमहत्र न्।न-वष्ठक वानरकत्र भाम व्योत्रक्षि क्रिएक क्टेर्य।

মাত ভোজন করিয়া নক্ত করিবে। উচ্ছিট শ্রুকৃত্ত কিয়া হুনুর-কত্ত্ব যদি উচ্ছিট আন্দণ সংস্পৃষ্ট क त्रिया, बाट्य (ভाष्टन क ब्रिटन । ज्यायुष्टि हे वाजि-कईक डोक्छि नवन-ज्यान परिता, रख-णाम क्ष्यकान न कतिया आष्ट्रमन कतिरतम, धश्रतन डिच्डि वाक्तित त्याव नाहै। डिच्डिड अथम वर्न-कर्डक डिज्डिड डिडम वर्न উচ্ছিট স্বণ-কর্তক উচ্ছিট স্বণ আজ্ঞানতঃ স্পৃষ্ট হুইলে, উভয়ে স্থান করিবে, জলানতঃ রাতে মুত-रम, ভাব এकार उनदाम कतित्वम। अश्व महाकि भूत-न्याम विद्या मक, प्रवीद मित्म जेनदाम

विरक्षित ज्ञांकम-नेगरत मिन क्यांकिष्टे नवर्गकार्या है, उरत् उरक्षां आप जात कारता इस्त-भूष विकालम-पूर्यक बागायाम कतिया, क्षत्र इट्टाबन, षाज्जानाडः त्मरे षाम ভোজন कतिरस, भक्षाया-गाज শীন করিয়া, একাহ উপবাস করিবেন এবং জ্ঞানতঃ ভোজনে বৃষ্কুজ-বৃত্, অশক্তে (১) এক কাংন দান **ক্রিবেন**া ঐকালে পিতামাতা প্রভৃতি শুক লোক বা ভার্গা। সংক্রাশে দোর নাই।

म्मर्ग घिटन, ज्यस्य वर्ग दक्ष्यम ज्ञीम क्रित्र ।

अष्ट्रमाराज शुर्म तक्षमान-कर्डक मवर्ग चाम त्रममा म्मृष्ट महरान, अष्ट्रमाराज पत परंग्राजा শান ক্রিয়া, একাছ উপবাস ক্রিবে, জাজ্ঞানতঃ অত্নেক প্রায়ন্তিত নক্ত তত। এরণ শ্রাম্পর্শে यङ् राख छैनदाम, जनारक (७) कार्न मान, ज्याना ड. जार्द्धि टार्डिन हा छाजामि-कर्डक उद्ययना

रावजा क्हेंदि, अर्थार धराय मिन ज्लार्ट्स बिजाज, विजीत मित्न विज्ञाज, छ्जीत मित्न जारशेताज, डकूर्थ फित्न शिष्टिन मात्त्र शृत्त म्लार्ग नक जरुकारत। मृशान, कुक्त ७ भर्षक म्लार्ग वरः डेच्डिटे भूवािक बी म्यृहे श्रेतन, भूस्तिवर भक्षत्रता भीन कतित्रा, जित्राज उपनाम कतिरव, धरे मकन श्रातिक छाना ।। अक्टम मिन-एकम माहे। अकानाजः भीउड या ठांखानामि-कर्द्धक त्रव्ययना ह्यो म्पृटे श्रेरता, निग-एनरम म्मार्म् वर्षे मिनाजाम थोत्रिक्छ। मर्मव बात्रिक्छ अजुनात्मत भत्र कतिछ श्रेर्व।

(काष दा (बारू-दमा छ । विकि मार्क मार्का दा अभिने विनेता (करन महत्राधन करत, उत्त मर्त-यहर्षकृ खांखाणका कतिएक हहेरद, खांब छामारक पि भमन क्षि, जरन चामात्र मार्शमान दा अभिने-भागन कत्रा घ्वेरक । अरे क्षकांत्र व्यक्तित्र विक्या कत्रित्रा, यि भाजिङ्गापि-त्यात्रवृत्त ज्यापार कात्रिज्ञात करत्र, ভाष्णात्क योष्ट्रशामि-कथन-लाग्नम्छ।

ভৰে কৰি-চাক্লায়ণ বত, জ্লাভে পাদোম থেক্ন-চতুষ্ট্য-মূলা (১১।०) কাহন উৎসৰ্গ করিয়া, পুনজ গুজ্ क्रिएड भारत। एक यतन, जोत्रारिक शूनस्रीत श्रह्म ना क्रितल । जे ष्रमुक-मणश्र-कत्रन-जग्रहे अधि-চালায়ণ ক্রিডে ফ্ট্বে। যাজ্ঞবহা বলিয়াছেন, যে ব্যক্তি পাডিতা-দোষ-রহিত পিতা, পূতা, স্থাল্

(अ)वीर्ध किन्छित्र विवाह-खङ्जि-धीत्रिक्छ।

बाछ, बी, जाठारी, निरा किया पीछि अधिकाशि करतम, त्राका छैदिरक मध कतिरवम, खळताः, त्र

জোটের জায়ে কনিটের বিবাহ হইনে, দেই কনিটের নাম পরিবেন্ডা, জোট পরিবিন্ন, কন্ডা পরি- 🕊 🐿 (यमनीया, कशायाण प्रियरमात्री अतः त्यहे विवाह-भवायामान श्रुताहिक परिकर्छा, क्यायः हेशात्मत्र धहे मः अने क्हें उ खरा है होत्रा मकान है था। के, हे हो एत बातिक छ मन १ मन । या पान । जना छ विः भाषद्भम्ता (३.) करिम मान। क्रिकिश िदाइत मध्यम् भात अञ्चित आधि आधे नमांश्र इत्न কনিগাঁয় বিবাহ হইলেও, পূৰ্পোক চায়ি ব্যক্তিকে পুৱাক-এত, অশভে (১৫) কাহন দান করিতে হইবে। ক্ৰিট পরিবেদন-শাপ-ভত্তির জ্ঞ (১) কাছন দান করিবে। জবিবাহিত। জোটা কলা সত্তে (ध्म जारण ३३म श्रेषो एमथ)। मिनित्ज मामित्ज । धमामात्ज ज्यो धवः नत्शाखामि व्यविवाया क्छा

বিৰাছে চাঞ্চায়ণ ক্রিডে হয়। এই সকল কলাকে ও পূর্কোক্ত পরিবেদনীয়া কলাকে পরিভাগে ক্রিবে বাত্য প্রায়ন্ডিও।—পনেরো বংদর তিন মাস বয়স জতীত হইলে, অহুপনীত বান্ধাণকে ব্রাত্য বা সাবিজ্ঞী পতিত বলে উহার প্রায়ন্তিত চাক্রায়ণ ও গো দক্ষিণা, গো জভাবে এক কাহন দক্ষিণা দিবে। শিতৃ-মাছ-ধীন ব্যক্তির বাত্য প্রায়ণ্ডিত প্রাঞ্জাপতাত্রর জনতে (১) কাহন উৎসূর্গ করিবে। এই প্রায়শ্ভিত-অঞ্চানের পর উপন্যন দিতে হইবে।

্জামুহত্যা-করণোজ্ম প্রায়ন্চিত্ত।

यम् अवि यमिश्राष्ट्रमः आवश्नाम् महाक्षेत्रः भौनिकाल उभवामभाता ष्मथवा कनन्धातमः, जान्न-প্ৰেশ, বিশভোকন, উদ্ধন্ন, শ্ৰাঘাত, উচ্চ স্থান হইতে প্তন প্ৰভৃতি কাৰ্য্যায়া ভাৰগুঞ্চাবি মৃত্যু মুখ ছইতে কোন প্ৰকাৰে বন্ধা পাইলে, নেই আগুহননোজ্য জনিত পাশ কয়ের জন্ত চান্দায়ণ কিলা उन्ध्यक्षक अब ब्यायिक क बिरव ' जवर' वित्मय या किषिर উरम्बारभंत्र भन्न भन्न भन्न । यह ब्यामिक क्रियान क हिर्देश । महामि-क्यां क्षेत्र क्रिया, जाश श्रेरक खड़े श्रेरमक, बड़ थींशिक्छ कर्छन्। (अमाक्मार्रम थांशिक्छ धकत्रन (एत्र)।

भवितिता, क्षदीर ष्रदेगी ठकुर्ननी क्ष्यातक। श्रीया ७ मःक्रीकि मिटन बीमक्य क्रिया, ठालाइव कर्त्यरमञ्ज ब्यात्रिक्छ ।

त्मछ काहून मान कतिरतन, षाख्यानणः धक्षां धीपात्राम कतिरतम। मियरम देव्यन कतिरत, नग्र कत्रिष्ठ स्टेष्त । लाक कप्रवासल्य उम्हास ब्रीमश्मर्थ धकां रूजनाम कत्रिय। अष्ट्रमात्मत्र शृर्क अर्थार अष्ट्रत टीथम जिन किन मरश त्रवस्त्रमा शमान जित्रार्खाणेयाम, अमरक [১10] त्रष्ठ काश्न मान क्रिया कि एक कारण का प्रमाण किया । भूत ना रू अप्राणिक निकार वाकिया अपूर् কালে অনিবিদ্ধ দিনে সুষ্দেই ব্যক্তি জ্যানতঃ ভাষ্যা গ্ৰমন না ক্ষিলে, প্ৰাকাণতঃ ব্তাৰ্ক অশংক্ত क्रेंग्रा द्यांन क्रिया, ष्यथ्या नग्ना भेष ह्या मर्गम क्रियान, धक्षिम जिभयांम क्रिया क्रिया

मयर् या छेख्यपर् याष्टित्रिङ (माङ्क्रिमि माय बह्छ) त्यका धक्यात्र व्यक्तिमस्न त्यक्षात्रामी वाकि खाकानका कड़ित्य, षष्ट्यात्म ठोक् नीम कड़ित्य।

न्मांबाउन व्यात्रन्छि ।

স্ধ্যির উদয় কিয়া অংক সময়ে যে ব্যক্তি অঞ্চানতঃ নিদ্রা বায়, সেই বেদ-বিধিয়া ব্যক্তি একাহ डिनदान क्रिया, षाहीख्य मेंडदांव शांत्रवी क्रम क्रियं, क्रांनडः षिष्टन । ল্পে কিয়া লাগতে বিচামূত কিয়া গুকুলি জ্বাদি অপবিত প্ৰয় জ্বানতঃ ভ্যাগ করিলে, ধেষ্চ্ছয় জ্বাক্ত (७) कार्य मान क्रिय, जांगरकारन यद्य थांश्र छिट्टा ।

আপিংকালে মূল কিছা পুষীয় ভ্যাগ ক্রিয়া ভৎকালে জ্বল শোচ না করিলে, সবল্ল সান ক্রিবে,

জাপৎকার ব্যতীত জলশোচ না করিলে, একাহ উপবাস করিয়া সাম করিলে শুদ্ধ হয়।

জনতে (১)॰) দেছ কাহন দান একবারের অধিক বত ভঙ্গ হুট্লে, বত নই হুট্রে, ইছা জনেকে বলেন।

অপত্রণ আয়িশিতত।—বাবাল বলিয়াছেন, যদি কোন ব্যক্তি অশ্ব, গো, ভূমি অথবা কন্তা একবার পাণ্ড্রণ ক্রেন, ভবে ঐ অপ্ষত এবা ফিরাইয়া দিয়া পরে চালায়ণ বত অগডে (২১।०) কাহন ছয় দিন উপবাস অসম্থে (৩) কাহন দান, বালকাদির অর্জেক, অভিবালকাদির পাদ প্রায়শ্চিত। সর্বাত্ত

অভায় কৃষ্ণারী আবিজ্ঞত ধন কাথে ধনবামিকে আংখ্যা কোন সাধু র্জিকে সমপ্ ক্রিয়, পরে

त्नहें करेत्र मक्कित्मंत्र क्षींप्रिक्छ कत्रा कर्षत्र ।

डेरमर्भ क्षित्रत । कूछ भक्ष हंबर बाबाभका क्रियर, मनि मुक्ता खनान कारण खाखा ७ त्नोरू हंबरन

मारकम्पूर्तिक ज्ञान नहेंगा, त्नां ज्ञा या स्वाह्तमंतः ज्ञाहात्र माठित मा कतित्व, हेहकारत ठांकानक

শুনিতি এবং ক্ষান্ত্রে কুকুরগোনিতে জন্ম হব্যা থাকে, ইহার শ্রায়ন্তিত মন্তক-মূগুনপুর্বক উপবাসন্ত্র

নতিপাতক প্রায়ন্চিত ।

্ জ্ঞানতঃ বা জ্জ্ঞানতঃ হউক একবার কিয়া বার্ছার হউক বিষ্ণু শবি বলিয়াছেন, গ্রেখারিশী-মাজ গ্যন, কক্সগিমন*্ত* পুত্ৰবৃধু গম্ম ইহাকে জতিপাতক বলে। শালীয়বিধি-জহুসারে আণ্ডাগিক ইহায় প্রায়কিত কিয়া মহাপাতক দিওণ চাতুর্বিশোতি বাবিক বত তদশক্তে তিন শত যাইট থেয় মৃল্য

(১০৮०) काश्म मान धारः (२००) काश्म मिक्का मिर्व, ब्वान्डः हेश्व किथन। ্ । * ভ্ৰায়িশ্চিত ক্ৰায়িশ্চিত *।

় মহাপাত্তক পাঁচ প্ৰকার, যথা—বেন্দহতা।, সুরাপান, ব্রেয়, গুর্দদনাগ্মন, এবং মহাপাত্তির সহিত

ওক্তর সংগ্রা। ইহার বিশেষ বিবরণ কমে লিখিত হইতেছে।

মুভনাদি কংরম, যিনি সদাপবাপকার নিরত ও ফ্রেবুজি, যে ব্যক্তি সংজাতীয় হ্ইয়া,চমময় বা অধ্যাদিময় পাতানিআংগ * যে ব্যক্তি শুকী, দল্লী, নধী ও সপাদির সাই া কৈছোয় জীড়া করিছে কিয়াত কিয়া, জনাদি লইয়া জীড়া করিতে শিলা প্ৰশিত্যাণ করেন, অধ্বা আন্ত কোন প্ৰকান এনাশ্ক উৎকট কাৰ্যে থেছনা প্ৰযুত্ত হুইয়া, আত্মহত্যা করেন, ডিনি পড়িড এবং দেখাজি একমণাপে বিষ্টু, বিদি পাষ্ড, অংপং জীবিকার জন্ত রজবস্তুত কম্তনু ধারণ ও মন্তক প্রভৃতি কুশিল্প উপন্ধীবি হয়েন এবং ক্লীব বে ব্যতি, তিনিও পতিত। সাধারণতঃ মহাগাতিক হইলে, অজানতঃ দাদশ বাবিক ব্ৰত বা বড়্বাবিক আবাপান্তা ব্ৰক্ত

हार व्यक्तिया महानाहः जिल्ली हा महानी ज वर्षा हा। १ तम् वर्षा वामार वर्षा वामार कार्यक्रा मार्थकी वन শিব) দুলিন (৪ব পুঠা দেখ) ইত্যাদি নানাপ্ৰকার প্রায়শ্চিত আছে, জানজে পুর্বাক্ত নাধারণতঃ নিহাগাতাক্র প্রায়শ্চিত মাদশবাবিক বতাহুকর ধেহ ম্বা (৫৪০) কাহন দান ওদুজ্ন। পোল্ড ম্বা व्योगिष्ठक । अनुस्क धक्ने छ जाने (४४ मृत्) (८४०) कार्यन मान कतिरद, मिक्सा शामक मृता (১००) একশত কাহন দিবে। অধানতঃ মবণ কিয়া ঘাদশবা্ধিক বত ছিণ্ডণ চাতুৰিংশতি বাধিক বত আয়েশিচও নিদিই দক্ষিণাও দিওণ হইবে। এই জানতঃ মহাপাতক দিওণ আয়ে চিডগায়া পাগু নাশ হুইলেও बाराज किन भुरु बाहिट (वश् भून) (১০৮०) धकराबांत्र जानी कारन मान, ८४ इरम मान क्रिक्ष, क्रथात्र क्र मिक्र शाम पर्वकान छिनट जारत दाना सरा महिङ शृह माम, जमान्धित प्रकृतक (प्राटमधन वावश्री हर्नेत्व मा।

्रक्रिक् सेक्ट्रेस महाम माजिस हुन। । मर्सक दानक तृष्ट ७ मोगिरगत्र प्रवाङ्ग्छ आप्रफिरछन मार्फिक। मर्सक

िउ॰॰) केरिक् क्रिया । स्थानकः पिष्कः। वह अन्यक्ता व्याविक्छ (क्ष्वियत) पिष्कः, देवाधात বিরবিশ্বপৃঞ্জি/ শ্বের চতুকার করিতে হইবে। মরণাত্মকল থেলু দান বা ম্লাদিদানেই এই ব্রক্তি ব্লাস

শনেক বিধাব্যে ভন্নতা-দারা এক-বিধাবধ-পায় কিন্তু হু ইবে। বিধাহতাার প্রায় কিন্তু করিলে, ক্ষরিয়াদি-ব্যক্তশাদির আয়ন্তিত যন হটনেও পাতিত্য-দোব (ধাদশ-বাধিক-ত্রতাইফ-প্রকৃত্ত) সর্মধা ছুন্যই হইবে ।

क्रोहम। भिष्म यर्षत्र मामत्रक वानर्रुत न्यामारम भाष्टिका रुरेरन। উरोत थात्रिक छन्। यतापान बार्गिक ।- त्योड़ी, रेपक्ष ७ माम्ती, बहे बिरिष युत्र। युत्राणात्न वाम्तत्व शूर्त्ताक হত্যা-পাপত অসকাধীন নাশ হহবে। নিত প বা পতিত আন্ধণবথে এবং বেদাধ্যায়ী প্রভৃতি স্বঞ্জ ্ব্যব্ছা-প্ৰ।-- জ্জানুক্ত-বৃদ্ধ্তাজিনিত পাপক্ষাথিন। বাক্ধেন ব্ধোক্ত বতাপ্তসমৰ্থেন একুশ্ৰ हार्रायुक्त मिक्नोकः षात्रीकृष्ठ-मञ्जात्र-१४श्रमानाष्ट्रक्ष-५६वितःभागिक-प्रमाठ कार्याज्ञे नाना इक्छ পাতিত। আধাতিত দাদশবাধিক্তত, তাশংক্ত (৫৪০) কাহন দান, দক্ষিণা গোশত মৃদ্য। (১০০) শাত ঞ্চ বা ইংমা ক্রিবেন। ক্লিজাদির পাদ পাদ আবারণিড জ্নুন হইবে। জ্ঞানতঃ বংথাজের বিশ্বণ, ষ্মুধীৎ, বিশ্ৰের চাজুবিংশতিরাধিক বত, জশক্তে (১০৮১) কাহন দান এবং (২০০) কাহন দক্ষিণা হইবে। ু যুৱের মুরাণীর মাকাৎ পাতিত্যজনক মহাপাতক নহে। শ্বের হয়।পানহলে কপিলা গোর দীনক্রণঃ আগ্রন্থিত করণী গুমিতি সভাং মতম্। वाक्श-वर्ष व्योग्निक्टएकत होत्रवृष्टि क्हेरव।

3

(ক্ৰিষ্ণেক্ৰু) হুল্লপুনে শ্ৰিশবাধিক ত্ৰত। বালক ও বুলাদির স্ব্যাভিবিহিত প্ৰায়ন্তিতের অপ্নেক হুইবে। थक्त, जान, रेफ्, जाका अञ्जित प्राप उरमा (जाजी अञ्जि) ता धकामम अकात्र पका रेका

क्षिश्राणित পাদ পাদ নূমে শ্লৈর পাদ প্রারশিস্ত। জাশীরতির কম ফ্বর্বে প্রথমোক্ত প্রারশিকভের अश्य केष्ट्रमारित यावता क्टेरव। श्रतीक भीत्रमंत वा उत्तरभक्षा यद्य भीत्रमात कित्रमिक भाषिक भन-आमकुक भीरम जान्न ठान्ताम करिया, वृषमहिक (माम्ना (०) काह्म मिक्पा मिरवन '७ जोन्निमिन्। मिछ अमम्बर्ध स्ट्रेटल, छोज्ञांत्रंक क्रिडि ह्टेर्द। शुर्त्वांक धकामनिव मछनात्म क्रिवात्रांत्रित भाग নাই। এই একাদশবিধ মন্ত বদি অপষ্টবিত হয়, তবে বান্ধদের। উহা জ্ঞানতঃ একবার পান করিছে, শ্বন অপহরণে মহাপাতিক হয়। ইহাতে তামণের অজানতঃ পূর্বেজি ঘাদশবাধিক প্রত্রণ পার্শিত, क्राविष्या मध्यान्तः महिकृष्ट । এरे मण्माण्मत लीप्रिन्छात् वामात्त्र शुन्म विभागन ्ख्य द्यात्रिक्ड ।-- माथात्रकः कृती क्वारक त्छत्र दाल। अर्थात्म विध्यत्रामिक व्याचीत्रक्ति-भित्रमान अम्बर्गा छम्भोडक रहेरत। छानडः मर्ना किंग, नानकामित मन्त पार्क, किंग मर्नक क्षांत्रके विश्रमेख खेशदात्र, कममर्थ (१४०) एए कोइस हान विद्वारत । मर्सन दोनकाहित कर्षक क्षांत्रिक । अया किसम्हेश मित्रा, व्यात्रिक्त कतिरक्त रहेत्य। अत्यात्र यामि भाजात काम वामभाक मिरवर १

করিয়া। শ্রের আকাদীসমনেও জানতঃ ঐ চাত্রিংশতিবারিক প্রত, জ্ঞানতঃ ঘাদশবারিক প্রত . **धर्मक**मा भएम।--योष्ठ शहरादिती छननी राजीङ निछात्र भाषांध्राहत दिवाहिक। बीज्ञण, त्य वियोका, अवस्थानवेनकः त्मरे वियोष्ट्रियास खात्रभीति छक्तर्पंत्रहे कुना पाष्टिका एड्क्र महाणाज्यकत माग्रिक क्षिर्छ क्षेर्द्र, जन्त कामङ, मर्स्तरमंत्रहेमत्त किया ठाष्ट्रसिल्लियाधिक जङः क्ष्मकाम

নংদৰ্মধাৰ নাই। বে কালণবাত মংদৰ্গনান। পতিতের ত্লা, পাডিতা, আমন্তিভ হয়, ভশ্মন কাল-শায়জিল কিবা অভায়কল থেয়দান, অংশকে ভুমুন্য দিবে। সৰ্বা সেধুলু থাকিলেও) ব্যভিচায়িকী গমনে লগু প্রায়শিত্ত। দংগারী।—পভিতের দহিত লগুবা গুলুভর সংস্থ ঘট্টলেও (দীর্কালে বা স্ছু) মহাপাত্ত নী হইতে हैंग (bichinin : जावतम किंद्रमी तम्थे)। त्यरपमत्यनी मृत पानकवीत व्यक्तिफाइक गाम मृत्य वर्गार, पामवा व्यक्तिक क्षित्रियम, घरमत्येत मांगामी छेड़ांबेडे जाना षाम्नात्त क्षांत्रिक कत्रना कत्ति हहेत्। भक्कत्र मन्नर्गहोक भाक्ति क्ट्रेंटव मां, উषाश्करण भन्नामर्जनः शिक्षात्र यहन कारभर्ता है है। म्लाह आरक् आरक्। मर्मन्त्रमृष्टीम विरम् বিবরণ শ্রায়-চিত্রবিবেকে দেশা আবশুক। কলিতে, সামাগুতঃ পান্তিত্যঞ্জনক পাপকর্জাই পাত্তিত হয়েন।

পাপকে অস্থাতক বলে। 'অনু' শব্দ সাদৃজ্যধ্বাচক, স্থতরাং, অসুপীতক বলিতে মহাপাতকের সদৃশ্ 💸 অস্থাতক-আগ্ৰাত । জাপনার পিতৃব্য-স্থী, পিতৃব্যা, মাতামংী, মাত্নানী, মাত্বমা, মণ্ডর-স্থী, নুপ-স্থী, প্রোহিজ-শ্রী, দপোতা-खी, इक्क्ना-পন্নखी, मङ्गानिनी, शादी, भन्नश्रका-खी, अक्ष्रेडकङ्ग-जिर्वाहिछा-द्राष्ट्रशक्का क्ष्मि हाल (क्ष्यांन श्रेशार्छ। शिष्टच्छरा जाभश्रत, क्षेत्राण्कि मान, मत्रपांशवश्का, पिष्टिनिन्मा अध्यक्ति यश्री थाकिरत, हेश श्रकीष्ठ कानकृष्ट ठांशानिनी-भयन ६ ठांशानाम राज्ञमानि षात्रा भाष्टिका-छिपशाइ-खी, आांठार्श-खी, आांठार्शक्छा, बाष्टार्श, मिरा-खी, गिळ-खी, छग्नेक्ष म्थी, **ठां**खांक्र<mark>मी,</mark> (८८०) कारून मान । मरमरत्रेत जेभक्तमानि श्रम अवः वाजितातिष्यात मर्सक ब्रोडिन्डिक माचर रहेर्द्ध । জ্ঞানতঃ দিঙ্গণ এবং আহাতঃ দাদশ্বাধিক্বত দিঙণ প্ৰায়ণিড্যিহ্ হইলে, প্ৰায়ণিচ্ছ ক্**রিলেঙ্ড আন্**য়া-छक्यनर्वामि हो (चर्बार, कक्तिरहत्र बाजने शमन किया भूतम्ब रेवछ-छो या कविक छो)-शमन **वेष्ट्रामि** শতিক। ইহার প্রারশ্চিদ্রও মহাপাতকের ন্তায় বাদশবাবিক বত, দশতে একশত আকী ধেয় মুদ্য कार्। तात्रवांत्र काञ्चकि हरेतन, अञ्मिङकमार।, अ भित्रभिक हरेट आरत।

ভিপশাতক।

বেদ অধ্যয়ন করা, বাত্মণ হইয়া, দৌহ, নাত্মা, নবণ, যুত, দথি, ছ্যু, গুড, তৈনাদি দ্ৰব্য বিক্ষণক্ষণ, 🕦 भविविधि, (aम जारत ३३म श्रुको तम्य), ष्यमृष्टे-त्रकका कन्नात्र (मानि विकातक, मास्त्र प्रक्र मध्रा वर-मिमिष्ड जिल्लामिष्ट मस खेरहन, ब्रोकोन्न निक्टे वा दिनंबानस्य खेकांवन भवताम कीर्डन, झी खेन জীবিক হওয়া, আজিবোর ঔষধ বিক্রুয়, পরহিং:় কাঠের নিমিত্ত বহতয় জীবিত বৃক্ষ-শতাদি ছোমন, (अनुमे वेकात वृक्ष्णक्षमा अन्यान का किया विश्वास का का निर्मात का विष्य तिका त्या का विश्वा किया कि किया कि किया कि कि ष्णाणमात्र निविष्ठ षात्र भावकत्रतः, निक्तिशात्र (अर्थार, शवक, एनता ७ छत्रत्रात्रित षत्र) (खावना, नानिधिष्ठा क्रवं, क्यांविध मध्यांविधान्।, विम्था-जांव, हीन वाक्टिक (वह स्रश्यन क्यांन, वा हीन वाक्षिय मिन्नी खरा कृतिकवेश, भिछा-याजात्र का परित्याय मा करा, नाक्षिका अर्थाद भरताकामित ष्यशैकांत्रकड्ड, रतादम, अवाषाताकन, मांगावन भवती भयत, आंबदिकाम (अवीर, यदार त्याक्षात्रक स क्योडमा्त्राति হতঃ।), পাভিতাদোর ব্যতীত পিতা-মাতা-ওক-প্র-ভাধ্য। প্রত্তিকে ত্যাপকরণ, পরিব্রুত্ত बहर, वक जनकरण, खी-श्रुवाणि किथा मार्थात्रापत उलकात्रकाक शुक्रत्रते छ छन्नाणि विक्रुत्र-পাষ্ড্যম অধীৎ নাক্তিকাদি শাত্ৰ অভ্যাদকরণ, ধান্ত বাড়ি দেওয়া, ভাষাদি চুরি করণ, পখাদি চুরি ক্রণ, দৰ্শদা নৃত্য শীক বাছাদির ক্র্যুন্ন, নজ-পানশীনের জী কিয়া মজ-পানশীন। জীতে আন্ভিশ্নন, শ্রী-শুত্রাদি বধকরণ ইত্যাদি উনপঞ্চাশ প্রকার পাপকে 'উপপাতক' বলে। এই সক্রাই তুলা-প্রায়ন্দিয়ার্হ নহে এবং ইহার একবার বা বার্ষার অনুষ্ঠান-ভেদে ওক-লঘু ভারতনা হ্ইয়া থাকে। গোবহের প্রীয়ন্তিক পূর্ণে কোথা হইয়াছে। অভ্যাস-ঘারা একটু ওক্তর হইলে, সাধারণভঃ চাক্রারণ-শুভই উপশাতকের প্রায়ফিত। মহাপাতক হইতে উপপাতকের প্রভেদ এই যে, ইহার জাভ্যাস্থারা পাপের त्रिक श्रिका शास्क।

शर्फल, छेड्डे, एषा हेक, मृत्र, रुखी, ष्रक, त्मत, मरुख, मर्न अमहित, अहे मर्नादश की तहिश्मातक भक्षत्री-द्याज्ञानीएस, ननाष्ट्र नटन या मण्डानित्र ज्ञीन खहन, मिरत्रत महिङ क्लेडिनाडित्रन खबर शुरोपन्त्र, এই সকল কৰ্মকে 'জাতিএংশকর' পাপ কছে। ইহার অভাানে প্রায়ুদিত জ্ঞানতঃ দান্তপান্তত, জন্তে ও মিখ্যা-ভাষণ, ইংচকে 'জাপাত্রীকরণ' পাপ বলে। কৃমি-কীটাদি হত্যা, মজাদি-গত ফল ভোজ্বনু করণ পাপ বলে। নিক্ষিত ব্যক্তি-চ্ইতে ধনগ্ৰহণ, নিক্ষিত বাণিজা, মেচ্ছাদির সেবা করিয়া ধনগ্ৰহণ থেইছিয় দীন এবং অজ্ঞানতঃ প্রাকাণতা। ইহার একনার আচরণে সামান্ত প্রায়নিচ্ছ। कत शुन्धी क्रिकीमि छोत्रीकारा ७ जन्नाभुष्टात महम्भथकत्रा, हेश्मितिक भनातश् भाभ करक्।

জাতিপাতক চ্ইতে পর-পর ক্রমশং লগ্ পাপ-সকল লিথিড চ্ইল, ইহার প্রাম্ডিড ক্রমশং লগ্ ष्टेरत, किन्न, षाज्यारम डोन्सामनीन थक त्यामिक छ रहेर जारत। बर्डाह्य विश्वि निज्य-कर्पात खक्रवं, वााध-मुमामामि-कड़ क मर्गम, पिशानिवाम हें ज्ञापि खर्ड छ। य मसंख्रका व पाणटक 'खंकीविक'

জন্মান্ত্রীণ-মহাপাতকাদি-প্রায়ন্চিত।

भाभ यत्न (भाष्रजी-क्रभ-त्याश्रिष्ठ (मथ)।

विकृ अपि विषय्राह्म, भाभिष्रभ, नदकालानात्क जिप्राग्रायमि श्रेट उन्ते रहेता, मझ्या-रम् थांत्रं श्र्वंक भारभत्र त्यात-6िह्न-विविध श्रेशं थारक, यया—प्यन्तिको मशक्षे * त्रांशयुक्त हत्र, बहें ता अक्कर आकारी समाका म-युक्त खतः अंत्राशांती आंति छ, अ्वर्शती कृत्यी अ विमाष्ट्रशामी कुक्क्या

* कुछ चाडि धकात्र, यथा, -विडिफिका, इंग्डिया, (प्रा्रता), डफ्रीप्र, विक छे, (गावरकाडि) वन अयः छात्रवर्भ, কৃষ্য ও খেওমণ, এই আট প্রকার। উল্ কতক কতক উপশাতক, মহাপাতক ও অতি-পাতক, এই তিন শ্রেণীরই অবস্তুপত হ্ইপ্লা পাকে। উহা রোগোৎপত্তির নিদান দেখিল।, বেদ্যোরা স্থির করিতে হ্ট্বে। ব্রাপাতক, সর্বাশু-ৰিত্ৰ অভি-পতিক এবং বাহাতে সৰ্পাত্ৰে কত কিয়া গণ্ডে কপালে ও নাসিকায় বণের আকার দৃষ্ট হয়, উহাকে (অভি ह्य। अहै खेकाक मकन (ब्रांभई के हिक दा छ क्षेत्रीन भारनेत (भर-6क्ष महम ह नाहै।

मस् यनिवारकत, मानवश्य मत्रीतक-कर्यतमात श्वतक, याधिक-कर्यामात भछ-भिष्क अवर মানসিক-কর্মান্তে অস্তাজাতিত নাভ করে। ত্রালাদিগের ইহ-ক্ত কিয়া প্রকানকত চ্ক্রকান क्रम विभवति, खावीय कुछामि (ब्रांत वा अक्षय तवित्र विश्व विश्व रहेग्रा थारक।

प्रांख क्राम भाव, उपनाउक-त्वात-टिक् प्रक्रमापराज्य धरः षाणाज (अमीनिकामि) भाष-िक् जिन क्या-परिष्ठ याशिकारण थिकां न पारिष्र। थारिक। এই मकन भाषक-याशिबञ्ज स्केरन, प्रक्षा-চিনা, ছোম ও দানাদি কার্যদারা উহার শমতার চেটা পাইবেন (২র ভাগে যন্তারন-প্রকরণ দেব)।

শাভাতশীয়-কর্মবিপাকে উক্ত হ্ইয়াছে, মহাপতিকজ-রোগ-চিছ (পার্মিড না হ্ইলে) সংগ্রদ্ম-

দৰ্শগানে কডটিছ একাশ হ্ৰীয়াছে, ডাছার ভিন মানের পর মৃত্যু হছলে (পায়নিডও না হ্ৰীয়), দাই হ্ইনে না এবং ঘাছার দাপোত্তৰ) গলিত-কুঠ বা মহাকুঠ বলে। এছিততেরর টীকাকার কাশীরাম বাচশাতি বলেন, মাহার গণ্ড কপালাদি, नक-क्यांकाकिक तक्वन मर्थनीत्व ब्यावर कुछ मुद्धे हत, छाहांत्र बधात्मक भीत्र मारे निरवध, त्क्य् त्क्य् दाजन **আছি-পা**ডক ক্ষু বা মহাপাডক ক্স রোগ প্রকাশ হ্ইবামাত প্রায়শ্চিত ক্রা আবেশীক, কারণ, ক্স-भूत्राएम यिन्त्राएहन, एव यास्ति फिका-त्निमिधिक-किया-शैन, एव यास्ति भाषतीकभ-वश्चि, एव याष्टि মহাপাওকৰ কুট ডিন মাস পরেই অতিপাতকৰ বলিয়া পদা হয়। সামাজ ছুলী এছতি উপপাপোরে । क्षे, बाकराचा क, खार्यक, धश्वी, मृतकृष्ट्, सम्बती, दृहरचान किया क्यकान, खिलाव, जनमत, ষ্টব্ৰ: ব্ৰথালা, পকাঘাত, অকিনাশন ইত্যাদি মহাপাপ-সমূত্ৰ। ইহার অতিরিক্ত উল্লাদ * कॉर्रनी माहेट शक शकरात्र मांब छेंद्रिताध यन्ता दाल; तकिष्ठ, घत्र, धर्मी, प्रम् धर्द कांच, धहे नीहि जांत्र এমশঃ মিলিড হয় বালিয়া উহাকে রাজদলা বলে, थ∴় र মুলা হইলে একাণিক সহল দিন মধ্যে মুড়া হইরা থাকে, स्वकृष्ट्र बटनम्, त्कर् यो वर्षम् ज त्यर त्यारणत्र मरधा १९६४ करतन। जमात्री, भाष्त्री । व्यक्तिमात्र, जिल्लाम कृष्ट বৈদোৱা এই কৰা বলিয়া থাকেব। মূকুকুজ্ঞ, ইহাতে মাং িল হইয়া মূলুয়ার রোগলায় হয়, কেহ কেহ বহায়ুলকে অতিরিক্ত মধানিঃসরণ; কেহ কেহ আমাশমকেও বলেন। মুট্রগকে নালীরণ বলে, পচা বা বিষদ্ধিত কর্তও ছাইরণ মধ্যে গায়। 'অধিকনাশন সত্তে অধনকের মতে অধনকেই ব্কাল। বাডেদিও মহাপাপোদ্ৰত, কেহ বলেন, পিজে। দুর वरः कटनामनं वहे कुहाँ छेन्नार्नाह्न ।

 छ जनती त्रांश पश्राणी छक्क विनित्र। नात्रम विनित्राह्म। निकृ विनित्राहम, क्नावी * अधिवास्त अवः क्रफारी, केरोध महीभाण-ममुख्य, केरा श्टर्स तम्बारिमाहि। तकािष्यक महाभारणाख्य, कान्न, कर्म-विशोष्क समित्राहम, मण्णाशी दाक्ति त्रकाणित-त्रांभवष्ठ रहेरत। जाताक दरना, खरन (भाष-त्रांभक महानीरनोह्डव ।

बरनोमक, यक्द, शीरी, मुन्दाकांत्र, मधामवन, भामरकांग +, जीनका, हिम (विधि), जम (घृनि), तमाह,

^{*} প্রায়ণিডভ-করণানপ্তর কুনধ এবং কুক্বৰণ দত্ত উভোলন করিয়া কেলিবে। কুনধী, অধ্—কুৰ্ধ, ক্ৰেসিড নধ बराजन, धीशाम मेखसममधावकी क्रम मछत्केथ त्याम। कृष्णी मत्क बालाविधि योज्ञितिक खाबादुरुराष्ट्र, खाबीद् সছুচিত নখ, অধিং, ঘাহার ন্থাঞাডাগ মাসে-মথে। প্রিট হইলা গাকে। ভাবণ্ড শাক সভাবতঃ ফুক্বেণ দস্ত, কেহ্ भमवंह (भमभक्ष), ब्रक्टांबी में (ब्रक्टरने खाँद) छ दिमभीमि (हर्षक) (ब्रांश উপপাপোस्त। मुखाद्याक যবশ্দিশের জার যাহার নিকাঞ্জাপ শভাবতঃ আনাজ্ঞাদিত।

⁺ ক্ষামরোধ, অধাৎ মাহাতে বন্ধ কাশি পাকিয়া হাপানি গাকে, ইহাকে মুল্ত যাসও বলে। সাধারণতঃ জাবগুকীর ক্তক ছালি জোগের বিবরণ লেখা হইল , রোগের সংজা নিশ্য বৈদোরা করিয়া দিলে, রাব্যাগকের। উহা কোন্পাগো-

(बाड्यग्राधि-विदम्भव), जिव्ववश्रुः, कम्भ, विज्ञिक। (शक्षाचाङ-विदम्ब), रम्भोक, शुरुबीकामि द्रान्न माधाइन প্রকীবিকাদি-পাপ-সমূত্তব। অর্শ ও রুহৎ ক্ট বা গলিত ক্টরোগ অতিপাতক হইতে সমুদ্রত।

চাঞ্জায়ণ ক্রিডে বলেন। অভি-পাতকে মহাপাতকের দিগুণ, অর্থৎ, পারাক-দ্য দশক্তে (৩০) जिन १३ क्षांख्यीन-महाणीडाकंत्र खार्राफेड षामगराज-मांश प्राक-जङ, उममोटक पंभरबन्म्मा (১৫) पानास काइन, मिक्नि १९ कि कि । अन्योक्ती १- उपपोडक्क त्रारा छेश्त आर्दिक थोशिक छ, अर्थार, (११०) माछ मांड कार्य मांन ७ मिक्ना यदिक्षिर। नायावन-विडिक्कामि (ब्राटन महानाजरक्त बहीरण, षाधीर, (११०) षाण्डि कोश्म मान धारः यद्विकिद मिक्ना हरेटन। दिह दिह धर्षे माधायन-मृत्त कार्म मान कत्रिक ७ यदिक्षिर मिक्स मिए रहेर्व।

महारत्रात्रात्रात्माद्रमधित भएत अकूछ-थात्रम्भिष्ठक याङ्गित श्रुत्वाद्रभित हहेत्त, त्महे अरुि-७एकाद्रभैत भूखः मृत-बार्शाभिष्ठत कृष्टीशरेभ थात्राम्धः कत्रित्न अतः वैज्ञण जंस्ति कन्ना श्र्मां क षाणि शुर्खात

জন্মান্তরীপ-মহাপাতক-ব্যবহাপত।—বন্ধকাশ-বোগস্চিত-জন্মান্তরীপ-মহাপাতকশেষ + পাপ-

कर्त्वेदा ब्याम्नाम्टरक्षत्र एजीशांत्र मान कतिरदन।

[া] ব্যব্যাপতে কেই কেই শেষ শব্দ নিখেন না, এবং "যুদ্ধ কাশ-রোগ-স্চিত মুরিত করাখিনা," একুপ নিখেন।

क्याविन। वामाविम भयाक्यामाम्याविन्। यद्किकिकिकिभन-भक्षमा-क्षिभिन-जान-प्रकल्मान-जा প্রায়শ্চিত্তং করদীয়মিতি বিদাং মতম্ 🛊 ॥

ৰুষাক্তরীণ-উপপাতক-ব্যবস্থাপত ।--জলোদর-রোগ-স্চিত-জ্মান্তরীপোপপাতক-শেষ-পাপ-ক্রাথিনা শুস্তেণ পরাক্ত্রতাধাচরণাদ্যসমধেন যথকিক্ষিক্ষিণ্ড-সাধি-সপ্ত-কার্যাপনী-দান-দ্রপং, শুার্সন্তন্তঃ কর্নীয়-मिकि मजाः मजः ॥

टमय-जीप-कशाविज्ञ। मुख्रा। अत्रोक्वङ-क्ष्माठत्रवीत्रामयव्या ४०(किकिक्षिक्षक-विश्मर-कार्षाण**वी-म**ण्डा-ক্ষাকীয়ীণ-অভি-পাতক-বাব্যাপত ।--অশ্রোগ(বা ুঁহ্ৎ-কুট্রোগ-)-স্চিত-জ্মান্তরীপাতিপাতক-রক্ত-দান-রূপং প্রায়-চন্ত্রং কর্ণীয়মিতি বিচ্যাং প্রামশঃ।

ং কোতী যদি, পূৰ্বাদিন উপবাস করিতে কটবোধ করিয়া, হুম জলাদি পান করিতে ইচ্ছা করেন, তবে ব্যর্হাপ্রের निएक "शुर्विभिरनाणवासाकत्रराष्ट्रश्रेणशाणि एत्रत्रिक," এই श्रकात्र निषित्र पिरवन। উৎसर्भ-श्रामी,--आधिश कड़ि चर्कना কবিল, আলোড্যাদি অমুক দেবশৰ্মা পুৰ্কাদিনে উপৰামাক্রণজনিত শাণ্ক্ষ-কাম ইল, অইপথী পরিমিত বরাটক্ষিত্যাদি। (FE-4-9) ा अध्य वरमात्त्र व्यक्ति * धाक्मिम वरमात्रत माम वरम वानात्क्य किया (द्रांभी वृक्त ७ व्यम्मर्थ द्रास्क्रिय कांग्रिक्ट शुक्रांकि मिथिकां व्यथ्या भक्र-शुर्ग्राहिक या अस्त्र, दैश्या, अधिबिधि स्ट्या, कतिएक भारत्रत। भूकीर-कृट्डा खिडिनिषित्र मुखन नाहै, किन्न, डेनवान जार्ह । ब्यात्रिकशक्क-आध-मांब कृतितन, (कर्

क्ट्र यतमा, उभवाम क्रिडा रहेर मा ; किन्ध, मर्बज भागिर मुखन क्राम बावश्र आह्म।

न्मिक्त) साम्रिक्त ना श्रेष्टा, मुक्टा श्रेटल, जेश्र अन्नर्भित्क-कार्गारिकाती शुलानि, जेश्र आमिक्ड মহাপাতকল বা অভিপাতকল রোগবিশি ব্যক্তির (কিয়া ঐহিক-মহাপাতকাদি-ঘারা পতিত क्रिया, भरत माश्मी क्रिट्र । बहे कुछ दाक्ति (खिर्डिनिधि-बार्जा) ब्याग्निकच-क्र्रल (नित्रतकाण-निर्वत्त) श्र्मार-कृष्ण छन्तामामि नारे। बरे कृष् दान्ति श्रामिक अधेनी ७ ६ष्ट्रभेन छिथि, प्राधिकान थाकुि गर्मास्क-कांब-क्षित्र (मन्यांनािम) म≅त्र कांत्वहे हहें। ज्यात्वा कश्त मनगर्मामि त्यां मौकात ष्राधा क्रिक हेट्ट । मिटाउत्र महात ब्यामिक मा-रूषमा-भराक कारनोह रहेट ना (धर्व जात

क श्रीक्षम सदमाज्ञाद खिदिक, এहे दिरान निर्दान थीकात, जीवनत्र-क्षण्डचीलाज्ञि विभिन्ने त्रास्तित शक्षम बदमारत्रत्र मरश शुक्री सरेटल, महरू अधिनक्षक श्रहेत्व ना ; कात्रन छंड्रांत्मत (भानी पनिश्चा त्वांथ ना शाकात्र) आधानिकत्त्व व्यथिकात्र नार्ड ।

জন্মত-প্রায় শ্চিত্ত-মহারোগমূত-ব্যবস্থাপত্ত।—জন্মত-প্রায়শ্চিত্তন্ত মহারোগিণো মৃতক্ষ গ্রহ**ী**-রোগ-স্চিত-কলাকগীণ-মহাপাতক-শেষ-পাপ-ক্যাধিন। ডদৌদ্ধৈচিহিকাধিকারিণ। পরাক্রডাদ্যমধ্বের ছৎ-কিষিক্ষিকিণক-পঞ্চদশ-কার্যাপন্তী-লভ্য-মুক্তদান-রূপং প্রায়ন্ডিভঃ করণীয়মিতি বিদাং মতং ॥

बर्गाश्मारुन-त्यात्रिक्छ।

क्लियो क्रियंत्वम, क्रीश्रेरिक में कि-ठोत्साप्रन थात्रिक्छ, षमारक भीरागन-८४व्छक्षेत्र-मृत्रा (२२१०) काश्म জন্মান্তরীগ-মহাপাতকজ বা জতিগাতকজ রোগ্রিশিই ব্যক্তির যদি মৃত্যুর পূর্বে কিয়া পরে প্রায়ন্ডিন্ত ्र में स्त्र, छत्व छेश्त माशीम चाडाहि-कित्रा श्हेरव मा। त्य तांख्नि कहे महिन-वहनामि चाड्याहि-मान मित्र होता। ता ताकि वात्रमात्र षाज्यमाज्यम्, अन्यान्ध्यम् कथा यहाभाउकामि केहिक-नीनकार्ग-वात्रा धककात्व भोडिड श्रेशार्ड, जाशांत्र भुष्टात भ्रत्ने या भरत आतिष्ठ ना श्रेरान,

শাহাদি কান্তোঞ্জি-কিয়া হ্ববৈ না; স্বল্যাং, পতিত ব্যক্তি ধয়ং জ্যানকৃত পিল অজানকৃত পাতিত্যের

লাগ্ৰ-চিত্ত। পৃথিক-পভিতদিগের আন্তাষ্টি-ক্রিয়া মোহবশতঃ সমাধ। করেন, তাহা হইলে তিনি, তপ্ত-अधिकित ना क्रिएन, मृष्ट्रात पत उर्श्वामि छेश्त आर्थिक नित्रतन। यमि त्वर धरे (अकुक-

দান, আছাদি, কিছুই নাই এবং উহারও দাহাদি করিলে, পূর্ধবৎ ভগুকুচ্ছু দয় প্রায়ন্দিত্ত করিতে कुछ् बङ खीशिक छ, ष्यमास्क मार्क-मख-(प्रमुन्। (२२॥०) कारम मांग कतिरान, एक हर्रायम। (कह কেছ বলেন, পভিতের দহন বহন সংস্পর্শন প্রভৃতি সমূচ্চ্য় কাধ্য না করিয়া, যদি কেহ কোন একতর कारी करंतन, उत्त जाज- अक्ति वज्ञ श्वितामात्र क्रियत, श्रेत्त। उपनाम, विश्वान, जनदात्यामि করণ-খারা যে ব্যক্তি শ্বেচ্ছার আত্মহত্তা করে, সেই ঐহিক-পতিত ব্যক্তিরও অস্ত্রোষ্টি-ক্রিয়া, দশপিও-চ্ট্ৰেক । এই জাত্মহাতিকে জন্তাজ ধারা তীথে, সাধারণ নদী-শ্রোতে কিয়া বৃক্ষ-মূলে গুক্জেণ করিবে। গজিনীয় মন্ত্ৰ (নিৰাস-বোধ-হেতুক) গৰ্জ শিশুর পশুতর প্রাণ নাশ হ্ইয়া থাকে; শাশানে দাহক স্বরং

^{*} আগুমাতির আগুশ্ভির নাই; তবে মদন-পারিজাত এতে লিগিয়াছেন বে, আগুমাতির পূআদি, সম্পেরের পর জ্ঞান,-কুত ৰজাতি-ৰং-পারতিত্তের সহিত চাকায়ণ করণানতত্ত, নারায়ণবলি করিয়া, মৃতপিআদির কুলপুত্তিক। দাহনপুর্কক सीकामि क्रिक्ट भारतन। टक्ट वरनान, मच्दमरत्रत मरगुष्ठ छेह। हहेर छ भारत।

किया ठाक्समासियात (महे गई निःभावन ना कताहेश मार कतिरान, चमाक (छैनविष्यीत वानरकत्र)-मार्ग-कमिত (मष्-धकीर्षिक) भाष-करत्र कम खांकापण कर्त्र। জন্মান্তরীণ-মহারোগিদাহক-প্রারশ্চিত্ত-ব্যবস্থাপত্ত।—অকৃতপ্রায়ণ্চিত্রায় মহারোগিণ্যা-মৃতারাঃ জিয়া-ক্তকাহি-জনিত-পাপক্ষার্থ দাহকেন তথকুছে বতাচরণাদ্যমধ্যে যথকিফিচ্চকিত্নপাদৈকাদশ-কার্বাপ্নী-পরিমিত-বরাটক-দান-রূপং প্রায়শ্চিত্তং কর্বীয়মিতি বিদাং মতং॥ উদ্ধন্দুভ্ৰাহকব্যবস্থা।—-উদ্ধন্দুভ্ৰাহকেন তদাহ্দভ্ৰাপ্দ্ৰাৰ্থ ভপ্ৰকৃত্ ব্ৰভ্ৰাচ্ত্ৰণ্ৰাপ্যাৰ্থন क्रिकि-भीपक्षप्रार्थिन। माहरक्न क्षांकापकावकामाम्मरर्थन यद्किकिक्षिक्षक्कि-विक्षिणिक-मान-क्रपर खात्र-প্তিৰীদাহক-প্ৰায় ক্তি-ব্যবস্থাপ্ত ।--অনিঃসায়িত-গ্ৰায়। গ্ৰিবত্যা দাহে তদাপ্ৰস্থানক-দাহ-य्बिक्षिक्षक्रकिमार्कमार्विमारिश्मिडि-कार्राभवी-नडा-उक्छ-मानज्ञभः क्षांश्रिक्षः करनीश्मिडि विमाः मडः ॥ शांत्रजीक्य-थांत्रिक्ड। শ্চিত্তঃ করণীয়মিতি সতাং মত**ে।**

जिष्ठम्-शैक्क भाग्रजी-क्र - बांता नर्स्यकांत्र भाष-स्तरम हहेग्रा थारक। जन-माथा, रथा, -- अकीष-পাতকে শতবার জ্প, উপপাতকে সহলবার জ্প, অনুপাতকে অযুত্বার জ্প এবং মহাপাতকে সক্ষবার

একদিন-দাধ্য ক্ষি নহে; স্মতরাং, পায়ন্দিত-স্থনে প্র্যাহ-কৃত্য (ম্ওনাদি) ক্ষিয়া, পর্দিনে জপ क्षणी कत्रिरलहे, भीभ स्मान्न इहेरत। (अद्यश्य विधि भ्य स्नारश स्मर्थ)। अहे लक्ष-मर्थाक क्षभ শারত করা কর্বণ এবং জ্পরণ প্রায়শ্চিত শেষ না হওয়। পব্যত্ত (প্রশচরণের তায়, ৭ম ভোগে দেখ) প্রতিদিন হবিষ্যাম ভোক্তম-পূর্বক সংঘত চিত্ত থাক। আবশুক।

পূর্বিক করা বিশেষ জাবাত্তাক। এই-সমত্তে শাস্তাজ্যে কথিত হইগাছে যে, "ন রাম-শব্দোচ্চারণেন নরক্ত ম্ভিৰণা বারি বারি কথয়তো ন ঘাতু তৃষ্ণ। বলয়োগিতপ্রেয়া যজ্ঞপতভিনাবিশতি ভবৈব নাম কলমন্তি 🔐 শাৰেশ হইবে, নাম-ফলও মেইন্লপই লাভ হইে. ় শাপ্ত চৈতভাদেবও বলিয়াছেন যে, "নয়নং অব্ধি যেমন, 'জন-জল', এই শক্তোরপেই পিপাস। শান্তি হয় না তেমন 'রাম', এই শক্ষোচ্চারণ-কুফনামুলুরগ।—শুদ্ধাবান্ রোকের কৃষ্ণ-নাম জপেও সকল পাপ নাশ হয়। এই নাম শুরণ ভক্তি-শাবাই যে কেবল মানবের মুক্তি হয়, তাহা নতে প্রতরাং, বৃদয়োথিত প্রেম-দারা যে প্রকার ডাক্তির গুলদুক্ষধারয়। বদনং গদ্যদক্ষুয়া গিরা, পুলকৈনিচিতং বৃপু: কদা তব নাম-গ্রহণে ভবিষ্যতি ॥'' আপপিৎ, ছে ভগবন্ হরি। ডোমার নাম-গ্রহণ-বিষয়ে কোন্ সময়ে আমার এই দকল ভব্তিচিক্ত বিকাশ হইবে, জ্বপ্ৎ, (বিগুলিত ও আননন্দোচ্ছাসিত) অক্ষধারাধারা আমার নয়ন শোভিত হইবে এবং গালাদভাবে কন্ধপ্রায় (ভিজিপুধ্) বাক্যাৰায় পুষিত বদনমঙান, পূলকথাৱা কটকিত দেহবিয়ব দকল কবে আমায় কুৰিগোচর হইবে। যে প্ৰকার পাপী হউক নাকেন, যে ব্যক্তি, পাপভয়ে আছিরিক ব্যাক্ল হইয়া, সমস্ত ছাড়িয়া, কেবল ভগবানে আত্মনিভ্রপুৰ্ধক, ভাঁহার শরণাপল হইয়া, ভাকিতে পারে, দুগাময় কি ভাঁহাকে ছাড়িতে পারেন ? তিনি নিশ্চয় তাহার হাত ধরিয়া, উঠাইয়া লয়েন।

शक्रोक्याग्रम्ब्स

আৰণ ইইতে চাণ্ডাল পৰ্যন্ত যে কোন মন্ত্ৰা, শুদ্ধাপুৰ্ক কামনা করিয়া *, গদামান করিলে, ঐহিক ভে ভাঁহাদের জ্ঞুত্ত বহুব্যুয় ও ক্টুসাধ্য নানাবিধ্পায়ন্তিত্তর বিধান ক্রাহ্টয়াছে। গঙ্গামাহ্যুজ্ঞা পারত্রিক, সর্বপ্রকার পাপহইতে মুক্ত হইতে পারেন। পণ্ডিতগণ বলেন যে, ধাহাদের পঙ্গার প্রক্তি তাদুশী ঐকাজিকী ভক্তি মাই কিছা গুলাহীন দেশে বাস-নিবন্ধন গ্ৰাস্থান বাহাদের পকে ছুলভ,

^{*} যদিও ব্যনাদির আছেচিত এত্তি বৈদিক কার্ডি অধিকার নাই, তথাপি ব্যন দ্রাপ ধী প্রধানানে মুক্ত হুইয়া ছিলেন ; ডংকৃত গঙ্গালের ইহারণিক আছে। শারণেপুঢ় এতারেয়ন নম আলা, আবণিং শারে বাহাক শিক ক্ইকাছে তাহা নিশ্য সত্য ও হিডলনক ইতাদি একার হির বিখনেদর নামই শ্রন এবং শালীয়-বিধিসমাযুক্ত বে কর্ম, তাহাই স্বিভ্**ষ** (সাধিক) ভাবে অসুজীত হুইলেই, অনস্ত দল্লন্ক হয়। অজ্ঞানতঃ গ্লামানে পুণা হুইলেও, **পার্ভিভ্**রে

ক্ষিত হট্যাছে যে, গকায় সানকরণমাত্তেই গুরাধর্ বন্দহত্যাদি পাপ কি প্রকারে ধ্বংস হইবে ৷ ইহা

राती सनारी थाय रहेशाहि; यख शुका उपशामि कान काराहे थाय धक्कर । युनम्भन रुग्र ना; जुरुग्रार जांगामिराध उषारतत क्यान छेथीत्र नाहे, त्वाय रुत्र हेटा विरवहना कतित्राहे, विश्वाजात्र मत्रा, क्षेत्रमत्री भिक्छ প্রদান ক্রি:; এই ক্রণাণ্ড যদি কেহ ন্তরিলাদ (গোরবস্চক বাক্য) বলিয়া জ্ঞান করেন, তবে তিনি मस्खक थाएँ जिल्ला अन्तर । धक्रात भाषतां अनिहास की तामर, त्मां अन्तर्भाकां के, प्रस्ताहिस ख श्रीमा-भीदनी शकांक्रभा श्हेशा, ष्यात्रमुख न्यांना मयध ष्यार्गातमा अविक कवित्राहका। ष्यार्षामाध्य पैर्शाप्त पृष्ट विषाम प्राप्त, कोडीन कोड्डारकात अधि माराएत जाखितक असा जाएड, जाराता रजहे क्न भी में हुछन ना, अक्रवांत्र छक्तिश्रक्त शमायान कतिया, व्याभनाटक निष्णाभी तिन्ता, महन कक्त ; कांत्र, ए भाष्ट क्षांत्र किछ-खकरान वज जाते जाति दीरादीति कता रहेताह, कथात्र कथात्र भान एनथान হইয়াছে, নেই আধ্যশাল্লেই গলার এই অপরিদীয় মাহাক্তা ঘোষত হইয়াছে; কিন্তু এড স্থবিধা থাকি-কুন্তীপীক নরকে পাম করিবেন। বাজাবিক গঙ্গার যে কতদুর মাহাত্মা, তাহা কেহট নিণ্য করিতে পারেন নাই। এই ঘোর কলিকালে বিশুদ্ধ মুতাদি উপকরণ, বিশুদ্ধ ব্যাহ্মণ, নির্বিন্ধ, ও নির্জ্জন স্থান্য, যে ব্যক্তি বলেন বা মনেও করেন, (গঙ্গা বনিয়াছেন যে,) আমি ভাঁগ্যক কোটী-বন্ধবধান্ত্রৰ পাপ

लंख, बाशांत्रा शकांत्रांच कत्रिव यत्न कत्रिया, भाभ कत्रित्वम, खनानी जातीत्रवी डांश्रात्मत्र भाभ धर्ष क्रियन मा। अन्यायाश्राक् कीर्बिंक श्रेषांछ एव, यष्टि महत्य विम्न मस्मा श्रमारिक त्रका करत धारः অভক্ত ও পাণকর্মত ব্যক্তিকে নিবারণ করে (গঙ্গামাহান্ত্র্য প্রথমভাগে ১১ পূর্চায় দেখ)।

গঙ্গাঞ্জি বিত্ত নাবস্থাপত * ৷--এছনী রোগস্চিত জনাত্তরীণ মহাপাতকজ-শোধ-পাপ-ক্ষ্মাধিনা बांकरम (भूक्षित मुख्ताणवांत्रामिकः कृषा णवांत्रम मायाध्यानामञ्जा। शक्तान-ज्ञणः खाय-

न्किछः कत्रनीश्मिति विष्याः भन्नामर्भः॥

(गी-स्मिया ।

ला-त्मया हिन्नुत्र धकि निजा कर्छता क्या। मध्कङ्क दर्गिङ हहेग्रोह्फ, त्यमन बुक्त मिला मांजा, (माय) (मात्र अवस्मीयमञ्जल मन्त्रां कवा यांत्र, मात्रीर निर्धाक ध्रत्रक श्रेटन्छ, त्री-त्यत्रो महरक मुंद्रकाश कतिरव ना : कांत्र भारत तथा यांत्र (ए, त्वांश-वांगना-कांगी जेमानीन, त्यांशिनक माम्बी जांदा। अ मिल महान, हैर्दारम्ड उत्तरमान क्रम (मङ्क्राङ) में आकृष् करा यात्र, उत्मन स्वर

^{*} अम्बाद्धीम्बिक्टक्ड भार्याचाक वर श्रीक्षांत्र मानानि षक्रकांग प्रकत कत्रा षांत्रक्र ।

ধে গৃহিই আন্ধিণেয়া পীয়া প্রকালন না করেন, ধেথানে বালক ও বৎসগ্র রোদন না করে এবং যে স্থলে

3 खागाय, षार्छना ७ धामिक विद्याल, मौदाष्ट्र, बांफ कतिया, मर्त्वाजीहे खांख हहेरवन। जित्राशुत्रार জগতের মঙ্গলজনক ও পবিত্তার কারণ; স্তরাং মঙ্গাকাজকী মানবেরা, সতত ই্হাদিগকে দর্শন, कविद्यं ना धवर भुक श्रीय शैषक नामिका आष्ट्रामन कविद्यं ना। विश्वकाषि विनिधाष्ट्रम, - (भा-भूख, (ছোম আছে প্ৰাদির জন্ত) যাহা-খধা-খবিত প্ৰভৃতি মন্ত্ৰউচ্চারিত না হয়, দেই গৃহ ঋশান ছুলা। मित्री नात्रम समित्रारक्ष्य (य, बान्मप, (त्रा, क्ञायन, हित्रप), युक्त, चामिन्छा, चन्न ध्वर दान्ना, हैश्रोत्रो विनिधार्कन, (शांत्र खीनीय ७ टीनिकिन कतिरान, मशुष्टीणा नञ्जसता शिनिकरान कन रुत्र; (शांत्र अपित्र नक्का त्यामय, कुंब, मुरु, मिष ७ त्याद्रकाइमा, ामम्बनीय अहे छ्याहि खराहे भवित ७ मामना। माद्र मिथिङ আছে যে, নিত্য গো-দেবায় মহাপাতকেয়ও নাশ হয়, ইহা পূর্দের বলিয়াছি। গোর পালোচ্ব ত ধূলিকণা एक है माशिरम, यात्रवा-मान मिसि हत ७ (जा-म्यार्ग मात्रीत उरक्ताप पविक हत। (जात्र धनमञ्जोष् বোষ-পাশনাশক প্রায়ন্তিভ-সিধির লক্ষণ, এইজন্ত প্রায়ন্তিতে গো-গ্রাস দিতে হয়। তপ্তন-পদ্ধের কায় নিত্য-দৌরভ-মৃক্ত; পো দর্মভূতের প্রতিটা ও পবিত্রতার কারণ ও মহৎ প্ৰেইনৈক প্ৰযোজক ঃ গৌ পৱন মুকলের ও পবিত্তার আগ্ৰয় এবং যুগের সোপান ; সংস্থারের নিজ্য-क्षत्रिक धरः कौरता कान-मृतकः, त्रा तन्त- छोगा हित हित्क ध अविभिष्धं कानि-इत्वाकि-इत्कीक् বস্তু গোই ধতা কমা এক কুল দিভাগ করিয়া, আমাণ ও গোর ক্রিকাইন্দা। উচ্চার এক অংশ

मरिके धारा भागेत्र भार्य द्वाउन मासिता । माउधार, धरे थाकात मूत्राची-राम-मृत्या सम्प्रती भाषीय

भविष्या, जीमजी एशारक ज्यामि बात्रसांत्र टानाम कृति।

চিকিৎসক্ষো স্বাসকল নাৰাপ্ৰকাষ ওষ্ধে ব্যবহার করেন। ভাছাত্রা বলেন নিত্য গো-মূত্র-गारम ब्रष्ण प्रविष्ठात क्ष्काप्त क्षेत्रीम (प्रांत षारताता हत। शैहामि यात्रिक शैष्ठात्रक हेश खेरकुछ धेष्य। देवकानिएकशे वरनान, शी-निषाम मन्त्रमा बाहण कत्रितम, चामरत्रारशक जैणकांत्र हम अवर एश-मन्नीरक्त अध्निक्षांत्री पाश्च इक्षि हत्र। त्रांत्रत्र अञ्च भित्व अदः छेश तम्प्राम भाषाम् कान भीत्र भीत्र भीत्र भीत्र भी

শুক পৌদায়ের ধুমে বায়ু শোধন হয়; উহার ভন্ম স্থাম-নিবারক; উত্তার শুক ভনমারা দক্ত-ধাবকে व्यमत्त्रोरश्र छेपकात्र रह धदर गठा श्रीमह कृतित्र शत्क छेदक्षे ज्यान्छ मात्र। नीकि-मात्रक द्रिकारक्त

্ৰভ্ৰথৰ, জাহার ব্যবহার কৃষি বাণিজ্য-ধৰ্পপ্ৰভূতি সকল কাৰ্য্যে মূল কারণ, গোঃ অইজস্ই তৰ্দশী महाभाभ-कारन करीत-काश्रीक्षकाश्रके न बजी हरत्रन। मस्मा छेश्त वरामत डेत्रिक षण कि ट्रक्रमा च्यांतक्षक वनित्रा, ज्यार्थाजा ज्युन्य डेभान इरवारमगीमित क्यां कतित्रा निर्वारक्त, (बरिवस ब्रायरिमार् শাল্পে ক্ৰিজ হট্যাছে। যুত আযুদ্ধ, পবিত্ৰ ও প্ৰদতেধ্বৰ্মক; কিন্ত, অসুফ যুত ভোকনে যায়)-হানি হয়। শিথিব)। অভএব, হে ভারতসন্থানগণ। গোজাতির উন্ভিন্তর জ্ঞ বন্ধ-পরিকর হউন। ভারতে যে, গব্যধীন ভোজন বুধাভোজন এবং খুড-হীন মাংস বা ব্যঙ্গন জাহার করিলে, স্বস্থতিরও লক্ষী छा। हा । डिलिका-समस्रेट डिप्पन दिनिश कनम्मामित आप भवारे डिप्करे माष्ट्रिक पार्शिक पार्शिक प्रांट धनमांख खरा एक्कान कीरिक थानिक श्रिक्ट हहेता, त्करन कृषहे ताहे संग। कृषणांगी वाणिष्णं धुनिक-भा हैश्य मृहोत् भूती क्ष भा प्रारं यक त्रमहे विक्रमांन आहि ; अन्छ डेहार्ड नवर्ग मिर्ड हम् ना। त्याय हम द्वात्राद्यमिक-पर्षाक्ष्मारत्र चानिष्ठेक्य क्ष वनिष्ठाहे घृरक्ष नवन प्रश्रांश क्हेरन, श्रीयोश्म फूना क्हेर क बनिष्रो, কুডজে আংগ্-সমাল গোধনের প্রভিত্ত ডকি-শ্র ক্রেন, এবং কোনরাপে উহার অনিই হইলে,

क अस्ताष्ट्रत अरबुक प्रत्के मन्त्र मियान त्माय रहा मा बनिहा, जानक खाँन राखाम छ क्षे त्म छत्र। यावरात जात्र ।

গো-দেবা মহৎ কাৰ্য বলিয়াই কি দেই গো-বান্ধা হিডকারী ক্রিনা-গুলিনবিহারী আদৰ্শ পুক্ষ **अक्रिक कार्या निर्माठन क**त्रिया यहः द्राथानदृष्टि खतनष्यन कविह्याहित्नन।

অসভাসকল আনতিই সমান প্ৰদৰ্শন করেন, ভখন যে কৃতজ্ঞ সাধ্যজাতিকে-বীয় ইইদেবতার মূৰ্তি পূজা वक्-क्रेषद्र-वामी वा कएए। भागक वरनान, त्राहि छाशामित स्मा। स्मामना (स्वीनक्षाद्र-विरम्दिय स्था) প্ৰকাইইতে ভূণপৰ্যাক্ত সমতে বস্তুতেই অসীম অহিতীয়-জ্ঞানে সেই একমাত্ৰ প্ৰমেশৱের সন্ত| অস্তুত্ৰ করি। বেমন মহৎ, ফুন্র, যে কোন রাজ-পুক্ষের যথোচিত দখান করিলে, রাজভক্তি প্রকাশ করা হয়, উদ্ধেপ অসম যে কোন দেবতার প্রায়ণ্ড এক ভগবানেরই প্রা করা হয়। শক্তির ষঠাশোমরপা ষ্ঠার পৌরাণিক কাল হইডেই ভারতে প্রতিমা পূজা বাহলারূপে প্রচার হইয়াছে। প্রতিমা পূজা সন্মবিস্তর সকল দেশেই ছিল এথনও থবন কোন কোন বিখ্যাত মন্ত্রোর প্রতিমৃত্তি নির্মাণ করাইয়া, সভ্যু, ক্রিভে দেখিয়া, বিধার্থগণ কি জন্ত বিদ্ধাপ করেন, তাহা বুলি না। সেচ্ছাচারপ্রিয় বাদা মহাশারেরাও নিরাকারের চরণে ভক্তিপূব্দাঞ্জলি প্রদান না ক্রিয়াও ত থাকিতে পারেন না। কেহ কেই ছিন্দুকে প্ৰতিমা-পুৰাদি প্ৰস্তাব। (12-8-2)

ğ

दिमानिक जिन्छत्र छेन्छ्राम त्य खिकांत तथामार्क विशिनिज रुत्र, मृत्यमाश्राम ब्याप्त कथनहे त्मन्नाम रुष्ठ मा। 🗝 উহাদের ভাবাবেশ ব্যতীত দেবমুণ্ডির খড় মাটী মরণে কি ওরূপ ভাব হয়? কিন্তু যেমন ভূগোলশাল্লৈ বুবিপুন্ন कृष्टे यञ्च, हेश्र कृष्टीख तन्त्रुम :--धूरतीष्मवानि मगरत्र मजन खनता कुमकत्रमतीमरगत अञ्जिम ममुर्थ थाकार् ব্যক্তির মানচিত্র অঙ্কনে যন্ত্রাদির দাহ্যি ৬ াশক হয় না, সেইরূপ আ্যুদ্শী জ্ঞানির পক্ষে প্রিক্তিমুর্ডির বিশেষ প্রয়োজন নাই; এইজন্ত বনবাদী শ্ববি 🏎 🕠 রজোগুণাবলমী রাজা বা গৃহস্থেরাই অধিকত্র পুজা বিনি করেন, তিনি কি জাজাশক্তি মহামায়ার পূজা করেন না ? অপর জামরা মুগ্রাদি জাধারে বীহার আহ্বান বা বিদৰ্জন করি, তিনি নিরাকার ও এত ফ্লামে, বাক্য মনেরও অপোচর। জড়ই বদি জামাদের উপাশ্ত ছইত, তবে প্রাণ প্রতিগার পূর্বে ও বিসক্ষনের পরে প্রতিমাকে কেহ্ট স্পর্শ করিতে জনক হয়, তত্ত্ৰপ আমাদিগের স্থায় চঞ্চল-চিত্ত ব্যক্তির পক্ষে শ্রদা-ভক্তি-আক্রণাৰ্থ প্রতিমাই উৎ-अध्मिष्टित (मन् उर्पत्र इरव्रम । कुर्गिरमन्त्रि कार्या श्राक्ष्रक् छेपपुक । मक्ष अ माकांत्र अब्धोन भाष्टे**ड मा। ए**यत्रम मान्निष्ड या शासक मिथिया, श्रीयदीत ष्यांकांत्र निर्धि कत्रा मायांदर मा ख्रेषा, श्रुविधा-

নিরাকারবাদী মহাক্সা ব্যাসাদি মুনিগণই ব্যক্তি বিবেচনায় শাকার উপাসনা করা জাবশুক বলিয়া

এবং উপাদনাদি ব্যতীত নিশ্বাম নিরাকারে অধিকার হয় না।

গিয়াছেন; কিন্তু, আকর্প্য এই যে, ফ্রথর জানাভিমানী আজিক মহাশরের। (বুরিতে না পারিয়াও) ত্মীয় বিশাদের বিক্ল প্রবি বাক্যের অংশবিশেষে জ্লাজ্য প্রকাশ কর। মূথ তা বোধ করেন না।

হইতে পারে, বোধংম, এইজন্তই নরমূত-মালিনী ভয়ানকা কালী-মুজিই কলিতে চিত্তস্ত্রবকারিণী ও জ্প- 🕞 থিনি বাঁহার উপাসক, ভাঁহাকেই তাঁহার দর্মশ্রেষ অনতঃ অভিতীয় প্রযুবজা জ্ঞান করা আমাবভাক। দিনি প্রদায়িনী হইয়াছেন। এরপ হইলেও, জত্ত দেবতাকে (গোড়ামী করিয়া) অশ্রদা না করিয়া, এই জন্ত শাত্রে গেগানে গাঁহার মহিমা বর্ণনা হইয়াছে, ভিনিই সর্ধশ্রেষ দেবতা বুলিয়া কৃথিত ছ্ইয়াছেন। প্রতিমৃতি শব্দে প্রকৃত বস্তুর অত্নরণ করন।। দাধকের প্রাধ্নায় বা অন্ত কারণে দয়য়বিশেষে বিশ্বরূপ-थात्री जगवात्मत माना क्षकात्र मुर्खि रुहेग्राहिन। शुत्रात्म चार्छ, मक्षयक प्रगत्म मिरदत त्यार्टमार्थ मम पर्हा-বিভার জাবিভাব হইয়াছিল, কালী তাঁহার প্রথম মূর্জি। কলির লোক সকল নিতান্ত সুৰ্ধলোচিভ এবং ইন্দিমণরায়ণ, স্বতরাং, বোড়শী প্রতৃতি যুবতী মূর্জির উপাসনা করিতে গিয়া, হ্য ত অনসম্ভাব উপস্থিত ঈশর দর্মতা বিরাজিত, এই জন্ত লোকে বলে, সাধিলে টেকীও সিদ্ধি হয়।

যেমন শরীরের যে কোন ছান চাপিয়া ধরিলে, দর্মান্ত দক্ষারী রভ্তের গতিরোর হ্ট্রা প্রশাশ-প্ৰায় হয়, নেইনণ অন্ধবিখানেই হউক, আৰু প্ৰকৃত ঘটনা ধাৰাই হউক, বৃষ্ণ প্ৰজ্যাদি কে কেবাৰ প্ৰতে (या काउत रहेश जाजावनप्रता विकाक्तिक लाउ मन्मिकि-मर्यात डिपानमा कतिरानहे, जेनै मिक क इस श्हेरक भारत, धहें कका त्राधित आखितक खार्थनात्र वाकि विल्लास्त छैनेत्र वा तुषक त्वाड्डो मिरज (দয়াপয়ভত্রভাহেভু) দমন্ত্র দম্য দেবভার আবিৰ্ভাব ছ্ইয়া দৈব ঔষ্ণাদি বিত্রিত হয়।

कीनी नाम अवन्यात्त्वरे (जीवत्क जान कतिया) निनायन करतन; धरे कन्न, परम्बती मिक्ना-कानी नात्म कीर्छिछ। शरमन। कानी अमीरण दिनमारहन, किल्डमाभिनी दिनमाई कानी नाम मिष्म्भिकानी मःखार्थ। -- निर्वागत्त वित्राह्म (य. मिक्न मिरक श्र्याभूख यम वाम करदम , जिमि रहेशार , ष्रह्या, कनिट प्रश्र्यक कानी त्रवा कहा जावश्रक। ज्याखात वनित्राह्म, मांस्करक षथां ज्यिषिक मिक्किनी मीन करत्रन अत्रः त्र ममनकातिनी दिनिन्ना, मिक्किनोकानी नाम हहेग्राएष्ट् । मिक्किनाकानी शुका-वाव्हामि ।

मश्मित्रीष-उत्य दिनश्रात्छन (य, मर्स्ष्क्र मश्श्रक मश्काना थे गृहार वा श्रहादम, विनि योकामत्मे সগোচর ও করী-হতী এবং সাকারা হইয়াও নিরাকারা, এবং যিনি শীয়মায়া ঘারা বছরূপথারিণী তিনিই भक्रमं ष्रामि-समिती, उत्पामही ष्रामा कानिका। कनिरङ भारक प्राप्त कामीमरङाभामाक है (बहै। ক্লিডে পুণিফলপ্ৰদা কালীই শীল্ল দাধকের দৰ্শনাথ সমূজ্জা হয়েন। বাহ্মণ বা শুস্ত যে বৰ্ট হউন কালী নাম জপ করিলে, সকলেই শিবজুলা হইবেন। বেমন এক সমুদ্রহতৈই নদী সকলের উৎশীত, ডক্রপ

किनाउ उत्रमारखत्रहे क्यांपामा कीर्छि रहेशाष्ट्र। उत्ज बित्राह्म त्य, किन्ति क्यांक मजामि विवरीम 😼 लाग रहेगा पाध्यात, धक्रांत मर्त्रवर्षे थींग मक्न विषय कुनापिकांत्री रहेगाहिन; बारे मक्न চলিবার তাঁহাদের তাদৃশ শক্তি নাই এবং বর্ণসম্ভর জাতির উৎপত্তি ছইয়া, জাতি-চতুইয়া মিনিত করিবার খা নাই। প্রলোভনে পড়িয়া, সবৃধিতে তান্ত্রিকী সাধনা **করিতে পিয়া, আন্ত্রেক্টভায় কুল** ठड ।—डडमाड कारलाहनाध त्वांषश्य (य, एम्म-कान-भाख-वित्वध्नांस त्वमश्राभाषित भन्न मरर्शंत्र छोत्र मिस्तीर्ग। कनिष्ठ्रंश नामा कांत्रत बान्नुनामित्र ष्मत्रमिष्ठ कथिष्रोत्र, दिनम-मानीक्यमात বিবেচনায় সর্ববংগর সমানাধিকার-দশাদক ও সহজ্সাধনজায়ন্ত ভত্তর-শাত্ত্রের প্রাস্থাব হুইয়াছে। ভন্তমণাত্ৰ দেখিতে সরল হুইলেও, উহার আচিরণ বড় গুরাহ; ওক্সর নাহাধ্য-বাজীক উহা, আপ মহানিধাণ তল্পে বলিয়াছেন, যেমন খেত-পীতাদি বৰ্ণ ক্ৰম্বৰ্ণে লয় হয়, তদ্মণ সৰ্ব্যন্ত কালিকাভেই লয় হ্ইয়া থাকে এবং যেমন দৰ্মবৰ্ণের জভাবের নামই কৃষ্ণ্যণ, দেইরূপ দাধকের হিতের জন্য নিরাকারা म्न क्षकृष्टि कानीर्रेट्डे बन्नामि (मय्जामिराग्न उँ५्राप्टि । নিশুণা কালিকার কুঞ্বণ কলিত হইয়চ্ছে।

ক্রিয়া থাকেন। যে দকল শুদ্র, বেদ-মন্ত্রে অধিকার নাই বলিয়া ছঃথিত, ভাঁহারা ভাঞ্জিক সান-

নিগতি হয় তাহাকৈ নিগম বলো। পূৰ্কে ৱন্দার ম্ধহইতে ৩ শুলচিত ভগবস্থাবাপল মুনিদিপের মুখ তত্ত্তর একটি নাম আগগম। ইহার দাধারণ তাৎপর্গাধ, যাহা আগগত হয়, অর্থাৎ অনক্তমুল জগৎ-হ্ইতে কমেশঃ স্কুম আব্যুটেতজ অহান যে শাহাহার। জনায়, তাহা আগ্য এবং যাহা অস্তরেহটতে স্বতঃ হুইভে যে দকল বাক্য নিগম হুইত, উহা শুতি বা আগুৱাক্য নামে অভিছিত উহাই বেদ। একংপ नाना भीरण कि यनिन रूखप्राप्त, न पारमत याजाविक अङ्ग्रिष्टि नारे ; खुरुतार ; वाधिक जाठात উপাদনাদি প্রয়োগদারা স্তত্তংশদির প্র_{েন} : এইজন্ত ক্রিভে তত্তের প্রাধান্ত। **ङर्गभ-मन्द्रा। शुक्रांकि**त्र मग्रक् ष्रञ्जोत्म दित्भव गत्मार्यांनी रुख्न ।

হিন্দ্ৰকৰ্ম-মালা

দীক্ষা।—বিশ্বদার-তল্তে বলিয়াছেন, ঘাহাহ্ইতে দিয়া জ্ঞান লাভ হয় এবং পাপ ক্ষয় হয়, তাহাকে দীক্ষা বলে। পাষাণে বীকা রোপণের ভাষে আদীক্ষিত ব্যক্তির জ্ঞপ-প্রজাদি নিক্ষন। যে কোন হানে থাকিয়া, যে কোন শুকু মুখ চ্ইতে কালিকা-মন্ত্ৰ গ্ৰহণ করা যায়। धर्य-वीक वनमप्रक्र, উभामना-वाति मिथ्यन कतितम, मगरत श्रुफन नाष्ट कता थांत्र]

শারে বলিগাছেন যে,—"য ইছুতি হরিং স্বর্ণুং ব্যাপারাজগতৈরপি। সমূদ্রে শাভ-কল্লোলে সানমিছতি ছুৰ্ছিত।" অধীৎ বিষয়-ব্যাপার সকল নিবৃক্ত হইলে, হরি স্মরণ করিব, এন্নপ ইচ্ছা করা জার সানাপী হইয়া, দাগ্র-তীরে তরঙ্গ-শাঞ্জি অপেকা করা একই প্রকার জ্ক্দির কার্য। অতএব, বাব্যকালেই মনে করেন, প্রাচীন বয়দে বিষয়-বাসনা ভ্যাগ করিয়া দীক্ষিত হ্ইব, দেটি ঔদাস্ত-ভাবের কথা; কারণ, িবাদ্ধাণের উপনয়ন নংসারের পারেই এবং শ্রের ও সেই বয়সেই দীক্ষিত হওয়া আবশুক। অনেকে

कतिरत, तमहे श्रमाकात्म वा उदश्रक धक, धक्श्रज वा उदश्रो किया धक्र का का का नमां का कर्यन গুরুমাহাজ্যাদি।--গুরুকে মন্তুরা রোধ করিবে না, রন্মায় সান্দাৎ নিব জ্ঞান করিবে। গুরুকুপা-বিশেষ দোষ না থাকিলে, শুকু-কুল ত্যাপ করিবে মা, (কারণ স্কুডি থাকিলে, সাধনাবলে শিক্তকৈ সিধিদাতা, ব-শক্তে পাপদাহক, উ-শকে শস্তু, এই তিন মিলিত হ্ইয়া, ওকনাম হ্ইয়াছে। শালগাহিত बाडी छ (मवछ। क्षमन्न हाम्रम मा) मर्त्यमा महत्यांत्र भएता वा खरभएता छक्र दक थानि क त्रिद्ध। (मवछ।, मज्ज अ

(ক্ষ্মাইকী প্ৰার ভায়) দীপাষিতা কালী পূজার প্রশন্ত কাল, ইংগকেই নিশীথ বা অধিরাত্তিপাপ ধন-পুতাদি দম্পৎনই ও আনুমুক্তম হয়। দীপাধিত। পূজার প্রতি বৎসর কর্বায় এবং অক্রণে দোষ শুতি থাকায় ও করণে নানা ফল-শুতি থাকায়, ছুর্গোৎসবের জায় ইংচাতে নিভান্ধ, নৈমিত্তিকৰ ও কাম্যৰ আন্তেয়। কার্ডিকী জনাবস্তায় অধিরাত্তি-মন্তে কোটী-যোগিনী পরিবৃত হইরা, মহাকালী আবিভ্ত। হইয়াছিলেন; স্তরাং, ইহা জম-তিথির ভায়, কভাকি বা তুলাকিকালীন দীপাধিতায় দিতীয় অহিরের শেষ দণ্ড এবং ভূতীয় প্রচরের প্র্যাদিত এই দ্তদ্য কলিব্যাপক মহানিশা रान, धारे कारन मकन छै। दिश त्नारक शहे आ मा शृष्ट्री कतितम। धे क्षांच्छकांन छे छ मिन नोछ হ**ইলেও সকলেই চতুৰ্দশীযুক্ত জ**নালস্তায় পূজা করিবেন। উভয় দিন ঐ প্ৰশস্তকাল নাপাইলে, मिरा **७** तीरवत्रा श्र्रेकीम्टन धरः भर्षाहाङ्की नात्कता भत्रमित्न भक्ष्य मृष्ट्डीमि कानगाभक ज्यारकाग थुका कत्रितन। त्यश्रुत्त भूर्त्विमित्न एडीय क्षश्रुत्र व्यथम मुख्यम् मांच भरित्रा भन्नमित्म खरूमधमाज জাধিক প্রথম প্রচর প্রাপ্ত হ্টয়াছে; তথার উভয় দিন প্রশিক্ত কালের অভাবে পরদিন প্রথম প্রচ্রের গৌণচাক্ত কাৰ্জিক মাস উল্লেখ হইবে। সকল তাত্ত্ৰিকী কাৰ্বোই (সৌর-মাস-হেতুক) রাজ্য লেখ হয়। শেষাত্তে অপ্রশত্ত কালেই পশাচারীদিগের পূজা হইনে, নচেৎ কালের অভাবে কুডা লোপ হয়। ক্ষিন-পুজ। —এফ্-বিক্ৰাদিকারণে রোগশোক্চঃথ বা ভয়প্ত্তি-ছারা ক্রেশ উপস্থিত হ্ট্নে, কিষা

কোন সম্পৎ বা জয় কিয়া মুক্তি লাভি বাসনা থাকিলে, সর্ধ-জুঃধ-নাশিনী, সর্বসিদ্ধ-প্রদায়িনী জগদ্মাতা কালিকার পুঞ্জ। করিবে। কাম্য-পূজাতেও সম্বন্ধ-বাক্য 'উপস্থিত-জ্বরাদি-রোগ-খটিতি-প্রশমন-পূর্বক দক্ষিণ-কালিকা-প্ৰীভিকাম", এই প্ৰকারে ঘোকনা করিলে ভাল হয়; কারণ, দেবতার প্রীতিকামনায় কামা-প্ৰাকাল ।— অইম্যাদি পৰ্কতিথি প্ৰ্যানক্ষত্ৰ-মুক্তা লব্মী তিথি ও শক্তিমকলবারে পূজা क्या योत्र अवर खक्यांटत विठीया वा मन्या, शनिवाटत श्रिमा, मक्षमवाटत क्यांवजा हहेटन, श्रुका শৌত অবং রেবতী নক্তর্ভ দিনে পূজা, জপ, প্রকরণাদি সমত হৈ প্রশৃত্ত। কাম্য-পূকায় বিশেষ-কর্ম করাই শাল্পের অভিপ্রায়; উহাতেই সর্বাভীই লাভ হইয়া থাকে।

ž

मांशाद्रभ वावश् । — निज्ञामि बिविषा शुक्षा माषिकामि-८७८म छेड्य, मधाम ७ ज्यसम, धहे छिन खकात्र । तिवाछात्र ज्ञाप छिडा कतिया, जिक-सन्ना-शुक्त मानामापहारत्र (निकाम) य शुन्ना, छारा माषिक,

বিধান-হেছু কার্তিক, মাদ, ফাস্তুন ও বৈশাথের অমাবকায় অর্ন্ধরাত্তিতই পূজা প্রশাস্তা। এতস্তিন সর্বত্ত खक्द-मायन-ভाजांक व्यथम व्यव्त गाँउ रुरेता, भक्ष्य मूहुर्ख (मन मुख्सि) कांन व्यम्बद्ध, व्यथम व्यक्त्रत्र

শেষাৰ্দ্ধ দেবীর নিদ্রার কাল, স্বতরাং সর্পত্রই সেই কালে স্তব-পূজাদি প্রশস্ত নহে।

জাজাতে বা পরাথে দেবতার প্রতি-কামনায[ু]বা অন্ত কামনায় নানা উপচাতে শ্রদাপ্র্বক আগুণেবার

खेश्ट (मरी क्रिका हरमन; (मरका या मञ्ज क्षकारण दिरणम हानि एष । ভट्ड दनिशह्छन त्य, माठात्र 🂸 हमारकत्र भूष (मधी छिठिक नरह। वतः श्रृंका ना कता छाता, ज्यांक बनमनिषात्न हेटे-शृंका कतित्व ना, ्कामा देवमिष्टक-शृकात श्र्मितिस श्विमानी ७ मध्यक्तिक श्रेरव। जिभामा निमिक्त कामा-शृकात মুগ্ত অসমধে শুকু শুকুণত্রী বা শুকুণ্ড্ব্যতীত অন্ত প্রতিনিধি দিবে না। ইট-পূজাকালে অন্ত डिनमिडिंड जार महामि भागम कतित्व धरः ध्यक्षि आठत्रन भारकता दिक्शामित जार ७ दिकारदता ভায় যে পুজা, ভাছ। রাজীদিক এবং আপনার বা পরের জন্ত অহ্ষার-প্রকাশার্থ যে পূজা, ভাছা তামদিক। मर्त्व अक्षाविशीन श्रुका कनका नरह।

* শশ্বিজ্ঞান আলোচনায়, বোধ হয় যে, বাদ্যব্যোথিত ধানির জায় দেহ-যন্ত্রের নানাব্যব হইতে উৎপন্ন কীণ্ अमिश्रिमि, मिलिङ हरेया, वायून्य (कर्ननानी) मात्रा धक्छ वाङ हनाः यह नीत्रपंछ रूप, [त्वाय र्य माष्ट्रकामि अभिन्,

শাক্তাদির ভাষ ক্রিবেন। গুকুর নিক্টহ্টতে বা তম শাস্ত্ইতে শীয় ইই-মন্তার্থ * জোত হওয়া

मागरकत्र क्षात्राज्यन ; উशाउ कनाधिका काइ

भूकोकाम ।--प्रीएकाब, भर्ताङ, त्रामगीरभ, य्रङीनिर्धत नमीरभ, यहे-अग्रभन्यक्त-आम्बाकी ভুলদী বা বিঘাদি বৃক্ষ-মূলে, শশানে, চতুপাথে, গুক্তবনে, দিন্ধনীঠহানে, শৃহগৃতে, কিছা বে কোন छिङ-श्वितकत त्रयतित्र निक्कम श्वास्त श्रेका-क्ष्माणि केतित्। कंपकीत्त निष्ठाष्ट्रत करेतन, क्रम विकल इत्र। অক্টি, ব্যয়াগনভান-বোধক ও তাড়িত-স্থালক ক্রিয়া]; মন্ত্রকলও এই ছলঃহুয়ে য়চিত। ইহার অপ্বোধ না হইলেও, কেবল উচ্চারণই এবণেত্রিরের তৃথিজনক এবং ইহা চিত্রিয়কর ও চৈত্তশান্তির প্রকর্মক এক্টি সাংবার অধান উপাদান। অনেকেই অত্যুক্ত করিয়াছেন যে, কতক-ওলিন অপভাষায় গুটিত মন্ত উচ্চারণ ৰাৱা তাড়িউশাক্তি সঞালন (ঝাড়ান) করিয়া, গুলী বাজিলণ মানবের ও পঞ্চণকি অভ্তির উৎকট বোল 公開機 木一種 有 華一本有一層後 不在所 しんし (হামেণিয়ম্ বাজ্গান বচ্তুর বাধা স্বরের ভার) শক্বিজ্ঞানিং সাধক ক্ষিদিগের এণীত মা শিব-এণীত হইবা, বাবে হরিণে একতা জীড়া করিত; এইজজই শাতে "শক্রক্ল' বলিয়া কথিত হইন্ছেল। শিবেজি বীক্ষ্ শুমি নামাধ প্ৰদাশক, অধ্চ দাকেতিক শাদের ভার নংকিও। অংলোচনা করিবাই, বিজেরা ক্ষেত্রই ফ্রকলের মুপ্ শিরীময় কারিয়া থাকেন এবং মত্রশাক্তিতে হজ্জর সংগ্র হিংসাজনুতি ও বিয় নিবারণ করেন, অন্তএব মন্ত্ৰনকল বে মনোমুক্তকর ও সাক্ষাৎ মুক্তিপ্রদ হইবে, ভাহাতে সলেহ কি ় এইকজ্ঞ ডপোণনে বেদলনিতে সোহিত ব্ৰিকে প্ৰেৰ, কিন্তুপ প্ৰালীতে প্ৰেল্ড গণস্থলিত মন্ত্ৰ বচনা কৰিতে হয়, ভাহা জ্যাসনা জানি লা, এক্সক্স উৎকৃষ্ট ভাষা ও ভাব ধাকিলেও, আমাদের রচিত মন্ত্র ন্যাহ। ((1/2-1/2))

7

ভাব।—থে ব্যক্তি, সকল দ্বেতার ও গুরুর সেবা করেন, নিত্ত্য সন্ধ্যা-পূজা-তর্পণ 👁 আন্ধাদি করেন, बास जीर मर्गनामि (शृहस्थाहिक) कार्षा करत्रन, छोहारक 'भभागती' वरता । ब्याहरत भाव-कार, भरत मझनीटन बीब रूखना यात्र ना। कनिएड मिरा ७ वीत्र जादे, क्यन नक्छात्र बाना स्त्रानिक বীর ও দিব্য ভাব জাচিরণ করিতে হয়। বাহার মন্ত্রিদ্ধি হইয়াছে, তাঁহদকে 'বীর' বলে, কেরল क्रेरव। बहुठक, वाष्ट्रमांशात ७ व्याम-भक्षक परमरह ना कानित्म, मिक्रि मांच रत्र ना।

छम्म किया क्ष्म-भाता क्षक्तिमाका दिशावत जिल्ला कि कतित्रा, क्मशा-श्रत त्रक्षतम्म, निम् त्र किया 🍑 क्ष्य-बांता विन्सु पाष्टि कतित, जगरश तिवीत्र चल-ठिक शात्र कतित। भरत्र क्षारत (अञ्च भा দিথিয়া, ডক্সধ্যে ভাষা-বীক নিগিবে এবং কণ্ঠত্পে বৰ্জুলাকার ভিলক আন্ধিত ক্রিয়া, ভক্সধ্যে मोक्किकिक ।-- ज्य ध्यम या मृष्टिका षाजार बन बाग नगार जिल्ला करिया, कमर्यामाण শক্তিবীক নিথিবে, জংপরে বাছ্যুরে বোর পাত্তর ভার দীধাকার ডিলক করিবে।

टिंग्डिक्टिक्टिन्डिट-श्रका-यूख

স্তাকারেণ দেবেশি প্রাবিধিমিহোচ্যতে। অতিবাচ্য চ সংকল্প ঘটং সংখাপ্য বছতঃ। মত্রেপা-

बनकर कार्कार मामाश्राकार उत्ता अत्तर। उन्कटेनध्राका मात्रभूका मार्गितर। बिनिधर विश्वक्रमां कुछानमां मार्क एकः। माममक मम्हार्का भक्तनाः नाम प्रमीः। कत्रकिः ज्ञानवार ধ্যা দিখ্যনাং ভতঃ। বাছিনা বেইনং কার্যং ভুত্তভান্মিমথাচরেৎ। মাভূকারাঃ বড়ক্ষ ক্র্য্যাদস্করমাভূকাং াছকাথানমুচার্য বাবে ডু মাতৃকাং ভনেৎ। পীঠভাসং ততঃ কুছা, আংগায়ামং সমাচরেৎ। विमिक्तः क्वाक्षक वर्षभामः ममाठात्रकः। द्यांगिमानः एएक। तर्मि पाणिकः जमनश्चतः। ध्वरः । खरा शांकर मानटेकः श्रृक्षनकटत्र । वित्यात्राह्याः भीत्राकाः भूत्रानिः मरनजकः। मुखानिक्यानः নুৰ্গং আগ্ৰহিন-বড়জকং। ধেৰাদিকং ততঃ প্ৰাণ-প্ৰতিষ্ঠা মূলপ্ৰনং। আজ্ঞাপনমঙ্গানি কাল্যা-निष्क व्यमुक्तत्र । वाष्मामीत्रितिकामामीन् महाकानः थानुकातः । थ्रमामीन् धक्नारिकिक श्रातिका अनुकाल । विकास छाउँ। त्यांना खानायामः छाउँ। कनः ममनीत्र मेमान् खानायामः भून-हाज्ञर । व्यवश्रः मचा महत्रमानि ठोजानक मम्बीत्रर । खिलिक कन्तर पुदा हाहोकः जन्तायर ज्यतीः। भिर्यास्त्रिकि मः किन्ना मः स्टारतम निमर्करत्र । जेमाजाः मधनः कृषा চাতान्। क्रिके । व्यक्ताः म्याहिरुवानाखष्यज्ञामः ममोऽरत्रः। वीक्षज्ञीमः उत्जा त्मिव बानिकः विकासं स्थाः-मृत्नान गः यां श्री नित्रमि छम्नम् मना हित्क। देनदकाः कि भिद योक्छ। विश्वक निष्मिष्ठता। সংকেধপ্রামধন ক্র্যামত্র স্মাহিত। আদার্স্যাদি বিভত্ত করভান্তভেলেশ।

लियो वृहस्त समित्रमें तममित्रम्य छित्त । त्यापातानः शूनः कृषा कृषिकः तम्पत्म कृषीः। कृष्यिः कृष्येः। कृष्यः कृषा विस्माणात्तः त्यामान्त्यः। स्माजनम्यानः कृषा नःशास्त्रः विस्धान्त्राः तुमान्ताः महम् महाकार्यभावता कुरामका वार्षा हु। छात्रका मान्यान मिन्द हो। हान्यान प्राप्त मान्यान मान्यान सीवकार मान्यान मान्यान सीवकार है। हिंद मान्यान सिन्द हो। हिंद मान्यान सिन्द है। हिंद मान्यान सिन्द है। हिंद मान्यान सिन्द है। हिंद मान्यान सिन्द है। हिंद सिन्द सिन्द है। हिंद सिन्द है। हिंद सिन्द सिन्द सिन्द सिन्द है। हिंद सिन्द सिन् सिन्द सिन् क्षण मिखान्। किना। देनातकः किकिर भीकृत् विश्वक निष्क्षम्।

জাপ দক্ষিক্রালিক। পূজারন্ত্র।

मुआकारिन जानम्म कितिल, (रिविकि जानम गुर्मक) "6र बाजामान हाक् वाहा," এह माझ जनकारी जानम स्थापन कतिया, उत्ताम हक्षा, जिन्दान प्रकृत, "उ हो: विकन सर्वनः न्निक्ति भवाशास्य विकस्तयनात्र हुए" धडे माउड क्र ७ भीन छोकालन करिव। 'धे तिविषः, खानुकः

भेदन भक्त छन्। हैं पाकितन, यथाणां कि कता थेज़ा कतित्व धन्त भानीति छत्न छक्त्यत्रन रे किछ। मीमाक्राक्रमकृत्रम जिन्नभाषेत्र किछाएत भीगः हुः कहे एक नमः॥ स्पृष्टः त्रारमा ययः कारमा दूर," मत्त्र शुक्षात्राम मर्मनश्रीक "क्टे" यत्त्र शृकाष्ट्रीय (श्राक्षन कत्रिया, उत्काप-नामार्थ क्रिंटि "क्री " अहे गड निथित । ["उँ मिन-धित तक्षिनि महोखिजिमार्व क्षेष्ण त्रक हैं; कहें," अहे मध्य तडीकान त्रका-भूत्रक भूषा कतिया, हहे-शूकार्थ ष्याखा तहेत्त। भत्र यथामिक शत्काभागातिष्वाता निव भूषा মহাভূতানি প্ৰ হৈ এতে শুভাশুভয়েছ কৰ্ণোনৰ সাক্ষিণঃ॥ এই মন্ত্ৰয় পাপ-কয়াৰ পড়িৰে। ्षा क्षा - कर्षा विष्य कि का कि कि कि विष्य कि विष्य कि विष्य क्तित्व। [श्रृबक्ता अक्ष्य भ जारा (मथ]। वृष्क्रम खर्दर मिथी वृष्का कृत्रित।

本国和,

ক্ৰেৰাচন স্বন্ধিৰাচন

ुन जिन जनामि धरेश शुर्वक महण्य कतित्त,-विश्वरत्नाम्

एम्ह्या जन्य, क शुनार हेजानि

অমুক-গোত্ত ত্ৰী অমুক-দেবশৰ্মা (অমুক কামনা প্ৰকিক) ত্ৰীমদান্ধ্ৰ কালিকা-দেশদ্য জয়কে মানি অযুক্রাশিক্ ভাষরে অয়ুকে প্রকে অযুক ভিথে

প্রতি-কাশঃ জীয়াদ কিপ্কলিক। পূজনমহৎ কার্যথা।

ুমকুম্পায়েক্ট,—দেবোবো—ইত্যাদি (এ৭৪ পু) মন্ত্র পড়িয়া, "ওঁ মহন্দিগভাপাঃ

विश्वानम्।--वि महेशा, "क्रीर" मह्य मर हामान ' ले " मह्य मर माया সিদ্ধন্ত নিদ্ধাঃ সন্ত মনোরথাঃ শক্ত ণাৎ বুদ্ধিনাশায় মিতাণামূদরায় চ। অরমারডঃ শুভায় ভবতু," এই মন্ত্র পড়িব।

"হ্রী" মুদ্রে ঘণাহানে হাণান এবং "হ্রী" মন্ত্রে জলছার। ঘট পূরণ क्तिया, -- '' बे शक्रां का तिष्ठः मर्लाः मस्मां का नार्षं मस्माः সরিভঃ সরাদ্দি জলদা নদাঃ। ইদাঃ প্রব্বণাঃ পুণ্নাঃ পুণ্-পাতাল-ভুগতা:। **मर्कजीवा**मि पुनामि घटे क्रक्छ मत्रिषिः॥" शह्त जिश्व घाता वक्तामा

मंदी पादा मकन क्ष्रां कतिर्द्य, सथी,—'बिर' महत्र शलद, 'क्र' भरत कन, 'खीर'

(महबकाड, कविष्ठाड, नवर्गाहरूडाड, मारमञ्डाड, जिथिकाड, व्योगिकाड, क्यानिकाड। পরে পটে "এতে গন্ধপুতে ওঁনমঃ ফ্রাকে নমঃ" [এই ক্রমে] ফ্রাকিয়, শিবায়, मिल फिरीकरन, 'तर' गरज मिल त, 'यर' गरज भूष्न, 'मृल' गरज मृत्री अवर "ड नात्रात्रनीत, मरेफार, मत्यरेटा, गम्नारेत्र, यमुनारेत्र, मिक्शोरनाटाः, मिग्गरकाडाः, हर को नाहा गरत थे ज्या प्रदेक वजुरक्त कतिरव। ক্রমণঃ প্রশাদি নমেণ্ড ময়ে পূজা করিবে।

भुक्क जिमदीत जावम कतिहा, ज्याना मधः, उँकगिनिधा ममधः া শুলাচ भर्म, যথা,—(মদ্পলে দেবীকে চিন্তা করিয়া,) মূলদায় উচ্চারণ हैं कूझारें म नमः, जैक्क क्लारिश नमः, जीवात्राधिरेम नमः, जीवाधिरिज्ञोत नमः, ढँउग्रोटेश भगः, कँउग्रवाहित मगः, स्मिशिति मगः, अँनीमारित ममः, सँममिति भैंगई, अवनाकारिश नगड, अमाजरिय नगड, अमुमारिश नगड, अ मिछरित्र नगडा।

'এই সকল মত্ত্র ঠিক্ বৈদিক আচদনের জায় মগাস্থান তথ্য করিব। मगरे। यार त्यानिनिष्ट्या नगः। नार नक्षतितः यार यम्नात्य, खीर नत्या, ারে, সামাজাধ্য (প্র ৫৩ পুষ্ঠা) করিয়া, সেই পরিশুদ্ধ জলদ্বারা ' ক্ষ্টি'' पर बहा श्रुकां एका क्या क्या श्रुक वात (मवजानरगत श्रुका कतिरव , श्रथा,—(बहु रीक्ष्युटका नीर शरमंगीय नयड । (धरे क्रिम) कार एकब्रानाय नयड । वार वर्षेकाय विरम्नोरमाजमा—मून गर्ड मिरामृष्टि बांता मिराविष्ठ जवर ' अख्रोन्न करें मध्य प्रिक्रिक्टी, के विमाल, के व्यक्तिशक्षात्र नमहा

800

অনুষীক্ষৈত্ব বিশ্ব এবং ভূমিতে গ্ৰাম পাদের গোড়ালি দ্বারা তিন বার আ্বাদাত क्षित्रो, टोम विष् ष्रभात्रा श्रविक 'को महत्र नात्रांठ मुक्ता-बांता त्याउ স্বধ্য শা আলোচাউল লইয়া,—ওঁ অপসপ্ত তে ভূতা—(এ ৫৪ প্) ময়ে हड़।हेश, — '& नर्कविष्टाधिक स्थातत हैं को हां।" यत्त्र जूपिड जन हिंगिहेरव

শঙ্গেল আসনভাষ্টি (প্র ৫৪ পূ) করিয়া, নৈবেজাদি উপচার—দ্রব্য যথাস্থানে पूर्णातक वामार्ट नजा मगर नम्मात । उ गुल्म गुल्म यहागुल्म युनुत्त স্পিন প্ৰকি শুষ্প গ্ৰিন করিবে; হথা,—ধেলুমুদা দেখাইয়া, 'ও শতাভিষেক नकास्मिक हुए कहे थारा, (शूरक्य त्मदीत जायक्षाम छिता कतिता) 'उँ হুং को वार्षा । এই ছই मक्ति कनग्रह । প্ৰকি বিক্রাধাণ পান করিয়া, वैकामग्रीय गुष्माठग्रायकी त है कहे यांग। जावाइन भरास शृक्षायका मिकामि मित्रा त्रामित्]। उद्भाता-'व बाजानत्म हुः करे याहा। व कार गाम, जाक ७ किन (जायन श्रंक हत्य ज्यान कतिया,--'त्रक त्रक हुर कहे अविष कृषि म्यान मुर्कक विमाद -- 'छ नवित वेष्ट हु हा को याहा'।

SOR शाकी महाम कार्या कार्यामा कार्यामा कार्यामा कार्यामा कार्यामा कार्यामा क्रियान ममड, अनिवासक्रात्मी च्याः, अन्तिनिज्यक्रात्मा नमड, पामित कुंगरानमाझ नमः, 'बर्टका' ब्र्नच छ उकाता शृक्षक जीमक्षिकानिकारिय नगः।

नित्रा, क्रिड्यांक्षा मन-निर्धेषन श्रेक्ट, '१९' यह मञ्डाक जन नित्रा, छ्डेचिति 🗹 🍤 केनाम तकारन खरकान कतित्व। शत्त्र,—'अञ्चात्र करें मत्त्र केटकांत्र जानावत्र १९ मुक्तां एए । क्रिटिश । उर्राह्म क्षित्र । उर्राह्म क्षित्र क्ष्में मधामा छ जनामिकाय-ज्यान क्रामिक श्रुक्क, व्याद्याता गाउँहा कतिरव; यथा,—जार होर क्रार सर अम्मिक्षिकानिकानिक ट्यांबा हरू जांबा (बहे क्रिय) जीव देश क्रिका, मार्क-कत्रका कि । - जेर कहा कहा गर्छ तकि महम्म तक्रिय मुख्य नहेंश, कीर महत्र कूर्य कन्नस्टान हर्गरन कतिहा, 'जेर' महत्र जार्यानगुर्सक, 'रह्मोंड' महत्र ক্রিয়াদি, কাড্ৰনশচকুঃ-লোভ-বাণশ্লাণ ইহাগত্য সুধং চিরং তিঠন্ত কাহ।।

[माङ्काद्यांन मक्ष्यहारम ८७ श्रुकी त्मथ ।]

भीठेकाम ।-- व्यत्तप्त इस त्राविता,-- जे जायात्रमंख्यात नग १-- प्रे करन (१म

ख्जांचारेम्, क्लिशेरेन्न, कामिरेच, कांचमात्रिरंच, तरेज, त्रजिध्यारेत्र, ष्यांचमारेम्न, मरनांचरेच, ভাগের ৩৩ পৃষ্ঠার ৫ পংজি হইতে—হীং জানাত্মনে নমঃ পর্যন্ত) কার্যা করিয়া, रमार समिकांत्र मीठेन किंत्र छाम कतिरव ; यथा, - के इंग्ड्राटेस ममड, (धरेकार) . उरुभित भूमें मत्त्र या 'दीर'-मत्त्र व्यांनीत्रोम कतित्रा, भाषामिन्छाम कतित्व; ম্ধা,—জক্ত (মূলমন্ত উচ্চারণ করিয়া) মন্ত্রস বৈশিক্ষিক ছন্দঃ अवस्तिक्ष्तानिका (म्वडा होर वीवर हर अक्टि: भूल'-कीलकर भूक्षमार्थ-इच्छेन्न-क्षिष्कारथं विभित्रभोगः। धकि शुष्ण-बांत्रा यथात्राम ष्णुणं कत्रित्,—[मित्रमि] के द्रेकृत्रवश्वरात मण्डा [मूर्य] डेकिक्ष्मतम नगड, [कत्तात्र] बीमम्बिक् के के भन्नारेंग्न, जेर के शंत्राभन्नारेंग्न, रह मों मामिनमहारक्षकणमामनात्र ममः

क्लिक्ट्रिस (मन्ड्राट्स नगड, [खरश्] हीर बीकांत्र नगड, [भागत्त्राह] हुर मन्ड्राट्स

नमः, िकत्रजन्माता मर्कारक । भूल'-कीलकांत्र नम् ॥ उद्दर्भरत, द्रांट जन्म-

এই ক্রেন্ত অক্ষাম করিবে। বর্ণসাস—তত্ত্বদুলু (প্রাধে পৃষ্ঠা) দারা প্রভাণে নমঃ, (थ. ६७ श्रुका) এই ক্রেম কর্মান করিয়া, হাও কদন্তার নমঙ্গ

नुष्णं लादेशी, यथाञ्चाम ष्णामं कतिरव,—[कतरत्र] जार मन्नश-इरेटक 'इर नुमाध-शर्याख, पिक्तिन जूटका 'धर नगध-स्टेटिक 'यर नगध-श्रीख, याम जूटका '७९ जमाशे हेट्र फेर नमशे-भगाल [मिक्न कलाग्र] 'अश्र नमशे-क्रेर जिंद नगड़े-श्रीराख् ६ [योम कब्बात्र] 'गर, नगड़'-ददेढि 'क्तर, नगड़े'-श्रीराख । हा हु हु

मर दक्का श्रीत्यां होता नि मित्र जिल्ला है नगर, जिल्ला हर, नगर, किर्मे

प्रध ममक, [स्तिम] मूल नमक नारक, निर्मा है। निरम] क्रीर नमक, [अदस् त्मोर नम्ह, [मिक्क्नवाक्ट] क्र नमः, [वामवाक्ट] बीर नमः [क्रिक्निश्यात्म] डीर नगः, [वामनारत] क्रीर नगः [शृत्के] (कार नगः॥

র ওঁ বিদ্যাতত্ত্বায় স্বাহা (নাভি হইতে নদয়-পর্যন্ত অ্পর্শ করিবে), ঈং ও নিব-ভত্ত্বভাগ। -- ক উ আত্মভত্ত্বায় স্বাহা (পাদাদি নাভি-পর্যন্ত ज्यन कत्रिर),

তত্ত্বায় স্বাহা (স্বদয়-হইতে মস্তক-পধ্যন্ত ম্পুশ করিবে)।

एमरम [इर,] छटश् [इर,] ग्रूरम [डीर,] मर्त्वारम [डीर,] जकि एका-हांत्रा यथाक्षान তৎপরে ঈ কারাত্রক কামকলারপা আত্মাকে (১) চিন্তা-পূর্বক, মূলাধার-वीकज्ञान , घर्षा,—खमत्रतम् ('गूल',] ललाछि ['गूल',] ज्व-गरधा ['गूल',] नाष्टि-ত্রশ করিবে। পরে, মূলমন্ত্রে মগুবার বাগিকভাদি (গু ৬৭ পুষ্ঠা) করিবে।

(১) डारशिश এই (य, माथक जोशिमारक (वाशिष्टात) आंडाऱ्य्रापक्षांभा रेजरनाका गाशिनी काष्यकाशिनो धरः क्रे कात्रकृत्य-यर्गऽक्षेष्ठमयक्षिभि (मबीज्ञा विश्वा कित्राना।

হইতে বদায়মু-পর্যন্ত (বিদ্নাতের ভাষ়) কুণ্ডলিদীশাজির চিন্তা করিয়া, সীয় ছৎ-

পুলে প্রেভাদনার্টা প্রত্যকীভূতা দেবীর রতুবেদিকার উপরে সংস্কৃত নানা

⁽⁽⁽一)

বিচিত্র পূষ্প কল ও পশ্চিপরিশোভিত এবং চন্দাতপাচ্ছাদিত মণিষয় পীসাসন . हिस्सी कंत्रभीखित (३) शुष्म महेत्रा, एमवीटक शाम कत्रित ।

निकिनीकानी-शाम #।

করালবদনাং ঘোরাং মুক্তকেশীং চতুভূজাং। কালিকাং দক্ষিণাং দিব্যাং মুগু-মালাবিভূষিতাং। সদ্যন্দিছন্নিরঃখ্জা-বামাধোদ্ধকরাযুদ্ধণে। অভয়ৎ বরদ্ধব मिकट्रीक्षांवर्भाषिकार। महारम्बद्धान् भाषार उथा हेठव मिग्रम्त्रीर कथावमन्त्र মুগুলৌ-গলফ্ৰয়িক-চক্ষিতাং। কৰ্ণাবতংসভা-শীত-শব (শর) যুগ্ধ-ভয়ানকাং।

ধ্যানাৰ্থ ৷—জভিবিজ্ঞাননা ভয়ানকা, জাব্:ায়িতকেশা, চতুজ্জা (ইত্যাদিরপা) দক্ষিণাকালীকে (১) উদ্ভাষারমতে এছলে ব্যাবিধি থড়াদি-মূ 🧷 ৫০ পূচা) দেখাইতে হয়।

(সাধকা) চিজ্ঞা করিবেন। বিনি বহিদ্ধির অগোচর ও পঞ্চাশং-অব্যৱ-মূজ-ছারারচিত মালাধারণ कतिएडाइन, वीश्र काथः ७ छेर्द, यामकत्रमम्बरः (यथाकरम) मछन्छिम भत्रमितः ७ बष्त्र। अतः छेर्द দোরদংক্রণ করালাকাং পীনোন্ডপয়েশ্ধরাং। শবানাং করসংঘটিতঃ কুডকাঞ্ হসমুগী। সৃক্কদ্ম-গলদক্ত-ধারাবিক্ রিতাননাথ। ঘোররাবাং মহারৌদীং শুশামাণয়বাসিমী। বালাক্যঞলাকার-লোচনত্তিত্যাশ্বিতাং। দম্ভরাৎ দশ্দিণ-ব্যাপি-মুক্তালয়িকচোচ্চয়াং। শবরূপ মহাদেব হুদয়োপরি সংস্থিতাং। নিবাভি- ड ज्यंशः मिक्किन भानिष्टात खाडत छ यत (खोमानीत जारत) त्यांजा भावे एडएक, विनि महारमरषत्र आत जिल् ণয় কৃষ্যবৰ্গ এবং শ্ৰামা (অৰ্থাৎ বাঁহার দেহ শীতকালে স্মত্য ও প্ৰীমকালে শীতন), যিনি দিগম্মী, যিনি ফক্ঠদংলয় মুগুশোলী-চ্টতে ক্ষিড-রক্ষারা-ধারা রঞ্জিবেরবা, শবশিশুষ্য িক্যা পালক্ষ্ত্ वापम्य । कर्णकृषणकारण वृक्त क्ष्यांत्र पिनि अयानका क्ष्यांत्रका, गाँकांत्र भूर्णापत्य उक्तकात्र मुख 🤏 क्षानिक জিহনা শোভিত হইতেছে, বাহার পরোধর-মূগল ফুল ও উচ্চ এবং কটিদেশ শবের সহল কর মারা কৃত্ত ছাতা প্ৰকাশিত, ঘাহার শব্দ জতি ভীষণ, ঘিনি উপ্ৰযভাবা এবং শশানত্তপ আলমে বাদৰীলা, থিনি নবেনাদিক (स्थम। (मोडा भारे टिटिह, मैशित मूथ (मर्ममा) राज्यमुक अवर ध्वीयत खोख रहेट गिनिड दक्क्पोन्ना

রভাতুরাং। সুধ্রসমূবদুলাং মোরাম্নুমান্তা নি ধোররাবাভিশ্চতুদিকু সময়িতাং। মহাকানে

विटबर्माम् ज्याप्तम (ज अर्राम्म) मित्रमा, ज्याप्तम् (प्राप्त) प्रमान । व्याप्तम् । व्यापत्तम् । व्यापत्तम्तम् । व्यापत्तम् । व्यापत्तम्तम् । व्यापत्तम् । व्यापत्तम् । व्यापत्तम् । व्यापत्तम्तम्तम् । व्यापत्त

बिला समस्क के मुक्तांस्वा (थ्रीका कतित्व। क्षेत्र ममस् करन समस्क के मुक्तांस्वा (थ्रीका कतित्व। क्षेत्र ममस् इस्त-मस्निकान साम ফুর্মওলের স্থায় রক্তবর্ণ লোচনত্রয় এবং উপযুগুপ্রি দংস্থিত বিষয় দেওৱাশৈ ধারণ করিছেছেন। নিনি [मियद**्क मिक्सलेक मर्थान (२कू**] मिक्साक्र्याली ७ मुक्स पुरमायाला । जनात मानन नारत्करम् । । - जनायाला । जनपरम् । जनपर्या । जनपर्या । जनपर्या । जनपर्या । जनपर्या । जनपर्या । দিকে পরিবেষ্টিতা; বিনি [দিগম্বের উপর দিগ্র্যীরণে জব্সিতি ফল অভীয়মান আয় হচতেছেন, সেন

বিষয়ে করবীর-পূष्ण-যন্ত্রই প্রশস্ত। অনেকেই বলেন, শুভিঙ্গাস্থানে 🗬 জু যন্ত্রের ক্থিত) পীঠদেবতার পূজা করিয়া, কালিকার পীগাজির পূজাক্ত্রিবেই মুখ্যা;--দাবতাক নাই। এই মত্রে কিয়া ঘটে 'এতে গন্ধ-পূত্র্য' ওঁ আধারকাজ্যার কাষ্ এই জামে (সা, ৩৩ পূর্কার 'আধার শজিয়ে নমঃ-হইতে ব্লী জ্বানাজ্বনে নমঃ' প্রকৃত্তি उ रेष्ट्रारेश नमः, (वरे करम) छानारेश, कियारेश, कामिरेश, काममात्रिरेश, একটা, মন্ত্ররপে কপানা করিয়া, প্রতিমাস্থানে স্থিরতর জাধারে दोड-त्मान-त्रक बता-थक्ि यञ्जभुष्म किया जिनकः

মহাকালের সহিত বিপরীত-রমণ বিষয়ে বিক্ষিতাচিত্ত, ও সূথ হেজু গাঁহার বদন প্রসন্ন এবং ঈষদ বিক্সিত পংখার নাগি শোভা পাইতেছে, এবং বিশান শলে কদ্রান কৈলাস, ভাহার দক্ষিণ শ্রু কালিকার निका-वाम्छान, तरहे] ज्यानज्ञन कांनात्त्र विनि वान करत्न।

त्ररेखा, त्रिकिशारेश, व्यानमारेश, मरमायरेखा, जेर क अंग्रेरेश, जेर कर

ধৌররাবাভিশ্চতুদিকু সমন্বিতাং। মহাকালেন চ সমং (বৈ সার্বিং) বিপরীত-রতাতুরাং। সুশ্রসমর্ণদাং সোরাশ্ন-मরোক্রাং। এবং সঞ্জিরুয়েৎ কালীৎ

विरम्बाधि कार्यम् (अ अर श्रेष्ठा) कतिया, जराजन रकामात्र किविवर छानिता, जे शामाद् यथानिक्टिट्य मान्तानानादा श्रृका श्र्कि, [क्र नर्डिट्यान् हरेएड (धन्न कुडनी (यानि अ यज्ञानि मूजा (ध uolus शृक्षा) धाममाना । जरम समञ्जर ७ भूकोछता (श्लोक्षण कतिरव । अहे ममग्र ज़ुभूत-मञ्ज-निषम दा कत-क्ष्यीमखरमय ज्ञाय बज्जन (जान्नज्ञ ५० जिन्यू । भीत मश्कृ विवय मखतामि थावन कतिर जर्जन, यिनि, [শিববকে দক্ষিপদ সংস্থান হেজু] দক্ষিণাখা াপী ও মুক্তা মুক্তাগভাগ [এরণ যে] কেশরাশি (ভাগ্) ধারণ করিয়া, শংরপ শিবের ক্দংয়ের উপর আবহুনি করিডেছেন, যিনি প্রচিভাবয়র শুগাল সমূহ ছারা চড়ু-मिएक भी बादाष्टिला. विभिन्न । किंगभरत्रत जेनद किंगमती मार्ग भवस्थि का क्लीयमांन क्षांत्र इते एएका, एथन मानानान्य्रवामिनी ॥

হিন্দ্ৰৎকৰ্ম-মাৰা

400

22 त्रोत्र-त्काभ-त्रक्तमत्रा-धाष्ट्रि यञ्जभूष्य किशा जिनम विनमा, इरात त्या काम এক**টী, যন্ত্রর**পে কম্পনা করিয়া, প্রতিমাষ্**ন্দে ফিরতর আধারে রাখিবে। কানী**-আবিশ্যক নাই। এই মত্তে কিয়া ঘটে 'এতে গন্ধ-পুষ্পে' ওঁ আধারশজ্বয়ে নমঃ, এই ক্লমে (স; ৩৬ পৃষ্ঠার 'আধার শব্দিয়ে নমঃ-হইতে হ্রী জানাত্মানে নমঃ' প্রান্ত ক্থিত) পীঠদেবতার পূজা করিয়া, কালিকার পীঠশক্তির পূজা করিবে; যথা,— विष्राप्त कत्रवीत-शुष्भ-मञ्जरे धमाछ। षागिकरे वालम, धांडिमाष्ट्राम षाम

মহাকালের সহিত বিপরীত-রমণ বিষয়ে বিক্ষিগুচিত, ও জুণ হেছু যাঁহার বদন প্রসন্ন এবং ঈষদ্ বিক্সিত প্ৰৈৱ মীয়ে শোভা পাইতেচ্ছ, এবং শিশান শ্ৰে কুদুছান কৈলাস, ভাছার দক্ষিণ শ্ৰুক কালিকার हेक्क्वोरेश नगः, (धरे करम) ख्लानारेश, कियारिश, कामिनाशिक, त्रतेखा, ताखिखित्रादेश, ष्यानमादेश, परमायदेश, जेर छ नत्रादेश, जेर कर क्रिका-वाम्छ्नि, तम्हे] जाणानज्ञान कानारत्र विनि वान करत्न। ্ প্রাপ্রাট্য়, হেষ্মীঃ সদান্দ্ব-মহাতেত-প্লাসনায় নমঃ। পুনশ্চ ঈ কারাত্মক-

भूनशामाङ्कत्र 'यर' यर या या मुल्याङ উচ্চात्र कतित्रा, मीप श्हेरज मीपाङ्कत क्षकारमंत्र आत्र भन्य मिरि काभक्लाज्ञभा ष्याचारक छिछा कत्रिश, भूनव्हात्र एनवीत थान कत्रित्व।

6 प्रमृष् कावजा कक ज्यात्यात्। त्यांगिनीकिः ममः तिव त्रकार्थः ५३४ नकि मारवाशभूस्क खमग्रिष्ट ज्यायात्र मिनठारक नामात्रक भय बाता क्राउनक भूष्ण आरताथन क्रा मम मर्दा।॥ ১॥ ॐ महाशास्त्रीखः क्रांत्रानम-विवार । मर्द्यक्रिक মাতরেছেছি পরদেশরি॥ । ও দেবেশি ভক্তিস্নতে পরিবার-সমন্বিতে हैता, व्यक्तिमित्त क्यांभन श्रुंस्क, ज्यावाहन मञ्ज भिष्टत्व, क्या, यांविष्टाः शुक्रियामि जावकुः स्राप्ति। ज्या

कालिक (मिव! हेश्माष्ट्रामक्नामक्—हेजापिकरम जावार्ज्ञामि भक्षमुक्ता-बान्ना ष्मांबाह्म श्रंकिक हर, मट्ड व्यवक्षधम कडिया, द्वार समग्राय मम्ह, धहे क्रारम समज्जारक ষড়ঙ্গ-বিশ্লাপাণজ্য ছড়ি-ঘারা দশদিগ্রন করিয়া, ধেনু-যোনি-আকর্ষণী-'अर जार द्वीर एकार रूप मह जीमक्षिक्कांकानिकांद्राह क्षांना देह क्षांनाड़'—बरे मूजारि (थ ८० शुक्री) त्मशैरिंशा, गांत्रजी भाठेश्वंक, त्मवीत्र उक्तकान कतित्रा,—

श्रीशा] मूल मुख डिकांडल श्रींक, - 'डक शमनाश नमः' वितशा, जिनदांड षक ना करिशा, -- आउ शक-अन्द्रम स्मिष्टांत्र क्षमत्त्र व्योन्थिष्टिका क्रित्र (अर्क प्रात्म ३०७ श्रेका १ श्रह्मि स्मि)। स्परिकारमानिकांत्र शुक्षा • ! — [जायकारिक क्या जनका मारजन षान पान प्राप्ति क्या मन प्राप्ति क्या পুলে (মূলমন্ত্র) রক্তাসনাম নমঃ, এতে গন্ধপুলে এতদ্ধিপত্যে দেবায় বিষ্ণবে নমঃ, এতে গন্ধপুল্পো use-मध्यानारेश कानिकारेत्र नगः। [धे जामनः गृक् ठांसीम ठिंशक नगरामध्रा। ज्वय क्रगणाः पाठः चानः (मिरि जिल्लाहरम 1] मुल्यम উচ্চाরণ পূর্বক ইদং রজ্জাসনং জীমদাদ্দণকালিকারৈ নমঃ। ১।

আবাহন

^{*} ক্রেন্দির পর উপচার-এদান-কালে প্রাপ্ত হত্তাকেরই মন্ত আছে, কিন্তু সকল প্রভিতে নাই, স্করাং, क्रिक् अमिनकी महत्त्र भीता (त्माष्ट्रभागातात्र अत्यापि थ, ०० भृष्ठात्र त्मया) सम्भाग छेशात्र प्रकार क्षांत्रात দিলে, অশ্বীৎ, গেমন কাটাসন বা ক্ষ্লাসন দিতে হুইলে, রজতাসন্দানের পর দিতে হয়, এইরূপ সিন্দুরাদি ভূষণ-

अविश्वक्षकालिएक यांछः यांश्रः 'अयांश्रहः, । २। (खांत्रनद षार्टनांकि कविशा) भांत्राः-न्यः। ०। ज्यद्राः याहा । ८ । ज्यांत्रियनीयर--यशा । ७ । मधुभर्कर--यशा । ७ । शूनदाघ्यनीयर---यशा । १ । [ज्यानीय कत,

[खरत ।] जाख्त्रमः मिर्देष्यामि । ১० । शक्तानमञ्ज,—जत्रः शकः ७८७। मित्रः जीउनः श्रमत्नोहत्रः । मन्ना ১। [সাভরণদানময়,—ইদমাভরণং দেবি অকলগ্রং মনোচ্রং। ময়নিবেদিতং ভক্তা। গৃহতাং শক্রন मक्तम क्षां छत्रभ मारमत भेत्र अवर मर्सा अकानत क्ष्माम्या, रेनरवस्तानात भेत्र मिष्ठमा कारम्भक। मकन छेभात क्रिक्सा शृश्वे वदरम त्मिव मिक्क्टन कॉनिटक छट्डा] मानीत कनः--नमः। ৮। [तक्कमन मञ्ज,--नळा १६न निर्विष्टा छन्छा शक्ता शक्तारहा जब कानिरक। अह शक्षः नमः। १० १ भूभागमञ्जा -- भूष्णक विमनः দেবি অগ্নিদ্ধ কুমনোহরং। মগ্ন নিবেদিতং ভক্তা। পূস্পাঞ্চ প্রতিগৃষ্তাং। পূস্পং বৌষট্। ১২। বিশ্বপূর্ণ निर्वनग्रीमि । [मुन्यक्र- नुनम्काणि दा ' १ नरमा शक्षां छा: प्रात्ना इद्धा प्राप्ता निर्वनिर्छा छन्छा मुप्ता-ইয়ং প্রভিগৃহ্যতাং।] এয ধূপঃ—ক্ষণ (নিবেনঃ।মি বা) 'ও জয়ধনি মন্ত্রমাতঃ সাহা' মন্ত্রে গন্ধপুষ্পা কারা मिव कर कामिरक मिक्सिन मिरव। ष्मरभावानः भन्नाकद्यः मन्ना मन्नः व्यभ्यानाः।] वद्यः--निरवमन्नामि । আসনবৎ অর্জনাদি করিয়া, দান করিবে। নান্যস্ত যথা,—সানাধং মঞ্জলং বারি শীতলঞাতি-নির্মান্থ। ক্রিয়া, (বিশেষ মন্ত্র মা থাকিলে) 'নিবেদগামি' (কিনা 'ন্মঃ') মন্ত্র দেওয়া থাইতে পারে।

হিন্দংকর্ম-মালা

इकींत्र शुक्रा शुक्तक वाका है। धुन, मीन कांत्रिकिवर जिनवांत्र घूताहरत। ১०। मिनिमंत्र,--श्रक्षकारमा মহাদীপঃ সর্বভাজিমিরাপক্ঃ। স্বাহ্যাভ্যজ্জয়ঃ জোতিশীপোচ্য়ং প্রতিগ্রতাং] এষ দীপ—নিষেদ্যামি । ১৪ (टेनदबमा मान मज्ज,—जामान्नः प्रकारपुकाः नामा काष्ट्रमणिकाः। त्मापकात कनाः त्मित व्यंग्रेशन निभवति।] टेनटवछार- निटबनग्राणि । ১৫ । भीनार्थ खलार--नमह । ष्मारुममोश्रर--वधा । डाकुनर निटब-

मध्रीय । मनमर् भुष्णाकनिवस मिर्य।

[बन्हान-यज्ञ, --मश्रोग्रोट्स कर्गणां डः कानितक त्यांत्र मिकटन। गृश्न वन्तन, एमनि नगरक भन्नत्र भाव कृषि छ अरोक स्कि करिया, व्यनाम कतित्त। भेरत म्नमरहा छ।त्रन्—श्रीक भीमक्षि कानिकार

যোড়শোপচার-পূঞ

এই দম্য তৈলদাধায়ু দবস্ত ভোজা জল ছত্ৰ পাজ্কাদি অৰ্জনাপুৰ্ধক, মাদ পকাদির উল্লেখ করিয়া, (मबींड खीं किनामनांड (मर्वी मध्यमानक उरमर्श कदिश मिर्द। उन्यामि काना' वह मरज जिनवात जर्मे कतिरत ॥ ১७ ॥

তাবৈরণ-প্রশ 🔅 |

जक्षश्रका।---जजुब्बा,-- उँ मिक्र (वि)-गति भरत एपवि भनाभट-छन्नश्रित्य

* প্তিমা হানে ব্যু রচনা করিনেও, অঙ্গ ও আব্রগাদি সম্ত পুরাই এতিমাবা ঘটে করা হইয়া থাকে; স্তরাং, क्षकर्म अन्नावश्रक-वित्विकात यज्ञ किश्मित डेटन्नथ कत्रिनाम मा

5

अमुख्याः कान्तिक দেখি পরিবারার্জনায় তে॥ খান,—কুষারক্ষটিকশ্যাম-মীল-खरे शर्मनार्ख "उँ खिमक्षिक्तिका-मङ्क-ग्रन्जे-खिनाङ्कार शक्रामि नम्ह" ढर् কফারুণাজিমঃ। বরনাভয়ধারিণাঃ প্রধানভূবনাস্থ্র। প্রধানতনবঃ প্রিয়ঃ)॥

गरत्र महम्मन शुष्ण-वाद्रा शुक्षा कतिहा, जीमम्मिक्षकानिका-रड्क-घृवडी डर्लग्रापि

কাহা, এই মন্ত্রে ডিন বার বা একবার তপ্ণ করিবে। পরে 'এতে গন্ধপুন্সে ওঁ হাং

भक्षम्माकि-भुका। उद्घाम, श्र्या, —मर्काः भाषा क्रमिकता मुख्यानाविज्ञित्। उड्डिमीर वाष्ट्रबन शाउराखाः अधियाजाः। मिगरता रुममुधाः य-य-वारम-জ্বিতাঃ ॥ এতে গদ্ধপুত্রে ওঁ কালৈ নমঃ. (এই ক্রমে) কপালিলৈ, কুলারৈ, कुरुकुमारेश, विद्याधिम, विव्यष्टिक ्य, उषारिष्ठ, उष्यवाहिश, मेथिरिश, मीमारिश, हमज्ञात सम्ह, डी॰ मित्रमि थांश, (এই क्रांप) सङ्ग-शृष्ण कत्रिय । कांनामि-मनीटेंस, यमाकाटेंस, मांबाटेंस, मूफाटिंस, मिडाटेंस, 🛊 ॥ ५० ॥

भूकारक किनोर छर्नाम नमः वह काम छ। छ। काम विकास काम काम काम काम काम ।

वामामाधेनिक्रीका। थाम, -वामी १९१मपांताः यन्तान छक् कार। ठिष्कीर वित्नवाक वमकूर्रिक शक्तर। मण्ड श्रामाण-ज्वक मध्जेर ठाक्र-रामिनीर। कोजुन्ध्यतार त्मतीर ভाৰत्तर माथत्काख्यः॥ (প্ৰতিশ-স্থান

77 ठष्ट्रक्रुकार । यनीर गंधार कथांनक ठक्कर मरमध्येर भतार। मधुम्खार मरमाझाम-আবাহন না করিলেও হয়) ওঁ আং বালৈয় নমঃ (পংঞ্পাণচারে পূজা করিবে) । নারায়ণীৎ মহাদীপ্রাৎ শামাথ গ্রুড্বাহিনীথ। নানালকারসংযুক্তাৎ চাকুকেশীৎ मुक्टिः मर्काक्यमतीः॥ के बाजाग्रहेना नमश्र॥--मारहभाग्नीर त्रयांक्रांन खद्रान् विमग्नमात्रिकार । क्यांमर एमक्रोक्षय यत्रमाण्डम्मनकर। छेक्क्ष मथ्जेर प्रयोर নানালকার-ভূষিতাং ॥ তং মাহেশ্রৈগ নমঃ॥ চামুণামট্থানাং বিকটিতদশনাং

फिन दांत्र नो अक्वांत्र जर्मन खोगात्रहक्त-मटक त्वह त्वह क्वांत्रा। थारकन, किन्छ, भारत मर्भावतात्रा (मरीत

छर्गं क्रा हुर मरन क्रिया, जानक गद्धिकारत्रा थएडारकत्र भृथक् छर्म जिल्म नाहे।

অপন্নাজিতাঞ্চ পীতাভা-মক্ষযুত্র-বরপ্রদাং। কমলং মাতুলক্ষয় দথতীং পরিচিত্রবে।। ১২৩ নানালকারসংযুক্তাং প্রমন্তাং পরিচিন্তরেং॥ ওঁ ছুং (১৫) কৌমার্হিগ নমঃ ॥ यंक्रामूबनार रुनार ८वमकूरें जार ॥ जेर वाज़ारिक नगः॥ नाज़िनिष्टी मृतिरस्य विज्ञजीर मम्मार वशुः। ठड्ड्जंकार विमालाकीर महारत्नोसीर वज्ञकार 🛊 मुकार मुनार क्यांनर महाभित्रप्रिक्ट (यहेकर यात्रत्रह्यीर, (खेडांत्रहार धामकार मधु-মদমুদিতাৎ ভাৰয়েচচন্তুরপাং ॥ ওঁ শ্বং চাসুভার্টয় নমঃ॥ কৌষারীৎ কুছুমা-ঞিং অপুরাঞ্জিতাট্র নমঃ॥ বারাহীং ধূদ্রবর্গাঞ্চ বরাহবাহনাং শুভাং। কলক্ষ্ जीयवन्तार बिरमबार, मीलारखाकटाजार थमूनिक-वनुषार मात्रमुखालिमालार। ভাসাং ভিনেতাং শিধিসংস্থিতাং। চতুভূ'জাং শক্তিপাশাস্কুশাভয়বিধারিশীং। का मात्रमिर्टेश सम्ह ॥ म ॥

वक्टेटड्रवश्वा।—ग्रथमिकिक्टिम श्रिकामिहाइ या शक्रमुका-बांता शुक्

कतिरव,—ामेर श्रीर जर जमिजाक्षांत्र रेस्त्रवांत्र नमक्ष, जेर द्वीर हेर क्रत्राव रेस्त्रवांत्र নমঃ, ঐং ব্রীং উং চগুায় লৈরবায় নমঃ, ঐং খ্রীং ঋং ক্রোধায় ভৈরবায় নমঃ, ঐং ত্ৰীৎ ছুং উন্মজায় টভরবায় নমঃ, এৎ ত্ৰীৎ এৎ কপালিনে ডৈন্তরবায় নমঃ, ঐ ত্ৰীৎ ত্তৎ ভীষণায় ডৈরবায় নমঃ, ঐ ব্রীং অং সংহারায় ডৈরবায় নমঃ॥ ৮॥

পুভ-বটুকায়। মহালক্ষীপুভ-বটুকায়। বারাহীপুভ-বটুকায়। চাযুঞাপুভ-বটুকায়॥৮॥ পঞ্চোপচারে,—ওঁ ডাকিনীভেনা নদঃ, ওঁ যোগীনীডেনা নদঃ, উ কাং কেত্রপালায় নমঃ, উ গাং গণপতঃ ক্লমঙ ॥

• মাহেশ্রীপুল-বটুকায়। বৈফ্বীপুল-বটুকায়। কৌমারীপুল-বটুকায়। ইন্দাণী-বটুক-পূজা।—এতে গন্ধপুতে ওঁ এদাণীপুত্র-বটুকায় নমঃ। (এই ক্ৰমে)

লোকপাল-পূজা।—যথাশক্তি উপচাুরের, ওঁ লাং ইন্দায় পীতবর্ণায় সুরাধি-পতঃর সায়ুধ-সবাহন-পরিবারায় নমঃ। (এই দ্রমে) রাৎ অগ্নের রক্তবণীয় ((g-4->>)

कार टेन्थ छात्र शखरवीत त्रत्कारिकाटरमेन्। वार तक्रवात्र शुक्रवर्गात्र क्वारिक ज्ज्यक्रीकृषिण्टास मासूध—हेनामि। क्यां यमास क्रयवनीस त्यानमिण्डास—। भेडाउरा—। घो९ वांशरव धायननीत्र धानीधार्थाज्याउरा—। मां९ कूरवजांत्र खक्र-বর্ণায় ক্ষেত্রাধিপতয়ে—। হাং ঈশাদায় শুক্লবর্ণায় ভূতাধিপতয়ে—।

लीकभोनोक-भूका।--'ब्राउ ग्रमुगुरण के बळात्र नगः, (अहे क्रांम शृका मियोत मिक्टल मर्शकात्मात शुक्ता।—धान घषा,—'मर्शकान्त घरकटम्पना হ্রীং জনন্তায় গৌরবণীয় নাগাধিপতহেয়—। আং বদ্ধণে রক্তবণীয় প্রজাধি-मिक्टा युज्यवर्गकर। विज्ञाउर मध्यत्नीस्को मश्को-जीममुथर मिलः। व्याख्यध्याहरू কটিং জুদিশং রক্তবাসসং। ত্রিনেত্রং মুক্তকেশঞ্চ মুণ্ডমাশোবিভূষিতং। জটাভার-कत्रित्व,—) अस्कि, मुख, बेष्मा, भाषा, ष्यङ्ग्या, गामा, गुमा, ठिक्क, भिष्म ॥ ১०॥ পত্রে সায়ুধ-সবাহন-পরিবারায় নমঃ॥ ১০॥

227

नगकन-भक्ष्य्यार खन्तिष्ठः॥ शानारख, यानरमाणिकारत शृका कतिहा, श्रेनशान-

তপ্ৰ করিবে। পারে বলি-দ্ৰেয় [রম্ভাদি] লইয়া,—'হ্ং, মহাকালাভৈরব শাশানা-शुक्क (मांस्रमाणकारत वा मरमाणकारत शृक्षा कतिरव। शृक्षा मञ्ज, यथा,---'ई रक्तोर को স্বাহা। এতৎ পাঞ্জং ও মহাকালভৈরবায় নমঃ।' প্রকান্তে :হুং ক্ষেণ-हेजामि यून उक्तांत्रनपृष्क 'यहांकानटेज्यंद उन्हामि यारा धरे गत्य जिन यात्र ধিপ ইমং বলিং গৃহ্ন গৃহ্ন গৃহ্নাপয় গৃহ্নাপয় বিদ্ধ-নিবারণং কুরু কুরু সিদ্ধিং প্রযচ্ছ মে সাহা।' এই মন্তে বলি দিবে। পরে গন্ধ-পুষ্পাঘার। দেবীর করস্থিত খড়া, যাৎ রাৎ লাং বাং জাং কোং মহাকালভৈরব দর্কবিদ্যানাশ্য নাশ্য হীং এং মুঞ, অভয় এবং বর, ইহার পূজা করিবে।

2%

গুরুপংক্তি-পুজা।—'এতে গন্ধ-পুজে' ও দিবেগ্য-শুরুগণ প্রাপাত্রকাং পুজ-ग्रामि नगः।' छ मिरवोष-७क्ष्मभाः खर्भग्रामि षारा, (अहे कृत्म मर्द्ध भूका छ তপ্ৰ করিবে,---) দিজৌঘণ্ডকুগণ, মানবৌঘণ্ডকুগণ, শুণ্ডকূলীপাত্তকা *, পরম-তৎপত্তে অঙ্গন্তান-করাঙ্গন্তাস পূর্বক পুনশ্চ দেবীকে ধর্ণন (ঐ, ৯৩ পূষ্ঠা) कतिंग्रा, यथीजष्टि मूमा (मथीर्ड्या, मटनोपिटारंत या भरकापिटारंत शृका-शृक्षक মূল উচ্চারণ করিয়া, 'শীমদনিকণকালিকে মাতজ্পাতাং, এই মন্ত্রে তিন বার উপণ করিবে। 'এম পুষ্পাঞ্জিনিঃ पन) সায়ুধ-সবাহন-সপরিবার মহাকাল সহিত ७क्बीपांठ्रका, भराभरक्क्बीपांठ्रका, शरदमर्विक्क्बीपांठ्रका । १ (ॐ बीषमूकी-দেব্যয়া-সহিত-শ্রীঅমুকাশন্দ নাথ গুক্ত শ্রীপাত্নকাং পুজয়ামি নমঃ। ও এ শ্রীঅমুকী-দেব্যয়। দাহিত শীঅমুকানন্দ দাথ গুরুৎ তর্প্যামি স্থাহা 🕽 ॥

228

∗্তপুণে 'ও' জীওকং তপ্যামি' এইরপ ছিতীয়ার একৰচনাত পদ হইবে।

ত্রীয় দিক্ষিণকাশিক। ত্রীপাত্তকাৎ পূজ্যান নমঃ। পূজ্পাঞ্জি-তায় দিবে। কর-

ষোড়ে ব্লিবে,—দায়ুধাঃ দ্বাহ্নাঃ দ্পরিবারাঃ মহাকালসহিতাঃ জীমদাক্ষণ-কালিকাঃ পুজিতাঃ সস্ত ॥

ত্রিকোণমগুলের উপর বলিদ্রব্য (একটী রজাদি) রাখিয়া, ধেলুমুদ্রা দেখাইয়া

विनाटव,—'खे पारश्रि कराजार माज्ञक्नानि कराजार ग्रेक ग्रेक हेमर यिनिर मम

[জনেক পদ্ধতিকারের মতে (পূজাকাণ্ডের জ্জগতি বলিয়া) এই সময় মূল মত্ত্রে বা হুীং মত্ত্রে প্রাণা-সিদ্ধিং দেহি দেহি শক্রক্ষয়ৎ কুরু কুরু সর্বসত্ত্বং মে বশমানয় হুঁ হীৎ ফট্ সাহা, ग्राम कतिया, जाही छत मा ज्या महस्त वा महस्त वा महस्त वा मा का का निष्क का मग्रम् क कार्यश, भूनः ख्रीपीशमारि एक्तीरक ख्रेषीम कत्रितः, परित्र विनिमान ७ (कृष्म कत्रित् । कोकृत्रि काश्व मट्ड, (मांदकांग श्रत) विनिमान ७ ्राप्तत भेत्र क्षेप कित्र ।] **ॐ** ड्री॰ जी॰ मिक्किक्तानिकाटिय यांश जाय विलर्भिय ॥

ভোৱিক-বলিদাশ

ছাগ পশুকে ফান করাইয়া আনাইয়া, দিন র মাল্যাদি ঘারা ভূষিত করাইয়া,

সীয় বামপার্শে পর্বান্ত করিয়া হাপন করাইরে। মূলমন্ত্রোচ্চারণ পর্বক পশুকে দেথিয়া,—অপদপঞ্জ তে ভূতা—ময়ে খেতদৰ্প ছড়াইয়া, কোশার জলদ্বারা

(खांकन शूर्वक,—'क्ए' महत्र जायकर्शन छ (मजूमुजा (था, uo शृह) (मथादेता, ५२७

তত্ত্বযুদো দ্বারা সপ্তবার পশুকে পুনশ্চ প্রোক্ষণ পূর্বক পঞ্চোপচারে 'ওঁ ছাগ-

পশ্বে নমঃ' মন্ত্রে পূজা করিয়া, াশুক্রে মন্ত্র পড়িবে, যথা,---'ওঁ পশুপাশায় বিদাহে বিশ্বকৰ্মণে ধীমহি তত্নো জীব প্ৰচেন্নাৰ।'

পয়ে তিল-হরিতকাাদি যুক্ত কোশার জলে হস্ত রাথিয়া,—অজেত্যাদি— শ্রীমদ্দিণকালিকা-প্রীতিকাম ইমং ছাগপশুং বহ্নিইদ্বতং শ্রীমদ্দিশ্বদাশি- कोटेत्र स्मवकोटेत्र जुष्डागर्थः मच्यमतम 🏶 ॥ थुष्ठाःशुक्ता ।—भुरष्ठा मिम त्र स्माभन করিয়া, ভম্মধ্যে 'হীং' মক্র লিধিয়া, গন্ধপুষ্পা দারা উহার তাগ্রে, মধ্যে ও মূলে মধ্য-জনে পূজা করিবে, পূজামত্র, যথা,— হুং একাবাগীশ্বরীভনং নমঃ। হুং লক্ষীনারার-ণাভ্যাৎ নমঃ। ইং উমামহেশ্রাভ্যাৎ নমঃ। ওঁ ব্দা-বিফু-নিব-শক্তিযুক্তায় প্তায়ি নমঃ। প্রণাম,—তি প্তায়ে থরনাশায় শক্তিকাধ্নাধ্তংপর। প্তনেছন্ क्रजाक्षींन हरेग़ा वांन ममर्थन कतिरव,—. जें वांनि एक महारागिव भन्धर मर्ब्य-উচ্চায়ণ ক্রিমান্ড কুমাওগলিঃ - এবক্সিন্কালিকাগৈ নমঃ। কুমাওাদি এই সময় উৎসৰ্গ ক্রিয়া রাধিয়া, ছাপাদি ব্বি গুণায়িতং। যথোটেকন বিধানেন তুভামন্ত সমপিতিং।। উ কালি কালি মহাকালি ÷ কুম।ওবলয়ে নয়, এই কমে কুমাও বা ইজুণও অসিনা করিলা, অনেলভ্যাদি নিজণকালিক। আনীতিকাম মূলমুজ স্তয়া শীত্রৎ খড়গনাথ নমোহস্ত ভে॥ (इटमत भेत्र छेह। एडम कतिरम्।

ছাগবলি-দান

544

কালিকে কালরাত্রিক। ছাগলেন বলিং দলি প্রগৃহাণ দিগয়রি॥ আং হুং ফটু,

বাদ্যকোলাইল পূর্বক মাবধান হইয়া, এক আঘাতেই বলি ছেদ করিবে। তৎ-এই মন্ত্র পড়িবে, - ॐ আহারে ক্রিরাকাজিক বলিং গৃহ্ন জয়ৎ কুরু। মম শক্ত পারে, য়ত মগু গম্বপূষ্প জল দৈশ্বব ও কদলী সংযুক্ত পালে সমাংস কৃথির এনং ছিন্ন বিশাশীয় পূজাং গুয় স্বরেশ্রি। মূল উচ্চারণপুর্বক এম সপ্রদীপ ছাণাশীর্বনিলঃ তীমদনিকাকাণিকগৈ নমঃ। মূল উচ্চারণ ক্রিয়া, এষ সোপকরণ-সমাংস-কৃষির উহার অবশিষ্ট ফুধির বিজ্ঞান জানে বটুকাদিকে দিবে; যথা,—এষ কৃধির-ছাগশির উত্তরাম্য করিয়া দেবীর সমুধে রাখিয়া, ছাগ মশুকে দীপ জালিয়া দিয়া, विनिः हर वार वर्षेकात्र नमः (अहे किया) हर यार (यांत्रिनीर्ड्जांड नमः), कॅफान মত্ত্রে খড়গ পশুস্করে ম্পর্শ করাইবে। বলিঃ জীমদক্ষিণকালিকাট্য নম

<u>۸</u>

এই সময় প্জিত দেবতাদিগকে মৎজা মাংস জালাদি ভোগ নিবেদন করিয়া দিয়া, ঘথাবিধানে আবার্ত্রিক ক্রিভে হ্ইবে। [কেহ্ কেহ্ ভোগের পর বলি দিয়া থাকেন।]

তাত্ত্বিক-সংক্ষেপ্ৰোম

স্থতিল।--পুজাগুহের ঈশানকোণ-নন্নিহিত স্থানে এক হস্ত দীর্ঘ ও এক হস্ত প্রয়োগ স্থান নিৰ্গয় করিয়া, তন্মধ্যে বালুকা পাতাইয়া দিয়া, উহাগ্ন ম্ধ্যস্থানে কুশগা্রা একটি ত্রিকোণ-মণ্ডল ক্রিয়া, ইহার মধ্যে একটি বিশু অক্সিত ক্রিবে; পরে মণ্ডলের বাহিরে উপযুগ্পরি আব্র একটি जिएकां (व-आकात)-मञ्ज क्रिशः, घट्टेलान-मञ्ज क्रितः, উহার বাহিরে এकि গোলাকার মন্তন ভাহার বাহিরে, অব্বাৎ, স্থতিলের প্রাভ্তান-চতুইয়ে জুই চ্ই রেথা করিয়া, ভূপুর (ভূগ্হ *) অক্ষিত করিবে, জঞ্জিলের বাহিরে পূর্ব্যাগ্র তিনটা এবং উত্তরাগ্র তিনটা রেখা অক্ষিত করিবে।

(বেড়) দিবে, ভাষ্যি বাহিতে, (স্থাৎ, বেড়ের গাত্রে জাট দিকে) অষ্টদন পদ্ম অক্সিন্ত করিয়া,

🌼 ভূপুর জঙ্গন কোন কর্মঠ পুরোছিতের নিক্তে দেখিয়া লইয়া, শিক্ষা করা আবেশুক।

3 ফঃ ফ্বাছা, "ওঁ বৈখানর জাতবেদ ইহাবহ লোহিতাক দৰ্বকৰ্মাণি দাধয় ফাহা" মহাব্যাহতি-হোম।—- উ ভূঃ কা২, উ ভূবঃ কাহ, উ ফঃ সাহ, উ ভূ'ভূবঃ পত্তে, কুশাগ্ৰয়-নিৰ্জিত পবিত্ৰ, মৃত্যধ্য্য নিক্ষেপ করিয়া, বামে ইড়া, দন্দিৰ পিঞ্চলা এবং মধ্যে সুমুদ্মা (নাড়ীকে) চিন্তা করিয়া, ক্রব (দারুময় হাতা বা কুশী) দ্বারা য়ত লইমা, ও অয়েয়ে পাহা, ওঁ নোমায় পাহা, ওঁ অগ্লীয়োমাভাাং কাছা, পুনশচ 'নমঃ,' মন্ত্রে ছত লইয়া,—'ওঁ অগ্নয়ে কিফিফতে কাছা,' এই সকল ময়ে (অগ্নির দক্ষিণ বাম ও উর্ন্ধনেতা এবং মুখ ক্রমশাঃ চিন্তাপূর্বক) অগ্নিতে ষদ্যায় নমঃ, ইত্যাজয়িষত্সেতেনা নমঃ, ওঁ অগ্নয়ে জাত্বেদদে নমঃ, ওঁ ইত্যাজফ্ৰ-মুক্তিভো নমঙ, ওঁ আদাগজইশজিলেলা নমঃ, ওঁ প্লাজষ্টনিধিভো নমঃ, ওঁ ইন্দাদি-(मिकिन्यारिमाएना नम्धः, उँ व्रक्षां छाउँ । য়তাহুতি দিবে।

কালিকায়া অঙ্গদেবতাভ্যঃ স্বাহা, ওঁ আব্রণদেবতাভ্যঃ স্থাহা, মস্ত্রে (এবং স্থা-এই শোষোক্ত মন্ত্র তিন বার পড়িয়া, তিন বার হোম করিবে। তৎপরে 'অগ্রোর্কি-ধানাদি-সংস্কারং সম্পাদ্যামি স্বাহা, এই মন্ত্রে হোম করিয়া,—'এতে গন্ধ-পূজ্পে भीठीमि-महिত-बिगममिकम-कानिकारेत्र नमः। श्रेकांश्र्यंक--'ध्नमरब्रोफांत्रमानछत्र ষাহা' মন্ত্ৰে য়তদানা পঞ্বিংশতি বার হোম ক্রিবে, (বহ্নি ও দেবতার ঐক্য চিন্তা করিয়া) সাহাত্ত মূলমন্ত্রে পুনশ্চ একাদশ বার হোম করিবে। পরে—ওঁ দক্ষিণ-কালের বীজ্ঞান্ত্রে) হোম করিবে। তৎপরে সংকম্প—অন্তেভ্যাদি—দশ্দিণ মন্ত্ৰ-করণক-অফাবিংশতি (কিয়া অ≀েফাত্র-শত) সংখাক-মাজ্য-বিল্প**ভ-সমি**ত্ৰি-কালিকা-প্ৰীতিকামনয়া দক্ষিণকালিকা-পূজা-কৰ্মণি মূল উচ্চারণপূৰ্বক আহেত্তি-[शृकारत्व कम ममाभन ना श्रेश था कितन, अकत्व कम ममाथा कतिया, ख्या नि হোমমহৎ করিবো। হোমাজে কেবল মূলমস্তে পুণাজ্তি দিবে।

भांठे, जकों क खेशीय धावर एमवाजांक जावत्रन (मवाजात नात्र किन्ना कतित्रा] भाजि দান ও হোমের ভমদ্বারা তিলক দিয়া, দক্ষিণান্ত করিয়া, অচ্ছিদ্রোবধারণ এবং

ममर्भगपूर्वक (ध. १० शृधा) मरश्रव्या बांत्रा निर्माना नर्त्रा "उँ उक्तिके ट्रवछना ममाथानभूर्वक [ख, ৮% शृष्ठा तम्] नित्यार्रहर, ५३ छिन्ना कतिहा, बाष्ट् ठार्खानिरेश नमः" धरे मस्य श्रृका कतिया विमर्ख्यन (थ., १० शृषा) कतित्व ।

॥ हेकि मिक्कपकानिका-श्रुका मयाश्वा॥

89

ধানা জভাবে কদলি ১টা।ভোগের জনবাজনাদি। হোমের স্বত /াত একপোয়া। হোমের কাঠ। शुम्ल । विवश्वा । त्रुचा । कृष । मीष । धृना । कृष्छन । कृष्रुत । निक्त । देनदिछ व छ ७ थाना । क्ठाटिनदिछ ৫০ থানা। চিনির নৈবেজ ২ থান। জনপানি ১ দফা। ব্লিদানের ছাশ ১ টা। কুদান্ত ১ টা। ইচ্ছ ১ অনুপত্তি। জলপত্তি। দানবস্তু। শৃষ্ধ। পুশ্মালা। বিশ্বপত্ত মালা। তিল। হয়ীতকী। কেশো প্রতিমা১। ঘট১টা।তীরকাটী৪টা।ঘটের নারিকেল এটা।রাকাস্থতা। আসনাকুরী২ প্রেস্থ। মধুপ্ৰের বাটী ২ টা। কালীয় শালী ১ থানা। মহাকালের ধূতি ১ যোড়া। ঘটের গামচা ১ থানা। বালি। ছোমের বিহুপ্ত ১০৮ টা। প্ৰায় দক্ষিণা। ি দাধায়ণ পূজ্যিও প্রায় এই ফর্ক]। मामाथ्यात कर्त *।

^{*} সমখ্হইলে বয়ণবিত্র দিবে। উপচার দুবা শ্কি অনুসারে না করিলে, সম্পূৰ্কল প্তিরা বার না।

1 109-303-14

मर्क त्रमভायमग्रिङ मर्काजीहेथामात्रक छित छात्र एक्टिम् (खंडेटम एकाव्यवश्र कार्ड वितन, किंड औমদ গোপাল চক্রবতীকত বিশুদ ও বিশুরিত "তত্ত্বকাশিক।" নামী টীকা এবং মৎকৃত মুলাক্র্যায়ী हेह। ध पर्षाञ्ज উৎकृष्टेन्नण विश्वत्र मश्त्रत्रन ह्य माहै, धहे वित्व्हमांय ष्रातास्त्रं ष्रञ्चत्राप्र पिङ्ड्यन्त শরণ অস্থবাদ ও বিস্তৃতরূপে চতীপাঠ নিয়ম প্রভৃতি সম্মলিত 'মার্কণ্ডেয় চত্তী'' সপ্তমভাগ "হিন্দুসৎকর্ম-শালার" আকারে ফুলট কাগতে নূতন অক্ষরে মুদ্রাঙ্কণ করিয়াছি। ইহা প্রায় তিনশত পৃষ্ঠার मगांधा क्हेंग्रांक। मुना १ अक हैंका गांवा। [त्नांथा वांक्ता आमात मकन शुखरकत्वे मुना ख्रमछ थाएँ। थाकिएल ए मिन्न दिना कानाहाल, धर्मालाजार्थ भूनक गथानाथ। विरवतना कतिया थाकि ।।

শ্রীমম্থনাথ স্মৃতিরত্ন ভটোচার্য।

কনিকাডা,—পোঃ,—বরাহনগর পালপাড়া চতুষ্পাঠী।



च क्रांचर**न**ा ব

পুরাণ ডায় ও দর্শনশাস্ত্রাদি প্রকাশক আবৃষ্টক বাব্রদিক নাল চটোপাধ্যায় ও আবৃষ্টক বাবু মহেশাচক্র পাল ও আবৃত্তক বাবু ওকেদাস চটোপাধ্যায় পাত্তি মহাশয়দিগের পুত্তকাদিও আনমাদের নিকট সংগ্ৰেষ বছল প্ৰচাৰ লানদে বিজ্ঞোপ বা কলগতে কৰিছি বে, আপনাদের কোন প্ৰথক দারগুণ নির্বাচন করিয়া শীল পুততক পাঠাইব। (যে কোন বিষয়ের জ্ঞা হউক প্রভাক্তর প্রাপ্তির ाळन।) नानाकांत्री वष्ण्य विक बश्काद्रमित्त्रित मिक् क्राजांका श्हेरण धरककेर्यक्रम कामामिशरक भन्न निधरतम, क्षाश श्हेरन काममारित कान्निया कान्ति। নামাদের পরিচয় হওয়ায় ্র্থাদের ভান্নরোধেষ্ট্রনিজে সমস্ক তথাবধারণ করিয়া এ কার্যা চালাইতাছি। बारखक थाकिटन एवनकाटर "

জীমমধুনাপ স্থাতিরত্ন ভটোচাধ্য। গোট—বর্ষ্ট্রমগর-পাল্পাড়া ; –ক্লিকাভা।







সব্যবহা-উপপাতক মহাপাতকাদি আয়ুকিন্ডান্ত্রীন ৬ কালীপুজাদি সহলিত প্তক भवमाताश भूकाभाम बीयुक्त बादकामाथ विमाजक ७ बिएक मधुनामाथे आवत्र क्रोहोर्ग त्मार्ड-द्रजाहमगत ;-- भामभाष्टा, हरूणाठी स्ट्रेट खकामिङ প্রিমম্যথনাথ স্থাতিরত্ন ভট্রাচার্য্য কর্ত্তক २०%-मट कथा मान थङ्डि महाभग्नन बात्रा मरत्मारि**ड**ा किडीश मःकर

श्रीमेश्रक्त मिलक्त तमन राउ नः ज्यमक् कि हो। जोई त्याम नक्ष, मिल वा कान्नीनिष्ता मुक्ति मन ३००३ माल । मार् बाचन । কলিকাতা।